सरस्वती-सिरीज़ नं० ४१

तावीज़

सूर्य वर्मा, बी० ए०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

TO THE READER.

KINDLY use this book very carefully. If the book is disfigured or marked or written on while in your possession the book will have to be replaced by a new copy or paid for. In case the book be a volume of set of which single volumes are not available the price of the whole set will be realised.

O. L. 29.

SRI PRATAP COLLEGE

LIBRARY

Class No. 821.433

Book No. S 96 T

Acc. No. 11954

11954

सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानन्द, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेशप्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचन्द, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

विश्व-उपन्यास

तावीज़

सर वाल्टर स्काट के प्रसिद्ध उपन्यास
टेलिसमन का भाषान्तर।

सूर्य वर्मा, बी० ए०

Printed and published by K. Mittra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

11254

तावीज़

पहला परिच्छेद

एशिया के कतिपय प्रायद्वीपों में एशिया-माइनर भी एक प्रायद्वीप है। अत्यन्त प्राचीन काल में इस एशिया-माइनर का भूभाग धार्मिक युद्धों का रणक्षेत्र रहा है। मुसलमानों और ईसाइयों के मध्य जो धर्म-युद्ध इस प्रसिद्ध भूमि में हुए उनका वर्णन इतिहास की पुस्तकों में लिखा है। योरपीय इतिहास का जाता कौन ऐसा पाठक होगा जो इन धार्मिक युद्धों की वीरतापूर्ण कहानियां न जानता हो? इन कहानियों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि किस प्रकार बहुसंख्यक हट्टे-कट्टे नौजवान अपने धर्म की रक्षा में हँसते-खेलते रण-चण्डी की बलि हो गये, किस प्रकार स्वामिभक्त सेवक अपने स्वामी के प्राणों को बचाकर स्वयं युद्ध की ज्वाला में भस्म हो गये, किस प्रकार ईसाई ललनायें भेस बदले अपने प्यारे पतियों के साथ लड़ती हुई मर कर सती हो गईं। कहां तक कहें, ये कहानियाँ निर्बल मनुष्यों के रक्त में भी बल का संचार करती हैं।

आज हम पाठकों के समक्ष इन्हीं कहानियों में से एक का उल्लेख कर रहे हैं।

एक दिन की बात है, सूर्य्य भगवान् अभी बिलकुल मस्तक के ऊपर नहीं पहुँचे थे। एक ईसाई सैनिक जो पेलेस्टाइन के धर्म-युद्ध में

लड़ने के लिए सुदूर योरप से आया था, 'मृतसागर' के पासवाले रेगिस्तान में धीरे-धीरे चला जा रहा था। इस सैनिक की पोशाक और इसके घोड़े की साज ऐसी विचित्र थी कि वह उस देश में यात्रा करने के लिए उपयुक्त नहीं थी। सैनिक का कवच लोहे का बना था। कवच में लम्बी-लम्बी बाहें लगी थीं। दस्ताने भी लोहे के ही थे। इतना ही नहीं, उसके गले में तिकोनी ढाल लटकती थी, सिर पर लोहे का मुकुट विराजमान था। मुकुट के नीचे का भाग सैनिक के कन्धे तक पहुँच गया था। सिर और धड़ की तरह सैनिक के पैर भी लोहे के लचीले परिच्छद से ढँके थे। पैरों में लोहे का ही जूता भी था। उसके एक तरफ़ एक दुधारी तलवार पड़ी थी, जिसका दस्ता 'क्रॉस' के आकार का था। उसके हाथ में एक भाला था। भाला घोड़े की काठी से आबद्ध था और उसका एक सिरा उसकी रकाब में डटा था। कवच के ऊपर वह ज़रीदार कपड़े का एक कोट पहने था। इसी कोट की बदौलत सूर्य की प्रचण्ड किरणों का कोई प्रभाव उस पर नहीं पड़ता था। अन्यथा उसका लौह कवच उसके लिए असह्य हो जाता।

सैनिक के समान ही उसके घोड़े के भी समस्त अङ्ग लोहे के आवरणों से ढँके हुए थे। ये भी अधिक भारी थे। घोड़े का शरीर इनसे ढँका तो था ही, साथ ही उसकी पीठ पर लोहे की एक भारी काठी भी कसी थी। इसके सिवा उस पर एक कुल्हाड़ा भी बँधा था। ऐसे ही घोड़े पर वह लौह कवचधारी शूर बैठा हुआ था।

अभ्यास हो जाने से यह सारा भार उस सैनिक तथा उसके वीर घोड़े के लिए स्वाभाविक हो गया था; परन्तु अब उन्हें ताज़े होने की आव-

श्यकता प्रतीत हो रही थी। दोपहर के समय जब 'मृतसागर' उसकी दाहनी ओर दूर रह गया तब उसे अपने आगे दूरी पर खजूर के दो-तीन पेड़ देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। ये पेड़ एक कुएँ के पास थे, जहाँ उसने दोपहर में विश्राम करने का विचार किया। उस रम्य स्थान की ओर वह एकटक देखने लगा। थोड़ी ही देर में उसे पेड़ों के बीच में इधर-उधर घूमती हुई कोई वस्तु दिखलाई पड़ी। क्रमशः यह वस्तु आगे की ओर बढ़ने लगी। लो, अब वह साफ़-साफ़ दिखाई देने लगी। अरे ! यह तो एक दूसरा सवार था, जो उसी की ओर तेज़ी से चला आ रहा था। उसका घोड़ा छलाँगें भरता हुआ आ रहा था। उस सवार के सिर पर एक पगड़ी थी। शरीर पर हरे रङ्ग का एक चोग़ा और हाथ में एक लंबा भाला था। समीप आने पर यह सवार उसे अपने पहनावे के कारण तुर्क सवार मालूम हुआ।

उक्त तुर्क घुड़सवार एक अरब घुड़सवार की भाँति अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ आ रहा था। वह अपने घोड़े को लगाम की अपेक्षा अपने शरीर के अङ्गों से चला रहा था। उसका लम्बा भाला ईसाई सवार के भाले की तरह काठी और पैर के जूते में नहीं धँसा हुआ था। वह अपने भाले को बीच से पकड़े हुए उसे अपने सिर के चारों ओर घुमा रहा था। तुर्क सवार समझता था कि उसका शत्रु उसको आता हुआ देखकर अपना घोड़ा दौड़ायेगा और उसका सामना करेगा। परन्तु ईसाई सैनिक पूर्वी योद्धाओं की युद्ध-पद्धति से भली प्रकार परिचित था। अतएव उसने अपने घोड़े को व्यर्थ में थकाना नहीं चाहा। उसने अपने घोड़े को रोक लिया। उसने सोचा कि जब तुर्क मेरे ऊपर वेग से धावा करेगा तब

मैं अपने और अपने घोड़े के भारी बोझ से उसके वेग को रोक लूँगा। हुआ भी ऐसा ही। जब तुर्क सवार समीप आ गया और उन दोनों के बीच केवल दो भाले भर का अन्तर रह गया तब तुर्क सवार ने अपना घोड़ा बाँई तरफ़ को मोड़ा और ईसाई सैनिक के चारों ओर बड़ी तेज़ी से दो बार चक्कर लगाये। ईसाई सैनिक चुपचाप अपनी जगह पर डटा हुआ; केवल अपने घोड़े को घुमाता हुआ, अपने शत्रु की ओर बराबर मुँह किये रहा, और इस प्रकार उसे अचानक आक्रमण करने का मौक़ा नहीं दिया। जब तुर्क सवार को अपने प्रयत्न में सफलता न मिल सकी तब उसे उलटे सौ गज़ पीछे हटना पड़ा। तुर्क सवार ने और दो बार प्रयत्न किया; परन्तु उसे सफलता नहीं प्राप्त हो सकी। परन्तु जब उसने फिर तीसरी बार आक्रमण किया तब ईसाई सैनिक ने अवसर मिलते ही उस सैनिक पर अपना भाला चला दिया। इस वार से वह सावधान था! उसने भाले की चोट अपनी ढाल पर ली। पर चोट भारी थी, अतएव उसके धक्के से वह घोड़े पर से गिर पड़ा। परन्तु इस स्थिति से जब तक वह ईसाई लाभ उठावे उठावे कि वीर तुर्क पृथ्वी से उठ खड़ा हुआ और घोड़े को बुलाकर उछलकर उस पर सवार हो गया और ईसाई सैनिक के वार के दायरे से दूर जाकर खड़ा हुआ। वहाँ उसने अपने भाले को रेत में गाड़ दिया। इसके बाद उसने तीर-कमान हाथ में ली और पहले की तरह घोड़े से उसने ईसाई सैनिक के चारों ओर तीन-चार चक्कर लगाये और इस बीच में उस पर छः तीर चलाये। ईसाई सैनिक अपने कवच की बदौलत ही इन तीर-प्रहारों से बच सका था। परन्तु सातवें तीर ने ईसाई को घायल कर दिया, जिससे वह अपने घोड़े से धड़ाम से गिर पड़ा। इस पर

तुर्क उसकी स्थिति की जाँच करने गया। पर ईसाई ने उसे दबोच लिया। वह उसकी पकड़ में अपने शरीर की तेज़ी और अपने धैर्य की बदौलत ही छूट सका। इस द्वन्द्व युद्ध में तुर्क के हाथ से उसकी तलवार और तरकस जाता रहा। क्योंकि जिस पेटी से ये बँधे हुए थे उसी को खोल देने से वह मुक्त हो सका था। इनके सिवा उसकी पगड़ी भी गिर गई थी। इन चीज़ों के निकल जाने से उसके मन में ईसाई सैनिक से संधि कर लेने की इच्छा हुई। अतएव वह अपना दाहिना हाथ फैलाये, ईसाई सैनिक के समीप आया और साधारण ढङ्ग से बोला :—

"इस समय हम दोनों के देशों के बीच सुलह हो गई है, इसलिए हम लोगों में शत्रुता रहनी ठीक नहीं। आओ, हम दोनों भी आपस में सन्धि कर लें।"

ईसाई सैनिक ने कहा—मैं राज़ी हूँ ? परन्तु मुझे कैसे विश्वास हो कि भविष्य में तुम सन्धि का पालन करोगे ?

तुर्क सैनिक ने कहा—पैग़म्बर के अनुयायी अपनी प्रतिज्ञा को कभी नहीं तोड़ते। संधि के न तोड़ने का आश्वासन तो वास्तव में तुम्हें ही देना चाहिए। क्या यह मैं नहीं जानता कि साहसी लोग कभी विश्वासघात नहीं करते ?

तुर्क का यह कथन सुनकर ईसाई सैनिक लज्जित हो गया। तुरन्त उसने तलवार पर हाथ रक्खे हुए कहा—मैं अपनी तलवार के क्रास की क़सम खाकर कहता हूँ कि तुर्क सवार, जब तक हम दोनों का साथ है, मैं तुम्हारा पक्का साथी बना रहूँगा।

तुर्क बोला—अल्लाह और .खुदा के पैग़म्बर मुहम्मद की क़सम खाकर मैं भी कहता हूँ कि मेरे हृदय में तुम्हारे साथ विश्वासघात करने का ज़रा भी भाव नहीं है। आओ, हम दोनों आगे के चश्मे की ओर चलें। विश्राम करने का समय नज़दीक आ गया है। तुम्हें देखते ही पानी पीने का विचार छोड़कर मैं तुमसे लड़ने चला आया था।

ईसाई सैनिक ने शिष्टाचार के रूप में तत्काल 'हाँ' कर दी। उन दोनों के चेहरों पर क्रोध का चिह्न नहीं था और न अविश्वास का ही भाव किसी में था।

दूसरा परिच्छेद

तुर्क और ईसाई सवार दोनों धीरे-धीरे चश्मे की ओर रवाना हुए। रेतीली भूमि पर चलने के कारण ईसाई सवार का घोड़ा विकल हो रहा था। पग-पग पर वह अटक जाता था। अन्त में उसने काठी को पीठ से गिरा दिया और भाग खड़ा हुआ। काठी के गिरने से सवार भी ज़मीन पर गिर पड़ा।

इस पर तुर्क सवार ने कहा—तुम्हें अपने बलवान् घोड़े को क़ाबू में रखना चाहिए। परन्तु वह घोड़ा भी किस काम का जो हर एक क़दम पर लड़खड़ाता हो?

ईसाई सवार ने जवाब दिया—जो तुमने देखा है उसके अनुसार तुम्हारा कहना ठीक है। लेकिन तुम यह नहीं जानते कि अपने देश में इस घोड़े ने मुझको अपनी पीठ पर बिठलाकर, उस दिखाई देने

वाली झील से भी बड़ी झील को एक ही छलांग में एक बार पार किया था। और तिस पर भी उसके सुम का एक बाल भी नहीं भीग पाया था।

तुर्क सवार ने अपनी स्वाभाविक गम्भीरता से तुरन्त कहा—बहुत ठीक है! फ्रैंक का कहना सुना नहीं कि उसने एक कहानी कह दी!

ईसाई सवार—तुम मेरे कथन पर जो सन्देह कर रहे हो सो उचित नहीं है, मैं नाइट हूँ। क्या तुम मुझको झूठा समझते हो? मुझे सिर से पैर तक कवच पहने हुए तुम देखते हो। इसी दशा में मैंने मीलों इसी घोड़े पर जमे हुए पानी पर सफ़र किया है।

तुर्क सवार—तुम उस जाति के हो, जो हँसी-दिल्लगी करना ख़ूब जानती है। तुम लोग केवल आपस में ही नहीं; किन्तु दूसरों से भी ग़प्पें हाँककर हँसी-दिल्लगी करते हो।

ईसाई सवार—तुम तो मेरी बातों को समझ ही नहीं सकते। इसलिए तुमसे एक सीधी-सादी सच्ची बात कहकर मैं तुम्हारी निगाह में शेख़ी मारनेवाला साबित हुआ हूँ। अतएव, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी बात तुम भूल जाओ।

इतने में वे दोनों खजूर के कुञ्ज और चश्मे के पास पहुँच गये। इसी रमणीक स्थान में जाकर वे ठहर गये। वहाँ उन्होंने अपने-अपने घोड़ों की लगाम निकाल और उनके ऊपर से काठी हटा, उन्हें अपने बोझ से हलका किया और चश्मे के किनारे ले जाकर उन्हें पानी पीने को छोड़ दिया और वे दोनों स्वयं भी पानी पीने लगे।

दोनों शूरवीरों के शरीर की बनावट एक दूसरे से मिलती-जुलती नहीं थी। ईसाई सवार खासा हट्टा-कट्टा था; उसके केश भूरे और घुँघराले

थे। उष्ण जलवायु में कुछ समय तक रहने के कारण उसके मुँह का रंग कुछ-कुछ काला हो चला था। उसकी नीली नीली बड़ी-बड़ी आँखें बड़ी सुन्दर देख पड़ती थीं। उसके ओठ के ऊपर बड़ी-बड़ी मूँछें थीं। दाढ़ी बिलकुल सफ़ाचट थी। उसकी नाक सुडौल थी। मुँह ज़रा बड़ा था, जिसके भीतर सफ़ेद दाँत चमक रहे थे। उम्र में वह तीस बरस से अधिक नहीं था। वह बड़ा फुर्तीला और उसके हाथ-पैर तथा शरीर के सभी अवयव सुडौल और हृष्ट-पुष्ट थे।

तुर्क सैनिक इसके ठीक विपरीत था। क़द में वह अपने साथी से कोई तीन इञ्च छोटा होगा। ईसाई सवार की अपेक्षा वह उतना हट्टा-कट्टा और मजबूत भी नहीं दिखाई पड़ता था। पहली बार जब ईसाई सवार ने उसे देखा था तब उसे काफ़ी बलवान् और हृष्ट-पुष्ट समझा था, परन्तु नज़दीक से देखने में उसको अपनी धारणा बदलनी पड़ी। उसने देखा कि तुर्क नाटा, ख़ूबसूरत और सुकुमार है। तुर्क के शरीर का रंग कालापन लिये हुए था। उसके लम्बी दाढ़ी थी। नाक सीधी और नोकदार थी, आँखें चमकीली, भीतर घुसी हुई और काली थीं।

तीसरा परिच्छेद

यात्रा प्रारम्भ करने के पूर्व ईसाई सवार ने चश्मे का जल एक बार फिर पिया। उसने उसमें अपना हाथ डुबाये ही तुर्क से कहा—मैं इस सुन्दर चश्मे का नाम जानना चाहता हूँ; ताकि इसे कभी न भुला सकूँ। सच तो यह है कि मुझ जैसे अधिक प्यासे की प्यास शायद इस प्रकार और पहले कभी नहीं बुझ सकी थी।

तुर्क ने उत्तर दिया—अरबी भाषा में इसको 'रेगिस्तान का द्वीप' कहते हैं।

इसके बाद वे दोनों सैनिक अपने-अपने घोड़े पर सवार हो यहाँ से चल पड़े। कुछ दूर तक वे चुपचाप चलते रहे। तुर्क आगे-आगे पथ-दर्शक की तरह जा रहा था। वह मार्ग में चट्टानों के चिह्नों और अन्य बारीक निशानों की सहायता से एक पहाड़ी की ओर जा रहा था, जिसके निकट वे दोनों जाते थे। अन्त में तुर्क सवार ने कहा—मुझे अपने उस साथी का नाम पूछने के लिए क्षमा कीजिए जिससे आज मैंने सङ्कट और विश्राम दोनों अवस्थाओं में सामना किया है और इस प्रकार की घटना इस पेलेस्टाइन की मरुभूमि में नई बात नहीं है।

ईसाई सवार ने उत्तर दिया—उसका नाम वैसा प्रसिद्ध नहीं है। तथापि मैं तुमको बतलाये देता हूँ, मेरा नाम कैनेथ है। मैं ल्यूपार्ड का काउन्ट हूँ। इसके अतिरिक्त देश में मुझे अन्य पदवियाँ भी प्राप्त हैं। बहादुर तुर्क! अब तुम मुझे अपना नाम बतलाओ। यह भी बतलाओ कि तुम अरबों के किस फ़िर्क़े में पैदा हुए हो!

तुर्क—श्रीमान् कैनेथ! मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि तुम्हारा नाम लेने में मुझे तनिक भी कठिनता नहीं जान पड़ती। ल्यूपार्ड के नाइट, मेरा नाम शेरकोफ़—पर्वत का सम्राट्—है। कुर्दिस्तान में, सेलजुक के समान कुलीन वंश और दूसरा नहीं है। मैं इसी खानदान में पैदा हुआ हूँ।

ईसाई सवार—मैंने सुना है कि तुम्हारे सुलतान भी इसी खानदान के हैं।

तुर्क सवार—क्या ईसाई राजे अपने वीरों का इतना आदर करते हैं कि तुम जैसा एक साधारण सैनिक उनके बीच में अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी पूर्णरूप से रक्षा कर सकेगा ?

ईसाई सवार—हमारे यहाँ ऐसी पद्धति है कि नाइट का नाम तथा सज्जन का कुल किसी भी व्यक्ति को राज्य और अधिकार की बातों को छोड़कर बड़े से बड़े बादशाह के बराबर बैठा देते हैं। यदि इँग्लैंड के बादशाह रिचर्ड स्वयं मुझ जैसे निर्धन क्षुद्र नाइट का मान-भंग करना चाहें तो वे शूरों के नियमानुसार बिना द्वन्द्व-युद्ध किये, वैसा कदापि नहीं कर सकते।

तुर्क सवार—एक क्षुद्र नाइट बड़े-बड़े बादशाहों की बराबर समझा जाता है ! यह अद्भुत दृश्य मैं देखना चाहता हूँ।

ईसाई सवार—यदि तुम अपने कथन में 'निडर' शब्द और जोड़ लो तो नाइट की मर्यादा का ज्ञान तुम्हें हो जाय।

तुर्क सवार—और क्या तुम अपने सरदारों और नायकों की स्त्रियों से भी स्वतन्त्रतापूर्वक मिल-जुल और बात-चीत कर सकते हो ?

ईसाई सवार—परमेश्वर करे कि ईसाई-देश का क्षुद्र से क्षुद्र नाइट इतना अधिक स्वतन्त्र न हो कि वह सभी सम्मान योग्य सेवाओं में उस अत्यन्त सुन्दर राजकुमारी के लिए अपनी तलवार और कीर्ति का उपयोग करे, जिसने कभी अपने सिर पर मुकुट धारण किया है।

तुर्क सवार—किन्तु अभी तो तुमने कहा था कि हृदय का सबसे अधिक मूल्यवान् कोष प्रेम है। मैं समझता हूँ कि तुमने भी अपना प्रेम किसी को श्रेष्ठ ढङ्ग से ही समर्पित किया होगा।

ईसाई सवार ने लज्जा के साथ मुस्कुराते हुए उत्तर दिया—हमने अपना हृदय किसको दिया है, ऐसी बातें हम ताव में आकर नहीं बतला दिया करते। तुम्हारे लिए इतना ही जान लेना काफ़ी होगा कि मैंने अपना प्रेम जैसा कि तुमने कहा है, श्रेष्ठ ढंग से ही समर्पित किया है। परन्तु यदि तुम हमारी प्रेम-कथायें तथा तत्सम्बन्धी द्वन्द्व-युद्धों की बातें जानना चाहते हो तो जैसा कि तुमने कहा है, हमारी छावनी को चलो। वहाँ सारी बातें तुम स्वयं अपने कानों से सुन लोगे और यदि चाहोगे तो तुम्हारे हाथों को भी उनका अनुभव हो जायगा। मेरी इच्छा है कि तुम बादशाह रिचर्ड का कुल्हाड़ा भी देख लो। मेरा कुल्हाड़ा उसके सामने पासंग के भी बराबर नहीं है।

तुर्क सवार—हमने इस टापूवाले बादशाह के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना है। क्या तुम उसके प्रजा-जन हो?

ईसाई सवार—उनके अनुयायियों में से हूँ। मेरा जन्म उनके टापू में नहीं हुआ है; पर उस टापू का अवश्य निवासी हूँ जिस पर उनका राज्य है।

तुर्क सवार—इसका क्या मतलब? क्या उस दरिद्र टापू पर दो बादशाह राज्य करते हैं?

ईसाई सैनिक स्काट था। उसने कहा—हाँ, ऐसा ही है।

जब ये दोनों सैनिक इस प्रकार परस्पर बातचीत करते जा रहे थे तब एकाएक ईसाई के हृदय में एक प्रकार का भय उत्पन्न हुआ। उसने अपने मन में सोचा कि इस समय मैं उस भूभाग में हूँ जहाँ शैतान ने ईश्वर की सन्तान को बहकाया था। अब उसने धीरे धीरे अपने विधर्मी

साथी को सांसारिक बातों से अपना ध्यान खींच लिया। और अन्यत्र चाहे भले ही उस चपल वीर का साथ उसे पसन्द आता; परन्तु इस स्थल पर उसे यही अनुभव हुआ कि यदि इस समय एक ग़रीब ईसाई फ़क़ीर का इस विधर्मी के स्थान में साथ होता तो अधिक अच्छा होता।

ये भावनायें उसे प्रतारित कर रही थीं। उधर यात्रा में बढ़ने के साथ-साथ तुर्क का उत्साह बढ़ता जाता था। पर ज्यों-ज्यों वह पर्वतों के अन्धकारमय प्रदेश में प्रवेश करने लगा, त्यों-त्यों उसकी बात-चीत धीमी पड़ती गई। और जब उसकी बातों का कोई उत्तर उसे न मिलने लगा तब वह अधिक ऊँची आवाज़ से बातें करने लगा।

इस पर ईसाई सैनिक ने रुखाई से कहा—ऐ तुर्क! तुम अन्धे हो! तुम मिथ्या विश्वासों की भूलों में पड़े हुए हो। तुम्हें जानना चाहिए कि इस संसार में कुछ स्थान दूसरों की अपेक्षा अधिक पवित्र हैं। और कुछ ऐसे भी दृश्य हैं जिनमें शैतान अपराधी प्राणियों पर सामान्य शक्ति की अपेक्षा अधिक शक्ति रखता है। मैं तुमसे यह नहीं बतलाऊँगा कि यह स्थान, ये चट्टानें, ये अँधेरी गुफाएँ किस प्रभावपूर्ण कारण से शैतान और उसके दूतों की निवास-भूमि समझी जाती हैं? इतना ही बतलाना काफ़ी होगा कि बुद्धिमानों और साधु-सन्तों ने मुझे इस स्थान से सचेत रहने के लिए बहुत पहले से सावधान कर दिया है। इसलिए हे तुर्क, तुम यहां अपनी मूर्खतापूर्ण और अनुपयुक्त बातें मत बको और इस स्थान के उपयुक्त बातों की ओर अपना ध्यान दो।

तुर्क ने ईसाई का कथन आश्चर्य्य से सुना। इसके बाद उसने प्रसन्नता से उत्तर दिया—सर कैनेथ! मैंने तो उस समय कुछ भी बुरा

नहीं माना जब कि तुमने शराब पी और सूअर का मांस खाया। मैंने यह सब कुछ तुम्हें करने दिया जिसे तुम ईसाइयों की स्वाधीनता कहते हो। मेरी ही बातें तुम्हें क्यों बुरी लगीं। मैंने तो सिर्फ़ यही किया है कि यह बुरा मार्ग किसी तरह प्रसन्नता के साथ कट जाय। इसी विचार से मैंने दो एक चीज़ें गा दीं।

ईसाई ने कहा मित्र तुर्क! मैं सङ्गीत-प्रेम की निन्दा नहीं करता। परन्तु यदि लोग इन भूत-प्रेतों से पूर्ण घाटी से जा रहे हों तो उस समय प्रेम-गीतों और शराब के गीतों की अपेक्षा प्रार्थना भजन ही अधिक उपयुक्त है।

सूर्यास्त हो जाने से प्रकाश मन्द पड़ता जा रहा था, तो भी ईसाई सैनिक ने जान लिया कि वे ही दोनों उस जंगल में अकेले नहीं जा रहे थे; किन्तु उनका एक बहुत दुबला और बहुत लम्बा आदमी पीछा करता आ रहा था। यह आदमी झाड़ियों और चट्टानों को पार करता चला आ रहा था। वह आगे बढ़कर उनके रास्ते पर चट्टान और झाड़ी की आड़ में छिपकर जा खड़ा हुआ। जब वे दोनों यात्री उस जगह पहुँचे तब उसने बाहर मार्ग में आकर एकाएक अपने दोनों हाथों में तुर्क के घोड़े की लगाम थाम ली। घोड़ा चौंक पड़ा और पिछले पैरों के बल खड़ा हो गया। तुर्क ने एकाएक गिर पड़ने से एक ओर कूदकर अपने को बड़ी सावधानी से बचा लिया।

तब उस आदमी ने घोड़े की लगाम छोड़ दी और उछलकर सवार का गला जा पकड़ा। इसके बाद वह उस पर चढ़ बैठा। यद्यपि तुर्क सवार जवान और तेज़ था; पर उसकी एक न चली, उसे वह अपने

नीचे दावे रहा। अन्त में क्रोध से; पर आधा हँसते हुए तुर्क ने कहा—मूर्ख, मुझे छोड़ दे। यह तेरी अनभिकार चेष्टा है—मुझे छोड़ दे, नहीं तो मैं अपनी तलवार का उपयोग करूँगा।

उस बकरे की खाल पहने हुए मनुष्य ने उत्तर दिया—"ऐ विधर्मी कुत्ते! तू अपनी तलवार चलायेगा! तो ले उसे अपने हाथ में। यह कहकर उसने झट तुर्क के हाथ से तलवार छीन ली और उसे तुर्क के सिर पर चला दिया।

तुर्क अब सचमुच डर गया। उसने चिल्लाकर कहा—ईसाई सवार, सहायता करो! सहायता करो! नहीं तो यह मुझे मार डालेगा!

अब तक ईसाई सवार मूर्ख-सा बना, सारा हाल देखता रहा था। किन्तु अब उसे अनुभव हुआ कि अपने पराजित मित्र की सहायता करना मेरा कर्तव्य है। अतः उसने उस आदमी से कहा—तुम चाहे जो कोई हो; किन्तु यह जान लो कि मैं कुछ समय के लिए इस तुर्क का मित्र बने रहने के लिए वचन-बद्ध हूँ। अतः मैं प्रार्थना करता हूँ कि उसको उठने दो, नहीं तो उसके पक्ष में मैं तुमसे लड़ूँगा। उस आदमी ने जवाब दिया—हां, ठीक है, एक ईसाई सैनिक का एक विधर्मी कुत्ते के लिए अपने सहधर्मी के साथ लड़ना बिलकुल ठीक है! यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ। साथ ही उसने तुर्क को भी उठ खड़ा होने में मदद दी और उसकी तलवार उसे लौटा दी।

उस आदमी ने तुर्क सवार से कहा—देख लिया न कि तेरे गर्व ने तुझे किस जोखिम में ला डाला। और तेरी चालाकी और तेज़ी यदि

ईश्वर की इच्छा हुई तो एक साधारण उपाय से कैसे व्यर्थ की जा सकती है, यह भी देख लिया न !

उस आदमी के आक्रमण और कठोर शब्दों के प्रतिवाद का भाव व्यक्त किये बिना ही तुर्क सैनिक ने उत्तर दिया—ऐ भले आदमी, मेरी तुझसे प्रार्थना है कि अब आगे ऐसी अनधिकार चेष्टा न हो। मेरे रुष्ट होने से तुझे क्या मिलेगा ? यदि फिर कभी ऐसी बेजा कार्रवाई की तो याद रहे, तेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जायगा। इसके बाद घोड़े पर सवार होते हुए, उसने ईसाई की ओर देखकर कहा—

"मित्र कैनेथ ! रेगिस्तान में सफ़र करते समय मैं अपने मित्र से भी मीठी बातों के स्थान में वास्तविक कार्य अधिक पसन्द करता हूँ। इस मौक़े पर तुमको मेरी अधिक शीघ्रता से सहायता करनी चाहिए थी। उसने तो अपने पागलपन से मेरी जान ही ले ली थी।"

ईसाई ने उत्तर दिया—"बेशक, मैंने किसी क़दर भूल की। परन्तु आक्रमणकारी की विचित्रता तथा घटना का अचानक हो जाना क्या था, मानो तुम्हारे दुष्टतापूर्ण गीत ने हमारे बीच में कोई भूत-सा खड़ा किया हो। इससे मैं इतना घबड़ा गया कि अपने अस्त्र-शस्त्र सँभालने में मुझे दो-तीन मिनट की देरी हो गई।

तुर्क—तुम एक शून्य-हृदय और विचारवान् मित्र हो। यदि वह ज़रा और अधिक पागल हो जाता तो तुम्हारा साथी तुम्हारी बग़ल में ही मारा जाता।

ईसाई—यदि तुम साफ़ ही सुनना चाहो तो मैंने तो उस विचित्र मनुष्य को दानव ही समझा था !

तुर्क—परन्तु मेरा आक्रमणकारी वास्तव में दानवों का राजा ही क्यों न होता, तुम्हारा तो यही धर्म था कि तुम मेरे पक्ष में उससे भिड़ जाते। परन्तु तुम यह जान लो कि यह आदमी और कोई नहीं है, यह वही साधु है जिसका दर्शन करने के लिए तुम यहाँ आये हो।

उस दुर्दशाग्रस्त आदमी की ओर देखकर ईसाई ने कहा—अरे यह! भाई तुर्क, तुम दिल्लगी करते हो। यह कभी पूज्य थिओडोरिक नहीं हो सकता है?

तुर्क—यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो स्वयं उसी से पूछ लो।

तुर्क के मुँह से इन शब्दों के निकलते ही उस आदमी ने स्वयं अपना परिचय इस प्रकार दिया। उसने कहा:—

"मैं ही थिओडोर हूँ। रेगिस्तान में सफ़र करनेवाला मैं ही हूँ। क्रॉस रखनेवालों का मैं मित्र हूँ, अविश्वासियों और भूत-पूजकों का मैं शत्रु हूँ। दूर रहो! दूर रहो!! भाड़ में जाय मुहम्मद और उसके सारे अनुयायी"—यह कहकर उसने अपने फटे-फुटे कपड़ों के भीतर से एक गदा निकाली, जिसे वह अपने सिर के चारों ओर बड़ी सफ़ाई के साथ घुमाने लगा।

सर कैनेथ ने कहा—यह कोई पागल आदमी है।

तुर्क ने कहा—"नहीं जी, यह किसी साधु से कम थोड़े है।" वह साधु बहुत ज़ोर से चिल्ला कर गाने-सा लगा। वह उसी ध्वनि में कहने लगा—मैं इनगाड़ी थिओडोरिक हूँ, रेगिस्तान की मैं मशाल हूँ, अविश्वासियों का मैं शत्रु हूँ। इसके बाद उसने अपना वह गाना बन्द कर दिया। वह उस समय आगे तीन-चार क़दम दौड़ गया, जहाँ से वह उसी प्रकार

दौड़कर लौट आया। उसे अपनी इस उछल-कूद से किसी मल्ल-शाला में खासी प्रशंसा मिल जाती; पर साधु-प्रकृति के विरुद्ध होने से उसकी इस कृत्य से वह स्काच-नाइट चक्कर में पड़ गया।

परन्तु तुर्क उस साधु की प्रकृति अच्छी तरह समझता था। उसने कहा—देखते हो, यह चाहता है कि इसके साथ इसकी गुफा को चलें। और रात बिताने के लिए वही उपयुक्त स्थान भी है। इसे निगाह में रखना चाहिए नहीं तो कहीं चला जायगा। इसे रेगिस्तान का ऊँट ही समझना।

वास्तव में वह कार्य कठिन था। आगे-आगे वह साधु रास्ता दिखाता हुआ चला जा रहा था। बीच-बीच में वह ठहर जाता और हाथ हिला-हिलाकर मानो दोनों सवारों को चले आने को उत्साहित करता। यह सब ठीक था; किन्तु जिस रास्ते से वह उन लोगों को ले चला, वह बीहड़ और पगडंडी-सा था। इसी लिए उन दोनों सवारों को पग-पग पर कठिनाई का सामना करना पड़ा। अंत में किसी प्रकार वे लोग साधु की गुफा के पास जा पहुँचे, जहाँ वह अपने हाथ में मशाल लिये हुए खड़ा था।

चौथा परिच्छेद

ईसाई सैनिक अपने घोड़े से कूद पड़ा और गुफा के भीतर घुस गया। गुफा में काफ़ी जगह नहीं थी। गुफा के दो खंड थे। आगेवाले हिस्से में पत्थर की एक वेदी थी, जिसपर लकड़ी का क्रॉस स्थापित था, यह उस साधु को उपासना-गृह का काम देता था। ईसाई सैनिक ने

अपना घोड़ा इसी खंड की एक ओर बाँध दिया। और जिस प्रकार तुर्क अपने घोड़े को रात को गुज़रने के लिए प्रबन्ध कर रहा था, वैसे ही वह भी करने लगा। उस समय वह साधु अपनी गुफा के भीतरवाले भाग की सफ़ाई अपने अतिथियों का स्वागत करने के लिए कर रहा था, जहाँ वे उससे शीघ्र जा मिले। अगले खंड के सिरे में एक छेद था, जो एक तख्ते से बन्द था। साधु के सोने के कमरे में जाने का यही मार्ग था। इस कमरे में अधिक जगह थी। इसकी फ़र्श बहुत कुछ बराबर थी, जिसपर सफ़ेद बालू पड़ी थी। साधु प्रतिदिन इसे कल के पानी से तर कर देता था। इसके एक ओर कुछ चटाइयाँ पड़ी हुई थीं, इसकी दीवारें फ़र्श की ही तरह बहुत कुछ बराबर थीं, जिन पर जड़ी-बूटियाँ और फूल लटक रहे थे। फूलों की दो मशालें जिन्हें साधु ने जला दिया था; उस स्थान को आनन्दप्रद बना रही थीं।

कमरे के एक कोने में गृहस्थी के कुछ औज़ार पड़े हुए थे। दूसरे कोने में एक ताख़ में कुमारी मेरी की एक प्रतिमा विराजमान थी। एक मेज़ और दो कुर्सियाँ भी वहाँ थीं, जो साधु की ही बनाई मालूम पड़ती थीं। मेज़ पर दाल-रोटी ही नहीं रक्खी थी; किन्तु सुखलाया हुआ मांस भी। थिओडोरिक ने यह सारी सामग्री इस प्रकार सजा दी थी कि देखते ही अतिथियों को भूख लग आई। उस साधु के उठने-बैठने में गम्भीरता झलकती थी। परन्तु उसकी साधुता की भावना ने उसकी रूपरेखा से, जिसमें तपस्या के कारण कठोरता आगई थी, शान और महानता का भाव नहीं व्यक्त होने दिया। वह अपनी उस कोठरी में इस ढङ्ग से चलता-फिरता था, मानो लोगों पर शासन करने के लिए उसका जन्म हुआ हो; परन्तु

अब अपना साम्राज्य ईश्वर का भक्त बनने के लिए त्याग कर दिया हो। तथापि वह अपने भारी डील-डौल, लम्बी जटाओं और दाढ़ी तथा घुसी हुई तेज़ आँखों से साधु की अपेक्षा कहीं अधिक सैनिक मालूम होता था।

तुर्क सवार भी उस साधु को कुछ आदर के भाव से देखता मालूम पड़ता था। जब वह उपर्युक्त ढङ्ग से अपने काम में व्यस्त था तब उसने सर कैनेथ के कान में धीरे से कहा—इस समय इसका दिमाग़ ठीक है। परन्तु जब तक हम लोग नहीं खा-पी लेते, वह एक शब्द भी न बोलेगा। उसका ऐसा ही नियम है।

थिओडोरिक ने स्काट सैनिक से उन कुर्सियों में एक पर बैठ जाने का संकेत किया। उधर शेरकोह अपने देश की रीति के अनुसार चटाई पर बैठ गया। उसके बाद साधु ने अपने दोनों हाथ ऊपर को उठाये, मानो वह उस भोजन-सामग्री को जिसे उसने अपने अतिथियों के सामने रक्खा था, मन्त्रविभूत कर रहा हो, इस पर उन्होंने चुपचाप भोजन करना प्रारम्भ किया।

अभी तक उस साधु ने भोजन नहीं किया था। जब उसके दोनों अतिथि खा-पी चुके तब उसने मेज़ पर से जूठन को उठाकर अलग किया। इसके बाद उसने शरबत की एक बोतल तुर्क के सामने और शराब की एक बोतल स्काट के सामने रखकर कहा—"ऐ मेरे बच्चो। पान करो, ईश्वर का ध्यान करते समय उसकी दी हुई चीज़ों का उपभोग करना चाहिए।"

यह कहकर वह बाहर के कमरे में सम्भवतः पूजा करने चला गया। उसके दोनों मेहमान वहीं बैठे रहे। इस अवसर पर कैनेथ ने तुर्क से

अनेक प्रश्न पूछकर यह जानने का प्रयत्न किया कि वह साधु के सम्बन्ध में क्या जानता है ? परन्तु तुर्क साधु का अधिक हाल नहीं बतला सका। उसने जो कुछ बतलाया उसका सारांश यह है—किसी समय यह साधु एक बड़ा बहादुर सिपाही था। वैसे ही उसकी सलाह भी बुद्धिमत्तापूर्ण होती थी। लड़ाई में उसे कोई हरा नहीं सकता था। जेरूसलम में वह यात्री के रूप में नहीं आया था। उसने इस पवित्र भूमि में बसकर अपना शेष जीवन व्यतीत करने का दृढ़-निश्चय कर लिया था। इसके बाद यह यहाँ के ध्वंसावशेषों में आ रहा, जहाँ हम लोगों ने उसे पाया है। साधु का असली नाम 'हमाको' नहीं है। उसका यह नाम तुर्क लोगों ने रक्खा है। पहले यह बड़ा बुद्धिमान् था। प्रायः घण्टों सदाचार और ज्ञान के सम्बन्ध में उपदेश किया करता था और ज़रा भी त्रुटि न होने पाती थी; परन्तु कभी-कभी वह पागलपन या उद्दण्डता के भी काम कर बैठता था। तो भी मैंने आज जैसी शरारत करते पहले कभी नहीं देखा। उसने इतनी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी कि हमारे सुलतान सलादीन ने आज्ञा दे दी थी कि उससे कोई न बोले और उसकी रक्षा की जाय। सलादीन एवं दूसरे मुसलमान उमरा कई बार इस गुफा में आ चुके हैं। कुछ तो कौतूहलवश और कुछ इस आशा से कि इस ईसाई हमाको जैसे विद्वान् से भविष्य की बातें मालूम हो जायँगी। इसकी अपनी एक बड़ी ऊँची वेधशाला थी, जिसमें वह ग्रहों का निरीक्षण किया करता था। मुसलमान और ईसाई दोनों का विश्वास है कि ग्रहों की गति और प्रभाव से मनुष्यों का जीवन व्यवस्थित होता है, अतएव उनके द्वारा मनुष्य का भविष्य जाना जा सकता है।

तुर्क की इस बात-चीत से सर कैनेथ ने सोचा कि उसको साधु से कहीं अधिक घनिष्ठता है; यद्यपि उसकी बातों से ऐसा नहीं प्रकट होता। साधु ने तुर्क को एक दूसरे नाम से पुकारा था। यह नाम उस नाम से भिन्न था, जो वह जानता था। अतएव उसका ध्यान इस ओर भी गया। इन सब बातों को सोच-समझकर सर कैनेथ ने यह निश्चय किया कि पहले इस साधु को अच्छी तरह जान-बूझ लूँ, इसमे उस महत्त्वपूर्ण कार्य के सम्बन्ध में जो मुझे सौंपा गया है, बात-चीत करने में जल्दी करना ठीक नहीं है। उसने कहा—भाई तुर्क, मुझे तो ऐसा समझ पड़ता है कि इस साधु के विचार जैसे दूसरी बातों में इधर-उधर हो जाते हैं, वैसे ही मनुष्यों के नामों में भी हो जाते हैं। देखो न, तुम्हारा नाम शेरकोह है; लेकिन उसने तुम्हें दूसरे नाम से ही पुकारा था।

तुर्क—जब मैं अपने पिता के साथ रहता था तब मेरा नाम अब्दुल रहीम था। बहुत से लोग मुझे अभी तक इसी नाम से जानते हैं। किन्तु लड़ाई के मैदान में, सैनिकों के बीच में, मैं शेरकोह नाम से ही प्रसिद्ध हूँ। मैंने अपनी इस तलवार की बदौलत यह नाम प्राप्त किया है। अच्छा, अब चुप रहो, हमाको आ रहा है।

इतने में साधु ने कमरे में प्रवेश किया। अपनी छाती पर अपने दोनों हाथ धरकर उसने गम्भीरता से कहा—ईश्वर को धन्यवाद है, जिसने दिन भर काम-काज करने के बाद, आराम करने के लिए शान्त रात, थकावट दूर करने के लिए गाढ़ी नींद, प्रदान की है। उन दोनों योद्धाओं ने 'आमीन' कहा।

इसके बाद वे दोनों सैनिक उठे और सोने के लिए अपने-अपने

बिछौने पर चले गए, जिनकी ओर उस साधु ने अपने हाथ से संकेत कर दिया था। वह साधु उन दोनों को अभिवादन कर फिर वहाँ से चला गया। कैनेथ कितने समय तक गहरी नींद में पड़ा सोता रहा, इसकी उसे खबर नहीं हुई। उसकी नींद तब खुली जब उसे अपनी छाती पर कुछ बोझ-सा मालूम हुआ। "कौन है ?" यह वह पूछनेवाला ही था कि उसने अपनी आँखें खोल दीं। उसने देखा कि उक्त साधु पलँग के पास खड़ा है और अपने दाहने हाथ से उसकी छाती दबा रहा है और अपने दूसरे हाथ में चाँदी का एक चिराग़ लिये है।

साधु ने कहा—चुप रहो, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं। मैं नहीं चाहता कि उन्हें वह विधर्मी भी सुन ले। इसलिए तुम इसी दम उठ खड़े हो, कपड़े पहन लो, कुछ बोलो मत और धीरे-धीरे चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चले आओ।

कैनेथ उठ खड़ा हुआ और अपनी तलवार हाथ में लेली। साधु ने उसके कान में धीरे से कहा—हम लोग उस जगह चल रहे हैं, जहाँ इन लोहे के हथियारों की कुछ भी ज़रूरत नहीं, वहाँ तो केवल आत्मिक हथियार ही काम देते हैं।

कैनेथ ने अपनी तलवार पलँग पर रख दी और केवल अपनी कटार लेली, जिसे वह इस देश में अपने से कभी अलग नहीं करता था। वह उस विचित्र साधु के साथ हो गया। वे दोनों इतना धीरे से बाहर के कमरे में चले गये कि उनके पैरों की कुछ भी आहट न हुई। तुर्क अपनी जगह पर चुपचाप पड़ा सोता रहा। बाहरी कमरे में वेदी और क्रास के सामने एक दीपक जल रहा था और फ़र्श पर एक कोड़ा पड़ा था,

जिस पर ख़ून के दाग़ थे। यह कोड़ा उस साधु की कठोर तपस्या का प्रमाण था। इस स्थान पर वह साधु अपने घुटने टेककर बैठ गया और सैनिक को भी अपने पास बैठ जाने के लिए संकेत किया। साधु ने कैथोलिक सम्प्रदाय की कई प्रार्थनाएँ धीरे-धीरे गाईं। इसके बाद वे दोनों खड़े हो गये।

साधु ने एक कोने की तरफ़ इशारा करके कहा—बेटा, उस कोने की ओर देखो। वहाँ तुझे एक नक़ाब मिलेगी। उसे उठा ला। कैनेथ नक़ाब ले आया। जब कपड़े पर दीपक का प्रकाश पड़ा तब उसने देखा कि वह फटी है और उसमें कहीं-कहीं काले-काले दाग़ हैं। साधु ने उसकी ओर उत्तेजना के साथ देखा; परन्तु वह अपने भावों को गला भर आने से दबा लेने को बाध्य हुआ। उसने कहा—इस समय तुम्हें पृथ्वी का एक सबसे बड़ा खज़ाना दिखाई देने को है। मेरा दुर्भाग्य है कि मैं उसके देखने के योग्य नहीं हूँ। यह कहकर वह कुछ समय तक चुप रहा। इसके बाद उसने कुछ अधिक ज़ोर के स्वर में कहा—क्या तुम इँग्लैंड के रिचर्ड से मेरे लिए कोई शुभ संवाद लाये हो?

सर कैनेथ ने कहा—मैं ईसाई राजाओं की कौंसिल की ओर से आया हूँ। परन्तु इँग्लैंड के राजा की तबीयत आज-कल कुछ खराब है। अतएव उन्होंने मुझे कोई आदेश नहीं दिया है।

साधु ने पूछा—तुम्हारा संकेत क्या है? सर कैनेथ कुछ ठिठका। उसका पहले का पागल जैसा ढङ्ग याद आ गया। परन्तु इस समय के उसके साधुपन ने अपना काम किया। अन्त में उसने कहा—मेरा संकेत है—"राजे भिक्षुक से माँगते हैं!"

साधु ने कहा—ठीक है, मैं तुम्हें जान गया। इसके बाद वे दोनों फिर कमरे में लौट आये। तुर्क अभी तक गहरी नींद में सो रहा था। वह साधु उसके पास खड़ा होकर उसकी ओर देखने लगा। फिर उसने ईसाई सैनिक से कहा—यह तुर्क अन्धकार में पड़ा सो रहा है। इसको सोने दो। यह कहकर साधु ने ईसाई सैनिक को अपने पीछे आने का संकेत किया और वह फिर उसी वेदी के पास जा खड़ा हुआ।

इसके बाद वेदी के पीछे जाकर उसने एक काँटा दबाया। उसके दबाते ही लोहे का एक गुप्त दरवाज़ा खुल गया। किवाड़ खुल जायँ, इसके लिए उसने चिराग़ से थोड़ा तेल उसके चूरों में लगा दिया। किवाड़ के खुलते ही प्रवेश करने के लिए कुछ सीढ़ियाँ दिखलाई पड़ीं।

साधु ने खेद के स्वर में कहा—मैं यह जो नक़ाब लिये हूँ उससे तुम मेरी आँखें बाँध दो, जिससे मैं ख़ज़ाने को न देख सकूँ। हाँ, तुम उसको भली प्रकार देख सकोगे, क्योंकि तुम निष्पाप हो।

ईसाई सैनिक ने बिना कोई उत्तर दिये साधु की आँखें उसके कहने के अनुसार बाँध दीं। सीढ़ियों पर आगे-आगे साधु निधड़क चला जा रहा था और उसके पीछे-पीछे कैनेथ चिराग़ लिये हुए।

पाँचवाँ परिच्छेद

अन्त में वे दोनों एक बेढंगे छोटे-से कमरे में जा खड़े हुए। इसके एक कोने में एक छोटा-सा दरवाज़ा था, जो लोहे के किवाड़ से बन्द था। इसके पास आकर साधु ने अपने साथी सैनिक से कहा—अपने जूते उतार दो। यह एक पवित्र जगह है।

सैनिक ने आज्ञानुसार अपने जूते उतार दिये। इस समय वह साधु खड़े-खड़े प्रार्थना-सा करता हुआ जान पड़ता था। इसके बाद उसने सैनिक से दरवाज़े पर तीन बार धक्का देने को कहा। सैनिक ने वैसा ही किया, तत्क्षण दरवाज़ा स्वेच्छा से खुल गया। दरवाज़ा कैसे खुल गया, यह कैनेथ न जान सका। इतने में एकाएक उस समय कमरे के भीतर बड़े ज़ोर का प्रकाश हुआ और वह प्रकार की विकट सुगन्ध से भर गया। इन दोनों बातों से कैनेथ सहमकर दो-तीन क़दम पीछे हट आया। परन्तु क्षण ही भर में वह सँभल गया।

जब सैनिक ने उस विलक्षण कमरे में प्रवेश किया तब उसने वहाँ चाँदी के दीपक जलते पाये। उक्त प्रकाश इन्हीं दीपकों का था। जो सुगन्ध उठ रही थी वह भी इन्हीं दीपकों से। ये दीपक छत से चाँदी की ज़ंजीरों से लटक रहे थे। यह कमरा वास्तव में एक छोटा-सा गिरजा-घर था, जो उस साधु के विचित्र निवास-स्थल की ही भाँति उस ठोस चट्टान में पत्थर काटकर बनाया गया था। इस गिरजे की छत दोनों ओर खंभों से ठहरी थी, जिसकी तराश से कारीगरी टपकती थी। खंभों के आमने-सामने दोनों ओर दीवालों में ताख थे, जिनमें ईसाई-धर्म के बारहों महात्माओं की प्रतिमाएँ स्थापित थीं।

इस गिरजे के पूर्व भाग में वेदी थी। जिसके पीछे एक बहुमूल्य रेशमी पर्दा पड़ा था। यहाँ कोई मूर्ति या कोई प्राचीन पवित्र वस्तु सम्भवतः रक्खी थी, जिसकी स्मृति में इस पूजा-गृह का निर्माण हुआ था। ईसाई सैनिक इसी धारणा से गिरजे के उस भाग की ओर बढ़ा और उसके सामने घुटने टेककर बड़ी भक्ति के साथ प्रार्थना करने लगा। इतने

में एकाएक प्रतिमा के आगे का पर्दा न मालूम कैसे किसने एक ओर खींच लिया, जिससे उसका ध्यान भङ्ग हो गया। उसने अब अपने सामने, एक ताख में, छोटे आकार में, चाँदी का एक गिरजा-घर रक्खा हुआ देखा। जब वह उसे बड़े ध्यान से देख रहा था तब एकाएक उसने उस चाँदी के गिरजा-घर का किवाड़ खुलते देखा। उसने उसके भीतर देखा कि एक लकड़ी का टुकड़ा रक्खा है जिस पर 'वेरा क्रुक्स' शब्द उत्कीर्ण है। इसी समय उसे स्त्रियों का मधुर सङ्गीत सुनाई दिया। सङ्गीत के बन्द होते ही उस चाँदीवाले गिरजे का द्वार भी बन्द हो गया और परदा भी गिर गया। इधर जब सैनिक प्रार्थना समाप्त कर चुका तब वह साधु को इधर-उधर खोजने लगा। साधु आँख में पट्टी बाँधे हुए पास ही देहली के पास सावधान बैठा था। उसने देहली के भीतर आने का साहस नहीं किया था।

सैनिक उसके पास आया, मानो उसे कुछ कहना हो। साधु उसका उद्देश्य समझ गया। उसने तत्काल कहा—भीतर ही रहो, भीतर ही रहो। तुम बड़ी प्रसन्नता प्राप्त करोगे। स्वप्न अभी समाप्त नहीं हुआ है। यह कहकर उसने गिरजे के दरवाज़े को बन्द कर लिया। और अब दरवाज़े के स्थान का चिह्न तक न रहा, यहाँ तक कि कैनेथ भी न जान सका कि वह किस स्थान पर था। उस प्रकाशमान् गिरजे में अब कैनेथ अकेला रह गया। न वहाँ कोई उसका साथी था और न उसके पास उस कटार को छोड़कर कोई अस्त्र।

कैनेथ को आगे की बातों के लिए कुछ भी गुमान न था; पर उसका साहस बना हुआ था। वह रात भर उस सुनसान गिरजे में

टहलता रहा। बहुत तड़के और मुर्ग़ा बोलने के पहले एकाएक घंटी बजने का शब्द सुना। यह शब्द वैसा ही था जैसा सवेरे के समय, प्रार्थना के समय प्रायः होता है। उस स्थान और उस समय ने इस शब्द को और भी अधिक गम्भीर बना दिया था। यद्यपि वह वीर था, तो भी उससे सहमकर वेदी के सामनेवाले कोने में जा खड़ा हुआ। वहाँ खड़ा होकर वह इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि देखें अब क्या होता है?

सैनिक को अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। वह रेशमी पर्दा फिर खींच लिया गया और उक्त प्राचीन वस्तु उसकी आँखों के सामने फिर आ गई। जब वह घुटने टेके प्रार्थना कर रहा था तब उसे प्रार्थनाकालीन केथोलिक ईसाइयों का प्रारम्भिक संगीत सुनाई दिया, जिसे स्त्रियाँ गा रही थीं। अब वह संगीत उसे समीप ही सुनाई पड़ने लगा। इतने में एक दूसरा दरवाज़ा दूसरी ओर से खुला।

अब सैनिक साँस रोककर दरवाज़े की ओर देखने लगा। उसने देखा कि दरवाज़े पर एक भीड़ एकत्र है, जो भीतर आना चाहती है। पहले चार बालक दो-दो की पंक्ति में आये। इनके हाथ-पैर और गर्दनें वस्त्र हीन थीं, जिससे इनका पूर्वी गेहुआँ रङ्ग दिखाई देता था। ये सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे। पहली पंक्ति के लड़के हाथों में धूप-पात्र लिये हुए इधर-उधर घुमा रहे थे, जिनकी सुगन्ध से उक्त सुगन्ध-पूर्ण स्थान और भी अधिक सुगन्ध से भर गया। और दूसरी पंक्ति के लड़के ज़मीन पर फूल बिखरा रहे थे।

लड़कों के बाद स्त्रियाँ आईं। ये छः महिलाएँ बड़े सज-धज से चल रही थीं। ये अपनी सुफ़ेद पोशाक के ऊपर काले रंग की ओढ़नियाँ

ओढ़े थीं और काली ही नक़ाब लगाये थीं। ये सधुआइनें मालूम होती थीं। इनके पीछे उतनी ही और कुमारियाँ थीं। ये सुफ़ेद नक़ाब लगाये थीं, जिससे यह प्रतीत होता था कि ये कभी-कभी आकर गिरजे में निवास करती हैं और किसी प्रकार के व्रत से बाध्य नहीं रहती हैं। पहली पंक्ति की छहों के हाथ में मालाएँ थीं; किंतु उनके पीछे-पीछे चलनेवाली कुमारियों के हाथ में लाल और सुफ़ेद फूलों का एक-एक गुलदस्ता था। ये गिरजे की परिक्रमा कर रही थीं। कभी-कभी परिक्रमा में वे कैनेथ के बिलकुल पास से निकल जाती थीं, यहाँ तक कि उनके कपड़े तक उससे छू जाते थे, किन्तु वे उसकी ओर ध्यान नहीं देती थीं।

पहली परिक्रमा में तो कोई विशेष बात नहीं हुई। दूसरी परिक्रमा में जब वे महिलाएँ कैनेथ के पास से निकलीं तब सफ़ेद पोशाकवाली एक कुमारी के गुलदस्ते से एक गुलाब की कली कैनेथ के पैर पर शायद अनजाने में गिर पड़ी। कैनेथ इस प्रकार चौंक पड़ा, मानो किसी ने भाला भोंक दिया हो।

जब तीसरी परिक्रमा होने लगी तब कैनेथ उस युवती की ओर विशेषरूप से देखने लगा, जिसने उसके पैर पर फूल की कली गिरा दी थी। उसकी चाल, उसका मुख, उसकी बनावट अन्य कुमारियों से इतनी अधिक मिलती-जुलती थी कि वह उनसे पृथक नहीं पहचानी जा सकती थी। तथापि उसका हृदय न जाने क्यों दूसरी पंक्ति की दाहिनी तरफ़वाली कुमारी की ओर आकृष्ट हो गया था। वास्तव में उसके हृदय में इस कुमारी के प्रति विशेष अनुराग, विशेष प्रेम उत्पन्न हो गया था। अन्त में तीसरी परिक्रमा करती हुई वह कुमारी फिर उसके

पास से निकली। इस बार उसके छोटे और सुघर हाथ का कुछ अंश उसके कपड़ों के भीतर से बाहर निकला और एक कुसुमकली सैनिक के पैर पर फिर आ गिरी।

दूसरी बार फूल का गिरना अनजान की बात नहीं हो सकती; क्योंकि उस अर्धनिकले सुन्दर हाथ को उसने पहचान लिया था। जो उसके ओठों से एकाएक छू गया था और जिसका स्पर्श होते ही उसमें प्रेम करने की उसने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली। इसके सिवा एक प्रमाण यह भी था कि उस हाथ में जो अँगूठी थी उसमें लाल जड़ा हुआ था। और वह बहुमूल्य अँगूठी उसी अँगुली से किये गये सङ्केत की अपेक्षा उसकी निगाह में उतना अधिक मूल्यवान् नहीं जँच सकती थी। यद्यपि वह नक़ाब डाले थी तो भी उसे उस स्त्री के बालों की लटें दिखाई देती थीं जिन पर वह मुग्ध था। यह उसकी प्रेयसी थी।

जिस रास्ते से वह जुलूस आया था, उसी से वह लौट गया। मधुआइनें और वे स्त्रियाँ सब की सब क्रम से इस खुले हुए द्वार में चली गईं। अंत में वह स्त्री भी, जिसने उसे दो बार सङ्केत किया था, उसी दरवाज़े से चली गई। परन्तु दरवाज़ा पार करते समय उसने कैनेथ की ओर धीरे से घूमकर एक बार देख लिया। उसने उस रमणी की नक़ाब की अन्तिम झलक देखी कि वह ग़ायब हो गई। ज्योंही सब से पीछे की युवती ने दरवाज़े को पार किया, त्योंही वह बंद हो गया, साथ ही उनका सङ्गीत भी। इधर गिरजे के दीपक भी तुरन्त बुझ गये। अब कैनेथ अकेला रह गया, सो भी बिलकुल अंधकार में। किन्तु उसे न तो उस एकान्त जगह की परवा थी, न अंधकार की और न अपनी रहस्यमय

परिस्थिति की ही । ये सब उसके लिए कुछ नहीं थीं। यदि उसे किसी बात की चिन्ता थी तो केवल उस स्वप्न की, जो उसकी आँखों के आगे से अभी लुप्त हुआ था तथा उस महिला के उस कृपापूर्ण सङ्केतों की। वह उस समय उन कलियों को फ़र्श पर टटोलने लगा, जिन्हें उस स्त्री ने गिरा दिया था। वह कभी उन्हें अपने ओठों के पास ले जाता तो कभी छाती से लगा लेता, कभी एक-एक को, तो कभी दोनों को एक साथ। वह कभी फ़र्श के उन ठंडे पत्थरों को चूमने लगता, जिन पर उसकी प्रेयसी अभी थोड़ी देर पहले चल रही थी। उसकी सब बातें उसके सच्चे प्रेम को ही प्रदर्शित कर रही थीं।

कैनेथ ने यद्यपि अपनी उस प्रेमिका के अद्वितीय रूप को प्रायः प्रेम से देखा था, तो भी उसकी वाणी उसे सुनने को कभी नहीं मिली थी। वह उस समाज में आती-जाती थी जिसमें उसकी पहुँच यद्यपि उसकी पद-मर्यादा के कारण थी, तथापि वह उसमें किसी से मिल-जुल नहीं सकता था। यद्यपि कैनेथ अपनी वीरता और युद्ध-कला के लिए काफ़ी प्रसिद्ध था, तथापि वह ग़रीब स्काट-योद्धा अपनी प्रेयसी को दूर ही से प्रेम कर सकता था। और इधर उस स्त्री की आँख टूर्नामेंट में उसी पर रहती थी। प्रति दिन जो युद्ध होते थे, उनकी रिपोर्टों से उसकी प्रशंसा उसके कानों ने सुनी थी। जब कभी वह किसी को देखती या किसी के सम्बन्ध में सुनती, तब वह कैनेथ के साहस और उसके रूप की तुलना करने लगती और अन्त में वही उसे श्रेष्ठ जँचता था।

इस कुलीन युवती का नाम एडिथ था। धीरे-धीरे इसका प्रेम-भाव

इतना बढ़ गया कि एडिथ को विश्वास हो गया कि स्काटलैंड का यह सामन्त ही हमारे भविष्य-जीवन का साझीदार होगा।

परन्तु विचित्र बात तो यह थी कि इन दोनों प्रेमियों की एक दूसरे से कभी बातचीत तक नहीं हुई। कम से कम एडिथ अपने प्रेमी से इस कारण दूर-दूर रहती थी कि उनके पारस्परिक सम्बन्ध के प्रकट हो जाने पर ऐसी कठिनाइयाँ आ खड़ी होतीं जिनमें उसे अपना प्रेमी सम्भवतः गँवा देना पड़ता। उधर कैनेथ को भी उसके साथ सम्बन्ध होने में सन्देह और आशंका थी। यही कारण था कि ये दोनों प्रेमी यद्यपि एक दूसरे पर अत्यधिक आसक्त थे तथापि खुलकर अपना प्रेम प्रकट करने की हिम्मत उन्हें न होती थी।

छठाँ परिच्छेद

एक घंटे के बाद गिरजे में सीटी की एक तीखी ध्वनि सुनाई पड़ी। कैनेथ चौंककर खड़ा हो गया और अपनी कटार हाथ में ले ली। इतने में चुरचुर की ध्वनि हुई और एकाएक छत में प्रकाश फैल गया, मानो वह फ़र्श के किसी छेद से आ रहा हो। इसी समय एक छोटा-सा दरवाज़ा फ़र्श में दिखलाई पड़ा, जिससे एक आदमी का हाथ चिराग़ लिये हुए दिखाई दिया। जिस आदमी का यह हाथ था, सीढ़ियाँ चढ़कर जब वह ऊपर आया तब वह एक भयङ्कर बौना निकला। उसके बायें हाथ में एक प्रकार का झाड़ू था। गिरजे में आकर उसने चिराग़ अपने मुख के

सामने किया। उसके प्रकाश में उसका डरावना चेहरा और अङ्ग-प्रत्यङ्ग साफ़-साफ़ दिखलाई दिये।

बौने ने फिर सीटी दी जिसे सुनकर उसका साथी नीचे से चढ़ आया। यह आदमी भी उसी की तरह ऊपर आया था। परन्तु यह स्त्री थी। हाँ, रूप-रेखा में उसके ही सदृश थी। इन्हें देखकर कैनेथ भुच-सा खड़ा रह गया।

उन दोनों की डरावनी जोड़ी अपने-अपने झाड़ू से गिरजे की फ़र्श साफ़ करने लगी। वे एक ही हाथ से झाड़ू पकड़े बुहारते थे, इस कारण फ़र्श की सफ़ाई अच्छी तौर पर नहीं हुई। आखिरकार बुहारते-बुहारते जब वे कैनेथ के पास पहुँचे, तब उन्होंने बुहारना बन्द कर दिया और उसके ठीक सामने, एक पंक्ति में खड़े हो गये। इसके बाद उन्होंने अपने हाथ के चिराग़ों का प्रकाश अपने ऊपर से हटाकर कैनेथ के ऊपर कर दिया। इस प्रकार वे उसकी सूरत-शक्ल भली-भाँति देखकर बड़े ज़ोर से खिलखिला उठे। उनकी हँसी से कैनेथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त पूछा कि ईश्वर के लिए यह बतलाइए कि आप कौन हैं, जो इस पवित्र स्थान को इस प्रकार विचित्र संकेतों और कोलाहल से दूषित कर रहे हैं।

पुरुष ने उत्तर दिया—मैं नेक्टाबैनस नाम का बौना हूँ।

स्त्री ने कहा—और मैं जेनेवरा नाम की इस व्यक्ति की पत्नी हूँ।

कैनेथ ने फिर पूछा—तुम लोग यहाँ कहाँ से आये?

इतने में जिस ओर से कैनेथ आया था उस तरफ़ से आवाज़ आई—चुप, चुप! मूर्खो भाग जाओ। तुम्हारा काम समाप्त हो गया।

ज्योंही उन दोनों ने यह आज्ञा सुनी, त्योंही उन्होंने एक दूसरे से न जाने क्या काना-फूसी करके अपने-अपने चिराग़ बुझा दिये और वहाँ से रफूचक्कर हो गये। इन लोगों के चले जाने के बाद कमरे में फिर सन्नाटा और अँधेरा छा गया।

उन दोनों के चले जाने के कुछ ही क्षण बाद कैनेथ ने जिस दरवाज़े से गिरजे में प्रवेश किया था, वह एकाएक खुल गया। उसकी चौखट पर जो लालटेन रक्खी थी उससे धुँधला प्रकाश आ रहा था। और उसके पास वह साधु लेटा था, जिसे उसने उसके पास आकर पहचान लिया। साधु ने उससे कहा—लालटेन को लो और आगे-आगे चलकर मुझको रास्ता दिखलाओ। जब तक मैं यहाँ रहूँगा तब तक अपनी आँख नहीं खोलूँगा।

कैनेथ ने आज्ञा का पालन किया। जिस रास्ते से दोनों आदमियों ने पहले यहाँ प्रवेश किया था, उसी से वे लौट गये और साधु की गुफा के बाहरी भाग में पहुँच गये।

गुफा में पहुँचने पर कैनेथ ने देखा कि तुर्क गहरी नींद में पड़ा सो रहा है। पहले तो कुछ समय तक वह माला फेरता रहा। इसके बाद सो गया। थका हुआ था ही, इससे उसे गहरी नींद आई। सुबह होने पर वह उठा और साधु से कुछ आवश्यक बातों के सम्बन्ध में परामर्श किया। इसका फल यह हुआ कि उसे और दो दिन तक वहाँ रहना पड़ा।

सातवाँ परिच्छेद

जारडन के इस पहाड़ी स्थल की बात छोड़कर अब हम इँग्लैंड के राजा रिचर्ड की छावनी का वर्णन करेंगे। उस समय उसकी छावनी जीन डि एकर और ऐस्कालन के बीच पड़ी थी।

इस भूभाग का जलवायु अच्छा नहीं था। रिचर्ड जैसा पुरुषसिंह भी उस भूभाग में स्वस्थ नहीं रह सका। निरन्तर शारीरिक और मानसिक परिश्रम करने के कारण उसका स्वास्थ्य खराब हो गया। लौह सदृश शरीर होते हुए भी उसे धीमा ज्वर आने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि वह घोड़े की सवारी करने में असमर्थ हो गया। इसके बाद उन सभाओं में उसका आना-जाना बन्द हुआ, जो युद्ध के सम्बन्ध में समय-समय पर कमेंडर लोग करते रहते थे।

उधर रिचर्ड बीमार पड़ गया, इधर युद्ध की गति शिथिल हो गई। छावनी में जो शिथिलता छाई हुई थी, इसकी रिपोर्टें सुन-सुन रिचर्ड उसी प्रकार अपना मन मसोसकर रह जाता, जिस तरह पिंजड़े में बन्द शेर अपने आहार को देखकर रह जाता है।

रिचर्ड स्वभाव से ही जल्दबाज़ और उद्दण्ड था। अतएव इन सब बातों से उसका मिज़ाज बिगड़ उठता था, जिससे उसको हानि पहुँचती। उसके नौकर उसके सामने सदा थरथराया करते। यहाँ तक कि डॉक्टरों के सहकारी भी डरते रहते और मरीज़ पर जितना शासन उन्हें रखना चाहिए उतना भी न रखते थे। हाँ, केवल एक स्वामिभक्त (भूस्वामी) था, जो साहस के साथ उसके पास सदा मौजूद रहता था। यह रिचर्ड के क्रोध

की परवा नहीं करता था और चुपचाप, किन्तु दृढ़ता के साथ उस पर आवश्यक शासन रखता था। इसका नाम सर टामस था और वह कम्बरलैंड के गिल्सलैंड का लॉर्ड था।

संध्या का समय था। रिचर्ड रोग-शैया पर पड़ा था। शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार की व्यथाओं से वह पीड़ित था। ज्वर और मानसिक बेचैनी से उसकी नीली प्रेमपूर्ण आँखें निस्तेज हो गई थीं। जिस प्रकार तूफ़ान आने के एक-दो मिनट पहले मेघ समूह से होकर सूर्य की अन्तिम किरणें दिखाई देती हैं, ठीक उसी प्रकार उसके काले-काले लंबे केशों की लटों के बीच से उसकी आँखें चमक रही थीं। उसकी रूप-रेखा रोग के बढ़ने की गवाही दे रही थी।

उसकी दाढ़ी बढ़ गई थी। कभी बेचैनी से वह करवटें बदलता रहता; कभी वह कपड़ा ओढ़ लेता तो कभी उसे उतार डालता। उसके पलङ्ग का बार-बार हिलना तथा बेचैनी के हाव-भाव उसकी स्वाभाविक शक्ति ही प्रकट कर रहे थे, जो अपना स्थान क्रियाशीलता के क्षेत्र में रखती थी। उसके पलङ्ग के पास उसके सामने टामस खड़ा था।

जिस खेमे में ये दोनों रहते थे, उसका रङ्ग-ढङ्ग राजकीय नहीं था; किन्तु रिचर्ड के स्वभावानुसार सैनिक था। रिचर्ड की शैया के पास एक मेज़ थी, उस पर लोहे की एक तिकोनी ढाल रक्खी थी। जिसमें सिंह की तीन तस्वीरें बनी थीं। ढाल के सामने उसका सोने का शाही ताज रक्खा था। ताज के पास ही एक भारी फरसा रक्खा था, जो इतना भारी था कि रिचर्ड के अतिरिक्त और कोई इसका उपयोग नहीं कर सकता था।

बड़ी देर तक चुप रहने के बाद बादशाह बोला—सर टामस ! तो बाहर का कोई अच्छा समाचार नहीं आया है ?

टामस—महाराज ! सन्धि के कारण हम इस समय निश्चेष्ट हैं। इसके सिवा महिलाएँ, महारानी और राजकुमारी के साथ इंगादी के मठ की यात्रा करने जायँगी। वहाँ जाकर उन्हें अपने व्रत पूरे करने हैं, जिसमें श्रीमान् नीरोग हो जायँ।

रिचर्ड—तो क्या राज-परिवार की स्त्रियों और कुमारियों को इस प्रकार अपने-आपको जोखिम में डालना चाहिए, विशेषकर उस स्थान में जहाँ के निवासी अपनी बात के पक्के नहीं हैं।

टामस—नहीं महाराज, बात ऐसी नहीं है। स्वयं सुलतान सलादीन ने उनकी रक्षा का वचन दिया है।

रिचर्ड—'सचमुच ! मुझसे बड़ी भूल हुई। मैंने सलादीन के साथ अन्याय किया, इसका बदला मुझे देना होगा।' यह कहते हुए रिचर्ड ने अपना नङ्गा दाहिना हाथ झट बाहर किया और कष्ट के साथ उठकर बैठ गया। वह मुट्ठी बाँधकर अपना हाथ इस प्रकार झटकने लगा, मानो सलादीन की गर्दन पर वह अपनी तलवार चला रहा हो। टामस ने इस समय बड़े साहस से काम लिया। उसने बलपूर्वक रिचर्ड को फिर शय्या पर पहले की भाँति लिटा दिया और उसे कपड़े से ढाँक दिया।

यदि इस अवसर पर उसकी जगह आज कोई दूसरा आदमी रिचर्ड के साथ वैसा व्यवहार करता तो उसका कुशल न था।

रिचर्ड ने कहा—दाई के काम में तुम बड़े रूखे हो, यद्यपि तुम्हारा

व्यवहार मुझे पसन्द है। यदि तुम किसी बच्चे की देख-रेख करोगे तो बच्चे तुमसे डर ही जायँगे।

टामस—हमने अनेक मनुष्यों को अपने समय में भयभीत किया है। महाराज! मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी हम वैसा ही फिर करेंगे। ज्वर के चक्कर को, जिसमें वह सरलता से दूर हो जाय; क्या हमें धैर्य्य के साथ न सहना चाहिए?

रिचर्ड ने तिरस्कारपूर्वक कहा—ज्वर का चक्कर! तुम ठीक कहते हो कि यह ज्वर का चक्कर है। किंतु यह तो कहो कि अन्य ईसाई-राजाओं को क्या हुआ है? मैं बतलाता हूँ, सुनो—यह और कुछ नहीं, यह मारक आलस्यमात्र है। जिससे उन्होंने अपने परम श्रेष्ठ-व्रत का त्याग कर दिया है। और इसी से वे कीर्ति से विमुख हो बैठे हैं और ईश्वर से भी।

टामस ने कहा—ईश्वर के लिए, महाराज! इतना नाराज़ न हों। कोई सुन लेगा। वास्तव में आपकी बीमारी के कारण ही सब लोग कर्त्तव्य-च्युत हो गये हैं।

रिचर्ड—तुम मेरी चापलूसी करते हो। परन्तु तुम नहीं जानते कि मीठी-मीठी बातें कैसे कहनी जारी रक्खी जायँ जिससे भड़के हुए के जी को सन्तोष हो। टामस चुप था। इतने में ही रिचर्ड ने फिर तेज़ी से पूछा—परन्तु क्या राजाओं का यह दल एक आदमी के बीमार हो जाने से कर्त्तव्य-पथ से हट जा सकता है? क्यों नहीं सब लोग मिलकर शीघ्र ही अपना कोई नायक चुन लेते और उसकी अधीनता में कार्य का प्रारम्भ करते?

टामस—श्रीमान् धैर्य रक्खें। मैंने सुना है कि राजाओं ने आपस में ऐसे ही किसी विषय पर कुछ परामर्श किया है।

रिचर्ड—आह! क्या उन्होंने मुझे पहले से ही मरा हुआ समझ लिया है? लेकिन नहीं-नहीं वे ठीक समझते हैं। अच्छा तो उन्होंने ईसाई सेना का नायक किसको चुना है?

टामस—पद-मर्यादा तो फ्रांस के बादशाह की ओर सङ्केत करती है।

रिचर्ड—बहुत ठीक! अब समझ में आ गया। फ्रांस और नार्वे के बादशाह फ़िलिप! पूज्यपाद महाराज फ़िलिप! कितने मुँह-भर ये शब्द हैं! परन्तु एक आशंका है। वह यह कि कहीं ऐसा न हो कि वह जेरूसलेम की ओर न ले जाकर उलटा सबको पेरिस की ओर लौटा ले जाय!

टामस—सम्भव है, वे आस्ट्रिया के बड़े ड्यूक को चुनें।

रिचर्ड—क्या कहा! इसी से कि वे तुम्हारी तरह डील-डौल में भारी और हृष्ट-पुष्ट हैं। टामस! पर वे तुम्हारी तरह निर्भय नहीं हैं।

टामस कहता गया—टेम्पलर्स का ग्रैण्ड मास्टर बड़ा बहादुर, साहसी और चतुर है। उसके पास अपना कोई राज्य भी नहीं है, जिससे उसका ध्यान इस पवित्र भूमि की प्राप्ति से हट सके। कहिए महाराज! उसके सेनापति बनाये जाने के सम्बन्ध में आपकी क्या सम्मति है?

रिचर्ड—अरे वह! वह सैन्य-सञ्चालन जानता है और जब लड़ाई छिड़ जाती है, उस समय वह आगे जाकर लड़ता है। किन्तु, सर टामस! यदि पवित्र भूमि सलादीन से छीनकर उसे सिपुर्द कर दी जाय तो समझ लो कि ईसाई-धर्म की लुटिया डूब गई। सच तो यह है कि

वह सलादीन से भी बढ़कर भ्रष्ट है। वह मूर्ति-पूजक है, भूत-प्रेतों पर विश्वास करता है और टोना-जादू किया करता है। यही नहीं, गुप्त स्थानों में वह भयङ्कर पापों में निमग्न रहता है।

टामस—एक मनुष्य के विषय में और पूछना चाहता हूँ। माण्ट्सेरैट के मार्किस को आप कैसा समझते हैं? वह तो बड़ा बुद्धिमान्, कुलीन और शूरवीर है?

रिचर्ड—बुद्धिमान! धूर्त भले कह सकते हो। महिलाओं की महफ़िल में वह कुलीन भी हो सकता है।

टामस—मैं सारे माजरे को बखूबी जानता हूँ। जब तक महाराज रिचर्ड नीरोग नहीं हो जाते तब तक इस बात की आशा नहीं है कि हमें पवित्र भूमि का प्रधान गिरजा प्रार्थना करने को प्राप्त हो सकेगा।

इस बात को सुनते ही रिचर्ड खिलखिलाकर हँस पड़ा। बहुत दिनों के बाद आज वह पहले-पहल हँसा था। उसने कहा—टामस! मैं अपनी कमज़ोरी भली प्रकार जानता हूँ। अपनी महत्त्वाकांक्षा को भी अच्छी तरह जानता हूँ। निस्सन्देह इस ईसाई-छावनी में इँग्लैंड के रिचर्ड से श्रेष्ठ सामन्त मौजूद हैं। उनमें से किसी श्रेष्ठ व्यक्ति को सेनापतित्व के लिए चुन लेना चाहिए। परन्तु यदि मेरी रुग्णावस्था में, मेरी अनुपस्थिति में कोई ऐसा सामन्त निकल आये जो जेरूसलेम के गिरजे में क्रास का झण्डा फहराने में समर्थ हो सके तो उसको युद्ध के अन्त में मुझसे अवश्य लड़ना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता; क्योंकि उसके कार्य से मेरे यश को ठेस पहुँचेगी। लेकिन सुनो—दूर से युद्ध के बाजे कैसे सुनाई पड़ते हैं?

टामस—मेरी समझ में महाराज फ़िलिप के हैं।

उठकर बैठ जाने की चेष्टा करते हुए रिचर्ड ने कहा—टामस! तुम बहरे हो गये हो। तुम्हें अस्त्रों की झंकार नहीं सुनाई पड़ती? हे ईश्वर! तुर्क छावनी में आ गये! मैं उनका सिंहनाद सुन रहा हूँ! जाकर पता ले आओ कि छावनी में कौन बाहरी आया है? क्योंकि ये शब्द ईसाई-मण्डल के नहीं हैं।

आठवाँ परिच्छेद

टामस शाही खेमे से बाहर थोड़ी ही दूर गया था कि उसको अपने राजा का अनुमान सत्य प्रकट हुआ। वास्तव में वह बाजों का शब्द तुर्कों का ही था। उसने खेमों के एक छोर की ओर देखा कि तुर्क लोग सफ़ेद पगड़ी पहने और हाथ में भाले लिये हुए भिन्न-भिन्न देशों के ईसाई-सैनिकों के मध्य खड़े थे। यह दृश्य देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

जिस पहले व्यक्ति को टामस ने अपनी ओर बढ़ते देखा, उसे उसने उसकी अभिमानभरी चालों से स्पेनी या स्काट अनुमान किया। इसके बाद उसने अपने मन में भुनभुनाकर कहा—यह तो स्काट है। यह ल्यूपर्ड का है। मैंने इसे युद्ध-क्षेत्र में अपने एक देशवासी के लिए जी-जान से लड़ते देखा है।

टामस उसको एक ओर छोड़कर आगे निकल जाना चाहता था, परन्तु उस सामन्त ने उसके उद्देश को विफल कर दिया। वह

घूमकर उसके सामने आकर खड़ा हो गया और समुचित अभिवादन कर कहा—गिल्सलैंड के मेरे लार्ड ! मैं आपके पास कुछ कहने को भेजा गया हूँ।

टामस—हैं ! मुझसे ? अच्छा जो कुछ कहना है थोड़े में कह डालो। मैं महाराज के काम से जा रहा हूँ।

वह स्काट सर कैनेथ था। उसने कहा—जो बात मैं कहना चाहता हूँ उसका महाराज रिचर्ड से बहुत कुछ सम्बन्ध है। मुझे विश्वास है, मैं उनके आरोग्य हो जाने का ही संदेश लाया हूँ।

टामस ने कैनेथ को ऊपर से नीचे तक देखा और न जाने क्या संदेह कर कहा—जहाँ तक मेरा खयाल है श्रीमान चिकित्सक या डॉक्टर नहीं मालूम पड़ते। जिस प्रकार आप कहते हैं उसी से तो मैंने समझा था कि आप उनके लिए भारी धन-दौलत लाये हैं ?

यद्यपि कैनेथ टामस के उत्तर के ढङ्ग से मन ही मन अप्रसन्न हुआ, तथापि उसने शान्ति के साथ कहा—साफ़ बात यह है कि मैं अपने साथ एक मूर हकीम लाया हूँ। वह महाराज रिचर्ड को नीरोग कर देने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेता है।

टामस—मूर हकीम ! पर इस बात की ज़िम्मेदारी कौन लेगा कि हकीम दवा की जगह विष नहीं लाया है ?

कैनेथ—श्रीमान् ! उसका जीवन, उसका मस्तक, जिसे वह अर्पण करने को तैयार है, इस बात की गारंटी है।

टामस—ऐसे अनेक दृढ़ निश्चयवाले दुष्टों को मैं जानता हूँ, जो अपने प्राणों की परवा नहीं करते। ये हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जाते हैं !

सर कैनेथ—किन्तु आपको शायद यह नहीं मालूम है कि इस हकीम को सुलतान सलादीन ने स्वयं भेजा है। सुलतान इस हकीम को बहुत मानता और आदर-सत्कार करता है। सुलतान ने महाराज रिचर्ड के लिए फल आदि की सौगात भी भेजी है। और अपने संदेश-द्वारा महाराज के शीघ्र नीरोग हो जाने की अपनी मनोकामना प्रकट की है। और जिससे वे महाराज रिचर्ड से मिल सकें, इस सम्बन्ध में उनकी यह शर्त है कि महाराज रिचर्ड केवल अपनी नंगी तलवार लेकर आयें और उनके साथ एक लाख सवार हों। इतना तो आप भी जानते होंगे कि सुल्तान सलादीन एक आदरणीय शत्रु हैं। आप महाराज के विश्वसनीय सलाहकारों में हैं। क्या आप ऊँटों पर से सामान उतरवा लेने तथा विद्वान् हकीम का आदर-सत्कार करने की आज्ञा देने की कृपा करेंगे?

टामस—बड़े आश्चर्य की बात है! जब विश्वासघात के कारण सलादीन का एक परम बलवान् शत्रु इस संसार से उठ जायगा उस समय सलादीन की मर्य्यादा का क्या मूल्य होगा? इस बात की जिम्मेदारी कौन लेगा?

कैनेथ—मैं गारंटी देता हूँ। मैं तन-मन-धन से प्रस्तुत हूँ।

टामस—आश्चर्य है! उत्तर दक्षिण की गारंटी अपने ऊपर लेता है! एक तुर्क की मान-रक्षा के लिए एक स्काट प्रस्तुत होता है! श्रीमान्! क्या मैं यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूँ कि आपका इस मामले में क्या सम्बन्ध है?

कैनेथ—मैं तीर्थ-यात्रा में गया था, साथ ही मुझे इगंदी के साधु से कुछ संदेश भी कहना था।

टामस—क्या मैं उस संदेश तथा उक्त साधु के उत्तर को जान सकता हूँ ?

स्काट—क्षमा करिए, मैं असमर्थ हूँ।

टामस ने अभिमान के साथ कहा—इँग्लैंड के गुप्त सलाहकारों में मेरी गणना है।

कैनेथ—मैं इँग्लैंड का प्रजाजन नहीं हूँ। मुझको तो ईसाई-सेना के राजाओं और प्रधान नेताओं की सभा ने भेजा था। और मैं ऐसों का ही दूतत्त्व भी करता हूँ।

टामस—ऐसे हो ? भले ही तुम राजों-महाराजों के दूत हो; परन्तु यह अच्छी तरह जान लो कि विना गिल्सलैंड की आज्ञा के कोई भी हकीम रिचर्ड की रोग-शय्या के पास न जा सकेगा।

यह कहकर वह वहाँ से गुमान के साथ मुड़ने को हुआ कि कैनेथ उसके ज़रा और पास आकर ठीक सामने खड़ा हो गया और शान्त स्वर परन्तु अभिमान के साथ पूछा—क्या गिल्सलैंड का लार्ड मुझे एक सज्जन और नाइट समझता है या नहीं।

व्यङ्ग से टामस ने कहा—प्रत्येक स्काट जन्म से ही वैसा पैदा होता है। परन्तु अपने दुर्व्यवहार को समझ तथा स्काट के चेहरे का रङ्ग लाल पड़ते देख उसने फिर कहा—किसी अच्छे नाइट को तुम पर संदेह करना पाप है। और जिसने तुमको समरभूमि में वीरतापूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करते अपनी आँखों देखा है, वह तो कदापि ऐसा नहीं कर सकता।

पिछली बात से सन्तुष्ट होकर कैनेथ ने कहा—अच्छा तो फिर मैं

तुम्हारे सामने शपथ खाकर कहता हूँ कि जैसे मैं एक सच्चा स्काट हूँ, वैसे ही अपनी बात का पक्का हूँ। मैं अपने पवित्र क्रास को छूकर कहता हूँ, मेरी यही इच्छा है कि रिचर्ड नीरोग हो जायँ। इसीसे मैं सिफ़ारिश करता हूँ कि इस मुसलमान हकीम की दवा की जाय। इसके लिए मैं बार-बार अनुरोध करता हूँ।

टामस ने इस बार बड़ी आत्मीयता के साथ उत्तर दिया, उसने कहा—"मैं मानता हूँ कि आपको इसका पूरा विश्वास है। पर यह तो बताओ कि जहाँ लोग विष देने की कला में रोटी बनाने की कला की तरह निपुण हैं, वहाँ एक अज्ञात हकीम से उस व्यक्ति की दवा करवानी, जो ईसाई-मंडल के लिए है, मेरे लिए कहाँ तक उचित है।"

कैनेथ—श्रीमान्! मेरा उत्तर इतना ही है कि मेरा एकमात्र सरदार, जो कई दिनों से उसी ज्वर से पीड़ित था, जिससे श्रीमान् महाराज रिचर्ड ग्रसित हैं, इस हकीम की चिकित्सा की बदौलत ही अच्छा हुआ है। अभी-अभी कोई दो ही घंटे बीते होंगे कि उसने दवा दी थी। शीघ्र ही उसे नींद आगई और अब वह चैन से सो रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह हकीम महाराज रिचर्ड को शीघ्र ही नीरोग कर देगा। इसमें वैसी ही शक्ति है। स्वयं सुलतान सलादीन ने भी अपने संदेश में इसके गुण की प्रशंसा की होगी। सलादीन सच्चा और बात का पक्का है। रही बात अन्तिम सफलता की, सो यदि हकीम की दवा काम कर गई तो उसके लिए इनाम है और यदि वह अपने प्रयत्न में असफल हुआ तो उसको उचित दण्ड दिया जायगा। इसके सिवा और क्या किया जा सकता है।

टामस सिर नीचा किये हुए कैनेथ की बातें ध्यान से सुन रहा था, मानो एक ओर उसे संशय हो रहा था, तो दूसरी ओर उसकी बात से आनाकानी कर देने को भी जी नहीं चाहता था। अंत में कैनेथ की ओर देखकर उसने कहा—क्या मैं आपके सरदार को देख सकता हूँ ?

पहले तो कैनेथ हिचकिचाया और उसके चेहरे का रङ्ग भी बदल गया, किन्तु अन्त में उसने कहा—"बड़ी ख़ुशी से ! लेकिन यह अभी से समझ लीजिएगा कि स्काटलैंड के रईस और नाइट लोग सादे ढङ्ग से रहते हैं। रूखा खाते हैं और मोटा पहनते हैं। उन्हें ठाट-बाट नहीं पसंद है। यह उनके पड़ोसी दक्षिणवालों के लिए ही शोभाजनक है। गिल्सलैंड के लार्ड महोदय ! मैं साधारण ढङ्ग से रहता हूँ। मेरा ग़रीबख़ाना भी आपको नहीं जँचेगा।" यह कहकर कैनेथ टामस को अपने खेमे की ओर अनिच्छा के साथ ले चला। खेमा क्या था, टहनियों की बनी और ताड़ के पत्तों से छाई एक झोपड़ी भर थी।

नवाँ परिच्छेद

कैनेथ की कुटी में दो चारपाइयाँ पड़ी हुई थीं। एक खाली थी, थोड़े से उस पर पत्ते और पत्तों पर एक मृगचर्म बिछा था। उसके पास कवच के कुछ भाग और सिरहाने चाँदी का क्रास रक्खा था। इससे जान पड़ता था कि यह कैनेथ की ही शय्या है। दूसरी चारपाई पर उसका बीमार सरदार लेटा हुआ था, जो हट्टा-कट्टा और कठोर रूप-रेखा का था। वह आधी जवानी पार कर चुका था—सूरत-शकल से यही ज्ञात हुआ। कैनेथ

की अपेक्षा इसकी चारपाई अधिक मुलायम बिछाई हुई थी। जो उत्तम कपड़े वह ओढ़े हुए थे वे सब कैनेथ के थे, जिन्हें उसने रोगी को आराम पहुँचाने के लिए ओढ़ाया होगा। चारपाई के पास ही एक कुत्ता बैठा हुआ था। जैसे ही कैनेथ और टामस ने कमरे में प्रवेश किया, वैसे ही वह कुत्ता ज़ोर से ग़ुर्रा उठा; किन्तु शीघ्र ही अपने मालिक को देखकर वह पूँछ हिलाते हुए शान्त हो गया।

चारपाई के पास ही दूसरी ओर एक गद्दे पर मुसलमान हकीम भी बैठा हुआ था। कमरे के मंद प्रकाश के कारण इस हकीम का सारा शरीर साफ़-साफ़ नहीं दिखाई देता था। उसके छाती तक लटकती लम्बी काली दाढ़ी थी। सिर पर वह तातारी ऊनी टोपी दिये था। उसकी तुर्की पोशाक काले रंग की थी। उस मन्द प्रकाश में उसकी दोनों आँखें चमचमा रही थीं। कमरे में शान्ति छाई हुई थी। सिवा मरीज़ के श्वास-प्रश्वास के शब्द के और कोई शब्द नहीं सुनाई पड़ता था।

सर कैनेथ ने कहा—इसकी छः रातें जागते ही बीती हैं। इसके नौकर ने मुझसे यही कहा है।

बड़े प्रेम-भाव के साथ कैनेथ का हाथ दाबकर टामस ने कहा—तुम्हारे सरदार को अच्छा खाना नहीं मिलता है और न उसकी अच्छी देखभाल ही होती है।

टामस ने अपनी बात ऊँचे स्वर में कही थी। इससे मरीज़ की नींद टूट गई। हकीम मरीज़ के बिछौने के पास ही बैठा हुआ था और अपने कोच पर मरीज़ का हाथ रक्खे चुपचाप उसकी नाड़ी देख रहा था। टामस को ज़ोर से बोलते सुनकर वह चुपके से उठ खड़ा हुआ और

उन दोनों सामन्तों के पास आकर उनसे चुप रहने का अनुरोध किया। फिर वह उनके हाथ पकड़कर धीरे से कुटी के बाहर निकाल ले गया।

हकीम ने उनसे कहा—ईसा और मेरी के नाम पर जिनका मैं भी आदर करता हूँ, आप लोग मेरी दी गई दवा के असर में विघ्न न डालें। अगर इस समय जाग जायगा तो यह मर जायगा या पागल हो जायगा। परन्तु सन्ध्या हो जाने दीजिए, शाम की निमाज़ के वक़्त तक यदि यह इसी प्रकार सोता रहा तो मैं वादा करता हूँ कि यही फ़्रेंक सैनिक उस समय तक आप लोगों से बातचीत करने के क़ाबिल हो जायगा। तब आप इससे बातचीत कर सकेंगे।

उन दोनों सामन्तों ने हकीम की आज्ञा शिरोधार्य की। कुटी के दरवाज़े पर जा खड़े हुए। कुछ देर के बाद टामस अपने स्थान को लौट गया।

रोगी बादशाह ने जब टामस से सारी कथा सुन ली, तब उसने कहा—टामस! यह तो एक आश्चर्य-जनक कथा है! क्या वह स्काट लम्बे क़द का है? क्या वह सच्चा आदमी है?

टामस—मैं नहीं कह सकता। सच्चे और झूठे दोनों प्रकार के स्काट मुझे मिले हैं। परन्तु इसकी धज तो एक सच्चे आदमी ही जैसी है। धूर्त हो और चाहे और कुछ; पर इतना मैं कह सकता हूँ कि यह एक सच्चा आदमी है।

रिचर्ड—और नाइट के रूप में वह तुम्हें कैसा जँचा?

टामस—श्रीमान् को इसका ज्ञान मुझसे कहीं अधिक है। आपने भी इसकी कारगुज़ारी देखी है। लोग इसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हैं।

रिचर्ड—टामस ! ठीक है, हमने स्वयं अपनी आँखों उसकी वीरता देखी है। जिस ढङ्ग से उसने अपने कर्तव्य का पालन किया है, उसकी ओर मेरा ध्यान गया था। परन्तु इस विद्वान् विधर्मी से तुम कहते हो कि उसकी मुलाक़ात मरुभूमि में हुई है ?

टामस—"श्रीमान् ! स्काट ने कहा है कि मैं इंगादी के साधु के पास भेजा गया था। उस साधु के सम्बन्ध में...।"

रिचर्ड ने उठकर कहा—नरक में जाय। किसने भेजा था और किस लिए भेजा था ? जबकि हमारी महारानी मेरे नीरोग होने के लिए वहाँ की यात्रा में गई हैं तब इसे वहाँ भेजने का किसने साहस किया !

टामस—ईसाई सैनिकों की समिति ने श्रीमान् ! किस काम के लिए भेजा गया था, यह उसने मुझे नहीं बताया। जहाँ तक मैं समझता हूँ छावनी में किसी को इस बात का पता नहीं है कि महारानी तीर्थयात्रा में गई हैं।

रिचर्ड—ख़ैर। यह बात बाद को देखी जायगी। अच्छा तो इस विधर्मी हकीम से कैनेथ की मुलाक़ात इंगादी की गुफा में हुई है ?

टामस—नहीं महाराज ! ऐसा नहीं हुआ। उस स्थान के समीप इसकी मुलाक़ात एक तुर्की अमीर से पहले हुई थी। उन दोनों के बीच युद्ध हुआ, जिसके बाद दोनों एक दूसरे के बड़े मित्र हो गये। फिर वे साथ-साथ इंगादी की गुफा को गये।

इतना कहकर टामस चुप हो गया। धारा-प्रवाह से बातचीत करने की योग्यता उसमें नहीं थी। रिचर्ड ने अकुलाकर पूछा—किन्तु क्या उनकी हकीम से वहीं भेंट हुई थी ?

टामस—"नहीं महाराज, जब तुर्की अमीर ने श्रीमान् की बीमारी का हाल कैनेथ से सुना तब वह बड़ा चिन्तित हुआ। उसने कैनेथ से कहा कि यह हाल सुनकर सुलतान सलादीन अपने हकीम को भेजेंगे और उसकी प्रशंसा में चिट्ठी भी भेजेंगे। तदनुसार यथासमय हकीम गुफा को आ गया। हकीम राजाओं का ठाट-बाट बनाकर आया है! उसके साथ नगाड़े आदि बाजे हैं। उसकी रक्षा के लिए सवार और पैदलों की सेना भी है। सलादीन ने अपना एक पत्र भी दिया है।

यह कहकर टामस ने रिचर्ड को सलादीन का पत्र दे दिया। उसमें हकीम की प्रशंसा लिखी थी।

रिचर्ड—हाँ, मैं सलादीन के हकीम से ज़रूर मुलाक़ात करूँगा। मैं उसकी दवा भी करूँगा। सलादीन ने मेरे लिए जो कृपा प्रदर्शित की है उसका मैं बदला चुकाऊँगा। मैं रणभूमि में ही उससे मिलूँगा जैसा कि उसने लिखा है। मैं उसको यह कहने का कभी मौक़ा नहीं दे सकता कि रिचर्ड अकृतज्ञ है। मैं अपने इसी फरसे के वार से उसे ज़मीन दिखाऊँगा। मैं ऐसे वारों से उसको ईसाई बनाऊँगा, जैसे आज तक उस पर किये न गये होंगे। मेरी तलवार के आगे उसे अपनी भूलें याद आ जायँगी। मैं उसे युद्ध-भूमि में अपने शिरस्त्राण से बपतिस्मा दूँगा, यद्यपि संस्कार के जल में हम दोनों का रक्त मिला होगा। देरी किस बात की? जाकर हकीम को शीघ्र बुला लाओ।

टामस—महाराज, सलादीन विधर्मी है, वह आपका प्रबल शत्रु है।

रिचर्ड ने उत्तर दिया—यही तो कारण है कि वह मेरी सेवा करना चाहता है, नहीं तो यह ज्वर इन दो बादशाहों के बीच के झगड़े का

अन्त कर देगा। वह मुझे उसी प्रकार प्यार करता है, जिस प्रकार मैं उसे प्यार करता हूं—जैसे दो श्रेष्ठ शत्रु एक दूसरे का प्रेम करते हैं। अतएव उसकी नीयत पर सन्देह करना पाप होगा।

टामस—तथापि हकीम की इन दवाइयों का प्रभाव पहले कैनेथ के स्कायर के ऊपर देख लिया जाय तो अच्छा होगा। हकीम की जाँच उससे हो जायगी। मैं ईसाई-मण्डल की दुःखरूपी नौका को जल्दी में कोई कार्य करके जोखिम में नहीं पड़ने दूँगा।

तिरस्कार-सा करते हुए रिचर्ड ने कहा—इसके पहले मैंने तुम्हें प्राण जाने का भय करते कभी नहीं देखा।

टामस—मुझे प्राणों की चिन्ता आज भी तो नहीं है। चिन्ता केवल इस बात की है कि श्रीमान् का जीवन संकट में न पड़े और उसी के साथ-साथ मेरा भी।

रिचर्ड—जब तुम्हें इतना अविश्वास है तो जाओ और हकीम की दवा का प्रभाव देखकर अपना समाधान कर लो। मैं तो यही समझता हूँ कि या तो हकीम की दवा से मैं चंगा हो जाऊँगा या मर जाऊँगा। इस तरह शय्या का सेवन करने से तो मैं ऊब गया हूँ, ऐसे जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी है। जिस समय चारों ओर नगाड़े बज रहे हों, रणभेरियाँ बज रही हों, घोड़े दौड़ रहे हों, उस समय मैं इस तरह शय्या-सेवन कैसे कर सकता हूँ?

टामस तुरन्त वहाँ से बाहर चला गया। उसने सबसे पहले किसी पादरी से अपने मन की बात कह देना उचित समझा। क्योंकि एक विधर्मी की दवा कराना उसे ठीक नहीं जँचता था। इस बात की चिन्ता से उसका मन व्याकुल हो रहा था।

दसवाँ परिच्छेद

टामस ने टायर के बड़े पादरी के पास जाकर अपना सन्देह प्रकट किया।

इस पादरी को रिचर्ड भी बहुत आदर की दृष्टि से देखता था। पादरी ने उसके सारे सन्देह बड़े ध्यान के साथ सुने।

इसके बाद उसने गम्भीरता के साथ कहा—आवश्यकता आ पड़ने पर लोग पतित से पतित की सहायता लेते हैं। परन्तु आओ, पहले यह तो देखें कि हकीम की दवा से उस स्कायर को फ़ायदा हुआ है या नहीं। उसके बाद विचार करेंगे कि महाराज रिचर्ड की उससे दवा कराई जाय या न कराई जाय।

ज्यों ही ये लोग कैनेथ की कुटी के सामने जाकर खड़े हो गये त्योंही पादरी ने टामस से कहा—श्रीमन्, ये स्काट नाइट अपने आदमियों का उतना भी आदर नहीं करते हैं जितना कि हम लोग अपने कुत्तों का करते हैं। इस नाइट को ही देखो, कैसी बुरी जगह में इसने अपने स्कायर को रक्खा है! तुम अपने पड़ोसी स्काटों के सम्बन्ध में क्या कहते हो? उस मालिक को अच्छा ही कहा जायगा जब वह स्वयं भी वैसी ही बुरी जगह में रहता है, जैसी बुरी जगह में वह अपने नौकर को रखता है—यह कहकर उसने कुटी में प्रवेश किया।

टामस के पीछे-पीछे पादरी भी भीतर चला गया। उस समय कुटी में कैनेथ नहीं था। हाँ, वह मूर हकीम अपनी जगह पर चुपचाप बैठा था। रोगी गहरी नींद में सो रहा था। हकीम उसकी नाड़ी

बार बार देखता जाता था। दो-तीन मिनट तक पादरी चुपचाप उसके सामने ऐसे ढङ्ग से खड़ा रहा, मानो उसे आशा थी कि उक्त हकीम बड़े आदर से उसका अभिवादन करेगा। परन्तु हकीम ने पादरी की ओर ध्यान तक नहीं दिया। हाँ, एक बार उसने पादरी को ज़रा-सा देख ज़रूर लिया था। अन्त में जब पादरी ने वहाँ की भाषा में उसका अभिवादन किया तब हकीम ने अपने देश की प्रथा के अनुसार "सलाम-अलै-कुम" कहकर केवल जवाब भर दे दिया।

इस उपेक्षापूर्ण स्वागत से लज्जित होकर पादरी ने कहा—क्या तुम चिकित्सक (हकीम) हो? मैं तुमसे तुम्हारी चिकित्सा के बारे में कुछ बातचीत करना चाहता हूँ।

हकीम बोला, "यदि तुम चिकित्सा के संबंध में कुछ जानते हो, तो तुम्हें मालूम होगा कि चिकित्सक लोग अपने मरीज़ों के सामने उनके कमरे में कोई सलाह या वाद-विवाद नहीं करते।" इसके बाद कुटी के भीतरी भाग से कुत्ते के ग़ुर्राने की धीमी आवाज़ सुनकर उसने फिर कहा—सुनो, कुत्ता तक इस सम्बन्ध में तुम्हें शिक्षा दे सकता है। कुत्ता भी जानता है कि मरीज़ के कमरे में यदि ग़ुर्राना आवश्यक हो जाय तो धीमे स्वर में ग़ुर्रा ले। वह उठ खड़ा हुआ और यह कहकर कि अगर तुम्हें मुझसे बातें करनी हैं तो यहाँ बाहर आकर बातें कर लो, वह कुटी के बाहर जाने को चल पड़ा।

यद्यपि हकीम की पोशाक और शरीर अँगरेज़ भूस्वामी और पादरी की अपेक्षा साधारण और छोटा था, तथापि उसके ढङ्ग तथा हाव-भाव में ऐसी कुछ विलक्षणता थी कि बिशप उसके रूखे व्यवहार के प्रति

अपनी अप्रसन्नता न प्रकट कर सका। तो भी पहले की तरह उसने फिर बड़प्पन के साथ हकीम से पूछा कि चिकित्सा-सम्बन्धी निपुणता का तुम्हारे पास क्या प्रमाण है।

हकीम—इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है कि स्वयं सुलतान सलादीन ने मेरी प्रशंसा की है। और यह प्रसिद्ध ही है कि सलादीन शत्रु-मित्र किसी से कभी विश्वासघात नहीं करता, अब और कौन-सा प्रमाण तुम्हें चाहिए?

टामस—मैं प्रत्यक्ष प्रमाण चाहता हूँ। इसके बिना तुम महाराज रिचर्ड के बिछौने तक नहीं पहुँच सकते।

हकीम—चिकित्सक की प्रशंसा तो इसी में है कि मरीज़ अच्छा हो जाय। इस सर्जंट को देखो। जिस ज्वर ने तुम्हारी छावनी के सैनिकों को अस्थिचर्मावशिष्ट कर दिया है उसने इसका भी ख़ून सुखा डाला है। इसकी उँगलियों और हाथों को देखो। सारस के पंजों और टाँगों की तरह हो गये हैं। आज सुबह को इसकी मृत्यु हो जाती। परन्तु इसके पलंग के एक ओर स्वयं यमदूत होता तो भी मेरे इसके पलंग के एक ओर होने से इसके प्राण वह कदापि न ले जा सकता। परन्तु ईश्वर के लिए प्रश्न पर प्रश्न करके मेरा ध्यान भङ्ग न करो। थोड़ी देर और ठहरो। मौक़ा आने दो। तब देखोगे कि मेरी दवा ने कैसा चमत्कार किया।

इसके बाद हकीम आकाश की ओर देखने लगा। जब नमाज़ पढ़ने का ठीक समय आ गया तब वह मक्के की ओर मुँह करके नमाज़ पढ़ने लगा। नमाज़ पढ़ चुकने पर वह कुटी में जाकर मरीज़ की चार-

पाई के पास खड़ा हो गया। वहाँ उसने चाँदी की एक सन्दूक़ची से स्पञ्ज का एक टुकड़ा निकाला और उसे एक प्रकार के अर्क़ में डुबोकर उसने मरीज़ की नाक पर रख दिया। उसके रखते ही मरीज़ ने छींककर आँखें खोल दीं और वह चकित होकर अपने चारों ओर देखने लगा।

टामस ने मरीज़ से पूछा—क्या तुम हम लोगों को पहचानते हो?

स्कायर ने धीरे से उत्तर दिया—श्रीमान्, अच्छी तरह नहीं पहचानता। मैं बड़ी देर से सो रहा हूँ। सोते समय मुझे स्वप्न ही दिखाई देते रहे। तथापि तुम्हारे लाल क्रास को देखकर मैं कह सकता हूँ कि तुम कोई अँगरेज़ ज़मींदार हो और यह कोई पादरी है; जिसका आशीर्वाद मुझ जैसा पापी चाहता है।

अपने क्रास से सङ्केत करके पादरी ने बिना मरीज़ के नज़दीक गये हुए कहा—तुमको मेरा आशीर्वाद मिलेगा।

हकीम ने कहा—अब तुम अपनी आँखों से देख सकते हो। बुखार उतर गया है। मरीज़ शान्ति के साथ होश करके बात-चीत करता है। उसकी नाड़ी तुम्हारी नाड़ी की तरह चल रही है। तुम स्वयं उसकी परीक्षा कर सकते हो।

पादरी ने नाड़ी देखने से इनकार किया। किन्तु टामस परीक्षा लेने को पहले से ही दृढ़ था, अतएव उसने नाड़ी देखी। अन्त में उसे सन्तोष हो गया कि बुखार उतर गया है।

टामस ने पादरी की ओर देखकर कहा—बड़े आश्चर्य की बात

है। रोगी सचमुच अच्छा हो गया है। मैं तो इसे शीघ्र ही महाराज रिचर्ड के पास ले जाना चाहता हूँ, आपकी क्या राय है?

हकीम—ठहरो। पहले एक रोगी को चंगा कर लेने दो, तब दूसरे पर हाथ लगाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ तब चलूँगा जब इसे इस अमृतरूपी दवा की दूसरी मात्रा दे लूँगा।

यह कहकर हकीम ने चाँदी का एक प्याला निकाला, उसने उसमें पानी भरा। इसके बाद उसने एक रेशमी थैली निकाली। उसमें न जाने क्या चीज़ें थीं। उसने उस थैली को प्याले में डाल दिया। पांच मिनट तक प्याला वैसे ही रक्खा रहा। फिर उसने प्याले को मरीज़ के मुँह के पास ले जाकर कहा—इसे पी लो और सो जाओ। जब तुम उठोगे तब तुम्हारा सारा रोग-बुखार जाता रहेगा।

इस पर पादरी ने कहा—और तुम इसी साधारण दवा से एक राजा को रोग-मुक्त करने का दावा करते हो?

हकीम—तुम देख सकते हो, मैंने एक निर्धन आदमी को नीरोग किया है। क्या फ़िरङ्गिस्तान के महाराजे अपने प्रजाजनों में हीन से हीन की अपेक्षा किसी दूसरी मिट्टी के बने हैं?

टामस ने कहा—आओ अब हम हकीम को महाराज की सेवा में ले चलें। उसने दिखला दिया है कि उसके पास ऐसी कोई तदबीर है जिससे वह महाराज को नीरोग कर सकता है। यदि वह ऐसा न कर सकेगा तो मैं भी उसे दवा के परे पहुँचा दूँगा।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

टामस के खेमे से बाहर जाते ही रिचर्ड उसके लिए बहुत व्याकुल हो गया, ज्वर की व्याकुलता तो थी ही। उसने अपने मन में सोचा कि हकीम की चिकित्सा का नतीजा शीघ्र नहीं मालूम हो सकेगा, अतएव उसने अपना मन बहलाने के लिए सर कैनेथ को इसलिए बुला भेजा कि उससे छावनी से बाहर जाने का कारण और हकीम से भेंट होने का पूरा समाचार जान सके।

सर कैनेथ आदेशानुसार राजा रिचर्ड के सामने ऐसे ढङ्ग से आ उपस्थित हुआ, मानो वह राजाओं से मिलने-जुलने का अभ्यस्त हो। रिचर्ड उससे परिचित नहीं था। यद्यपि उसके दरबार में अपनी पद-मर्यादा के कारण उसे समय समय पर जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। कैनेथ राजा के पलङ्ग के पास जाकर अपना घुटना क्षण भर के लिए झुकाने के बाद रिचर्ड के सामने खड़ा हो गया। रिचर्ड कैनेथ को ध्यान से देखने लगा। उससे कहा—तुम्हीं ल्यूपाल्ड के कैनेथ हो। अच्छा यह तो बताओ कि तुम्हें नाइट की पदवी किसने दी थी?

कैनेथ—महाराज, यह पदवी मुझे स्काटलैंड के राजा विलियम से मिली है।

रिचर्ड—कैनेथ! मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि लालसागर के समीपवर्ती प्रदेश में भ्रमण करने की आज्ञा तुम्हें किसने दी थी।

कैनेथ—ईसाई राजाओं की युद्ध-समिति ने ही मुझे आज्ञा दी थी।

रिचर्ड—मैं भी तो युद्ध-समिति का सदस्य हूँ। परन्तु मेरी जानकारी

के बिना—मुझे बिना बतलाये—किसने इस प्रकार की आज्ञा देने का साहस किया।

कैनेथ—यह मेरा काम नहीं था कि ऐसी बातों की जाँच-पड़ताल मैं करूँ। मैं ईसाई धर्म-युद्ध का एक सैनिक हूँ। मुझे अभिमान है कि मुझे श्रीमान् के झंडे के नीचे लड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। तो भी मैंने भी पवित्र भूमि की पुनर्प्राप्ति तथा ईसाई-धर्म के अधिकारों की रक्षा करने का व्रत ग्रहण किया है। ऐसी दशा में बिना कुछ कहे-सुने उन राजाओं की आज्ञा का पालन करना मेरा मुख्य कर्तव्य है जो इस धर्म-युद्ध का संचालन कर रहे हैं। मुझे खेद है कि अस्वस्थ रहने के कारण श्रीमान् उस युद्ध-समिति में सम्मिलित न हो सके जिसकी कार्यवाही में श्रीमान् का पूरा हाथ रहता है तथापि सैनिक के रूप में मुझे उनकी आज्ञा का पालन करना धर्म है जिसको आदेश देने का अधिकार प्राप्त है।

रिचर्ड—तुम्हारा कहना सच है। इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है! दोष सरासर उन लोगों का है जिन्होंने बिना मुझे बतलाये यह आज्ञा तुमको दी। मुझको अच्छा होने दो, फिर देखना मैं इनके साथ किस प्रकार पेश आता हूँ। हाँ, यह पूछना मैं भूल गया कि उन लोगों ने तुमको किस प्रयोजन के लिए भेजा था?

कैनेथ—महाराज, धृष्टता क्षमा हो। इस संबंध में श्रीमान् उन्हीं से पूछ-ताछ करें जिन्होंने मुझे भेजा था। वे ही मेरे सन्देश का कारण बता देंगे। मैं तो उसका बाह्यरूप तथा मतलब भर बतला सकता हूँ।

ज़रा-सी बात में चिड़चिड़ा उठनेवाले रिचर्ड ने कहा—बातें मत बनाओ सर कैनेथ! ऐसा करने में तुम्हारी खैर नहीं।

कैनेथ ने दृढ़ता के साथ कहा—श्रीमान् ने मेरी खैर की बाबत जो कहा सो मैंने उसे तभी एक तुच्छ-सी वस्तु समझा था जब मैंने इस काम का बीड़ा उठाया था। शारीरिक कुशलता की चिन्ता के स्थान पर आत्मिक चिन्ता की ओर मैं अधिक ध्यान देता हूँ।

रिचर्ड—तुम बड़े बहादुर हो! सर कैनेथ सुनो, मैं स्काट लोगों को बड़े स्नेह की दृष्टि से देखता हूँ। वे यद्यपि दृढ़ और हठी होते हैं, तथापि बड़े परिश्रमी होते हैं। वे अपनी बात के धनी होते हैं। हाँ, कभी-कभी राज्य की भलाई के विचार से वे गुप्त बातों को प्रकट कर देते हैं। मैंने तुम्हारे देश के हित के कार्य किये हैं, अतएव मुझे तुम्हारे प्रेम का हक़ है। तुम्हें जानना चाहिए कि मैं युद्ध-समिति का प्रधान सदस्य हूँ। युद्ध-समिति के सदस्यों के सलाह-मशविरों की बात जानने का मुझे अधिकार है। इसलिए मेरे साथ न्याय करो और सारी बातें मुझे बतला दो। उनके सम्बन्ध में तुम्हारे अतिरिक्त अधिक सत्य बातें मुझे और दूसरे से नहीं ज्ञात होंगी।

कैनेथ—आपके इस अनुरोध के आगे मेरे लिए कोई बात छिपाना उचित नहीं है। अतएव मैं अपनी यात्रा का उद्देश बताता हूँ। सुनिए। मेरा अभिप्राय इंगादी के साधु के द्वारा जिसका आदर और सम्मान स्वयं सलादीन करता है, यह प्रस्ताव करना था—

रिचर्ड ने शीघ्रता से बात काटकर कहा—सलादीन से अस्थायी सन्धि के जारी रखने का ही अनुरोध था न!

कैनेथ—नहीं महाराज! स्थायी शान्ति स्थापित करने और अपनी सेनाओं को पैलेस्टाइन से हटाने का—

चकित होकर रिचर्ड ने कहा—"मैं स्वप्न में भी यह खयाल नहीं करता था कि ये लोग अपने आप इतना अधिक गिर जायँगे। कैनेथ, तुम्हीं बतलाओ कि जब तुमने यह संदेश ले जाने का भार ग्रहण किया होगा उस समय तुम्हें वह काम कैसा जँचा होगा!

कैनेथ—महाराज, बड़ी ख़ुशी के साथ। क्योंकि जब मैंने देखा कि हमारे श्रेष्ठ नायक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, जिसके नायकत्व में ही मुझे विजय की आशा थी, और उसके स्थान को ग्रहणकर विजय प्राप्त करा देनेवाला कोई भी नहीं दिखाई दिया तब ऐसी दशा में पराजय से बचने के लिए मैंने सन्धि के प्रस्ताव को उपस्थित करने में ही कल्याण समझा।

रिचर्ड ने अपने हृदय की वेदना दबाकर कहा—अच्छा तो इस सन्धि में कौन-सी शर्तें की जाने को थीं?

कैनेथ—महाराज, सन्धि की शर्तें मुझे नहीं बताई गई थीं। मैंने उनका बन्द और मुहर किया हुआ लिफ़ाफ़ा साधु को दे दिया था।

रिचर्ड—जितनी बातें तुमने मुझे बतलाई हैं उनसे अधिक मैं तुमसे जानना चाहता हूँ। अच्छा, क्या तुमने इंगादी में हमारी महारानी को देखा था।

कैनेथ—जहाँ तक मुझे याद आता है, मैंने नहीं देखा।

रिचर्ड ने कर्कश स्वर में कहा—मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या तुम इंगादी के कारमेलाइट ननों के गिरजे में नहीं मौजूद थे और वहाँ इँग्लैंड की महारानी बेरेंगेरिया और उनके साथ में गई हुई रनवास की अन्य स्त्रियों को जो तीर्थयात्रा के लिए वहाँ गई थीं, नहीं देखा?

कैनेथ—महाराज ! मैं सच ही कहूँगा। साधु मुझे ज़मीन के नीचे एक गिरजे में ले गया था। वहाँ मैंने स्त्रियों के एक समूह को एक अत्यन्त पवित्र और प्राचीन वस्तु की अभ्यर्थना में गाना गाते हुए सुना था। मैंने उनके मुँह नहीं देखे, अतः मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि उनमें इँग्लैंड की महारानी भी थीं।

रिचर्ड—तो क्या उन स्त्रियों में से एक भी तुम्हारे पहचान की नहीं थी ?

कैनेथ इस बात को सुनकर चुपचाप खड़ा रहा। रिचर्ड ने हाथ के ठिहुने के बल होकर पूछा—मैं तुमको एक सज्जन और नाइट समझकर पूछता हूँ—तुम्हारे उत्तर से जानूँगा कि तुम उन दोनों पदों का कैसा सम्मान करते हो। क्या तुम उन स्त्रियों में से किसी को जानते थे या नहीं ?

बिना हिचकिचाहट के कैनेथ ने कहा—मैं अन्दाज़ा लगा सकता था।

रिचर्ड ने क्रुद्ध होकर कहा—और मैं भी अन्दाज़ कर सकता हूँ। किन्तु इतना ही काफ़ी है। कैनेथ तुम नाइट हो। शेर के पंजा से ख़ून का लोभ न करना। सुनते हो ! चाँद पर मोहित होना पागलपन है। किसी ऊँचे बुर्ज से उस तक पहुँचने के लिए उछलना अपने हाथ अपने प्राण देना है।

इतने में बाहर कुछ आवाज़ आई। रिचर्ड जल्दी में ही अपने स्वाभाविक भाव में आ गया। उसने कहा—बस, जाओ। टामस के पास जाओ और उसे हकीम के सहित मेरे पास भेज दो।

कैनेथ चला गया। इसके बाद ही प्रतिहार ने खबर दी कि युद्ध-समिति के प्रतिनिधि महाराज से मिलना चाहते हैं।

रिचर्ड—अच्छा! वे मानते हैं कि मैं अभी जीवित हूँ। कौन-कौन से लोग आये हैं।

प्रतिहार—टेम्पलर्स के ग्रेंड मास्टर और मान्टसेरैट के मार्किस आये हैं।

बारहवाँ परिच्छेद

टेम्पलर्स का ग्रेंड मास्टर एक लम्बा, पतला और वृद्ध देखा हुआ आदमी था। उसकी आँखें मन्द, पर तीक्ष्ण थीं। वह सफ़ेद कपड़े पहने था और हाथ में अपनी पदवी का सूचक दण्ड लिये हुए था। और मान्टसेरैट का मार्किस अपने साथी पादड़ी योद्धा की अपेक्षा ऊपर से अधिक सुन्दर दिखाई देता था। वह मध्य अवस्था का रहा होगा। दोनों तरफ़ से अभिवादन हो जाने के पश्चात् मार्किस ने अपने और अपने साथी के आने का अभिप्राय प्रकट किया और कहा कि हम श्रीमान् के स्वास्थ्य का हाल जानने के लिए आये हैं।

इस पर रिचर्ड ने उत्तर दिया—हम भली प्रकार जानते हैं कि कौंसिल के राजाओं को हमारे स्वास्थ्य के सम्बन्ध में बहुत चिन्ता है।

मार्किस ने कहा—कौंसिल ने हम लोगों को आपके पास इसलिए भेजा है कि हम आपको सूचित कर दें कि आप सलादीन के भेजे हुए हकीम की दवा तब तक शुरू न करें जब तक कि कौंसिल इस बात की जाँच न कर ले कि हकीम विश्वास करने योग्य पुरुष है अथवा नहीं।

रिचर्ड—यदि आप लोग बाहर के खेमे में थोड़ी देर के लिए चले जायँ तो आपको सारा हाल मालूम हो जायगा।

वे दोनों रिचर्ड के कहने से बाहर के खेमे में चले गये। इसके कुछ ही देर बाद टामस और कैनेथ के साथ हकीम ने रिचर्ड के खेमे में प्रवेश किया। टामस ने बाहर के कमरे में बैठे हुए आगन्तुकों को देखकर उन्हें आदर के साथ अभिवादन किया और कहा—श्रीमान, मैं पहले हकीम को अपने स्वामी के पास पहुँचा आऊँ। यदि आप धैर्य रक्खें तो आप भी हम लोगों के पीछे आ सकते हैं। हकीम साहब, चलिए।

हकीम आगे बढ़े। ग्रैंड मास्टर को टामस का व्यवहार समुचित न जँचा। उसने मार्क्विस की ओर देखा। उसकी आँखें मिलने के बाद वह शान्त हो गया और वे दोनों भी उनके पीछे रिचर्ड के खेमे में घुसे। कैनेथ अपनी हीन स्थिति के खयाल से उस अवसर पर चुप रहा। वह भी उनके पीछे हो गया।

जब वे सब खेमे के भीतर पहुँच गये तब उन्हें देखकर रिचर्ड ने कहा—मैं अपने संघ के प्रतिनिधियों का स्वागत करता हूँ। रिचर्ड शीघ्र ही अच्छा होकर पहले की तरह फिर लड़ेगा। यदि नहीं, तो उसके शव को ले जाकर गाड़ दीजिएगा। टामस, चाहे मैं मरूँ या जीवित रहूँ, तुमको भी तेरे राजा का धन्यवाद है। हाँ, अभी एक और आदमी है—परन्तु इस ज्वर के कारण मेरी दृष्टि क्षीण हो गई है। कहाँ है अरे वह स्काट, जो बिना सीढ़ी के आकाश में चढ़ जायगा, उसका भी स्वागत है—हकीम जी! यहाँ आओ और मेरी दवा करो।

हकीम को रिचर्ड की बीमारी के भिन्न-भिन्न चिह्न पहले से ही मालूम हो गये थे। वह बड़ी देर तक उसकी नाड़ी की गति को बड़े ध्यान से देखता रहा। अन्य लोग चुपचाप खड़े रहे। नाड़ी देखने के बाद हकीम ने एक प्याले में झरने का पानी भरा और उसमें वही पहले की लाल थैली डुबो दी। जब हकीम ने समझा कि उस पानी में दवा का काफ़ी प्रभाव आ गया होगा, तब उसने रिचर्ड के हाथ में प्याला देना चाहा। परन्तु रिचर्ड ने उसे रोककर कहा—क्षण भर ठहरो। तुमने मेरी नाड़ी देखी है; और मैं तुम्हारी नाड़ी देखना चाहता हूँ। मैं भी तुम्हारी कुछ-कुछ कला जानता हूँ।

हकीम ने चुपचाप अपना हाथ आगे कर दिया। रिचर्ड ने नाड़ी देखकर कहा—उसके रुधिर की गति बच्चों के रुधिर की गति जैसी है। जो लोग राजों-महाराजों को ज़हर देते हैं उनके रुधिर की गति ऐसी शान्त नहीं होती। टामस, चाहे मेरी मृत्यु हो जाय और चाहे इस दवा से मेरी बीमारी जाती रहे, तुम इन हकीम को उचित मर्य्यादा के साथ विदा कर दो। हकीम जी! सलादीन से कह दीजिएगा कि यदि मैं अच्छा हो गया तो उन्हें वीरों की नाईं धन्यवाद दूँगा, परन्तु यदि मेरी मृत्यु हो गई तो भी मेरा उन पर विश्वास बना रहेगा।

यह कहकर रिचर्ड उठ बैठा, प्याले को अपने हाथ में ले लिया और सारी दवा पी गया। उसने प्याला हकीम के हाथ में दे दिया और तकिये से उढ़क गया, मानो वह थक-सा गया हो। इस पर हकीम ने सबको कमरे से निकल जाने के लिए कहा! टामस के सिवा और सब लोग वहाँ से हट गये। रिचर्ड के पास टामस और हकीम ही रह गये थे।

तेरहवाँ परिच्छेद

मार्किस और ग्रेंड-मास्टर खेमे के बाहर कुछ समय तक खड़े रहे। इसके बाद मार्किस ने कहा कि आओ, हम लोग पैदल ही छावनी से होकर अपने खेमों को लौट चलें और घोड़ों तथा साईसों को जाने दें। सन्ध्या का शीतल वायु भी चल रहा है। इस समय का टहलना सुखकर होगा। मार्किस राज़ी हो गया। अतएव वे दोनों पैदल ही चले।

रास्ते में उन दोनों में कुछ देर तक युद्ध सेना-सम्बन्धी बातें हुईं, उसके बाद वे चुप हो गये। अन्त में ग्रैंड मास्टर ने कहा—हम लोगों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि फ्रांस का बादशाह फ़िलिप जैसा बहादुर है वैसा ही चतुर भी है।

मार्किस—ठीक है। पर वह शीघ्र ही इस लड़ाई-झगड़े से अपना मुँह मोड़ लेगा। उसके सरदार ही उसे यहाँ तक खींच लाये हैं। वह तो रिचर्ड से द्वेष रखता है। अतः उसका इरादा इस युद्ध-स्थल से शीघ्र लौट जाने का मालूम होता है। वह पैलेस्टाइन की अपेक्षा पेरिस के पास अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के उपायों को कार्य में परिणत करना चाहता है।

ग्रैंड मास्टर—आस्ट्रिया के ड्यूक के सम्बन्ध में आप क्या कहते हैं?

मार्किस—वह भी फ़िलिप की ही तरह यहाँ आ फँसा है। उसे भी रिचर्ड से चिढ़ है। जिसे देखो वही महाराज रिचर्ड का ही गुण गाता है और ड्यूक रिचर्ड से डरता और घृणा करता है। रिचर्ड की क्षति से वह प्रसन्न होगा। परन्तु यह सब मैं तुम्हीं से कहता हूँ। मेरा भी उद्देश्य

है कि यह समिति टूट जाय और इस देश से ये राजे अपनी सेनाओं के साथ चले जायँ। तुमको भी मालूम ही है कि केवल एक को छोड़ ये सब राजे सलादीन से सन्धि करना चाहते हैं।

ग्रैंड मास्टर—आपने बहुत ठीक कहा है। कौंसिल की अंतिम बैठक की कार्यवाही मैंने भी ग़ौर से देखी है। परन्तु यह तो बताओ कि आपने कौंसिल में किसलिए इस बात पर ज़ोर दिया था कि कैनेथ के हाथ ही सन्धि का संदेश भेजा जाय?

मार्किस—उसका रङ्ग-ढङ्ग इँग्लैंडवालों जैसा है, इससे सलादीन ने समझा होगा कि रिचर्ड का आदमी है, अतएव वह सन्धि करने को तैयार हो जायगा। दूसरा अर्थ यह था कि स्काटलैंड का निवासी होने से वह अपने संदेश का भेद रिचर्ड को नहीं मालूम होने देगा।

ग्रैंड मास्टर—यह चाल थी! परन्तु क्या तुम यह नहीं देखते कि जिस कैनेथ को आपने इतनी सावधानी से चुना था वह अपने साथ एक हकीम लाया है और इस हकीम के द्वारा रिचर्ड युद्ध करने के लिए फिर अच्छा हो जायगा और अच्छा हुआ नहीं कि उसने लड़ाई छेड़ दी। तब कौन राजा युद्ध से मुकर जाने की हिम्मत करेगा?

मार्किस—धीरज धरो। रिचर्ड के अच्छे होने के पहले ही फ़िलिप से न सही तो कम से कम आस्ट्रिया के राजा से उसका ऐसा विरोध करा दिया जा सकता है जो दूर नहीं हो सकेगा। उस दशा में रिचर्ड रोग-शय्या से उठकर भले ही अकेले सलादीन का सामना अपनी सेना से करे परन्तु अन्त में समग्र ईसाई-सेनादल के सञ्चालन का भार उसे नहीं मिल सकेगा।

ग्रैंड मास्टर इधर-उधर देखने लगा कि किसी ने उनकी बातचीत सुन तो नहीं ली है। इसके बाद उसने मार्किस का हाथ अपने हाथ में लेकर और उसे ज़ोर से दबाकर धीरे-धीरे कहा—क्या तुम कहते हो कि रिचर्ड अपनी रोग-शय्या से उठ सकेगा ? वह कभी नहीं नीरोग हो सकता।

मार्किस आश्चर्य में पड़ गया। उसने कहा—ईसाई-मण्डल के योद्धा सिंहराज रिचर्ड के सम्बन्ध में तुम यह क्या कहते हो ! यह कहते हुए उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसका शरीर काँपने लगा।

ग्रैंड मास्टर उसके मुँह की ओर घृणा के भाव से हँसकर देखने लगा। सँभलकर मार्किस ने कहा—जब तक कोई दूसरा रास्ता नहीं मिलता है तब तक वही समुचित है जो तुमने बताया है। परन्तु हम लोगों की बड़ी बदनामी होगी।

ग्रैंड मास्टर—यदि आपका यह विचार है तो अब तक हम लोगों में जो बातचीत हुई है, आओ उसे भूल जायँ। वे स्वप्न की बातें थीं और अब हवा हो गईं।

मार्किस—वे कभी हवा नहीं हो सकतीं।

"अच्छा तो पहले मुझे इँग्लैंड और आस्ट्रिया के बीच फूट पैदा करने दो।" ग्रैंड मास्टर ने कहा। इसके बाद वे दोनों अपने अपने खेमे की ओर रवाना हुए। परन्तु मार्किस अपनी जगह पर खड़ा ही रहा। जब ग्रैंड मास्टर उसकी आँखों से ओझल हो गया तब उसने अपने मन में कहा—वास्तव में मैंने शैतान को उठाकर खड़ा कर दिया है। इस धर्म-युद्ध का रोकना मेरा उद्देश था ही, परन्तु जो उपाय इस पादड़ी ने बताने का

साहस किया है उसके ग्रहण करने का साहस मुझे नहीं होता है। परन्तु है यह उपाय कारगर, शायद इसमें कोई जोखिम भी न उठानी पड़ेगी। जब वह इस प्रकार की बातें अपने मन में सोच रहा था उसे कुछ दूर से आगे के शब्द सुनाई दिये—पवित्र भूमि की याद रखना!

रात्रि में सैनिक लोग अपनी-अपनी चौकी में यही वाक्य कहकर पहरा देते थे। समय-समय पर उनकी यह आवाज़ सुनाई पड़ती रहती थी। यह वाक्य चिल्लाते रहने का अभिप्राय यह था कि सैनिकों को अपने कर्तव्य का सदा ध्यान बना रहे।

मार्किस कुछ चिन्ता के साथ अपने इधर-उधर देखने लगा। उसकी निगाह इँग्लैंड के राष्ट्रीय झंडे पर जा पड़ी। झंडा एक ऊँचे चबूतरे पर छावनी के लगभग बीच में गड़ा हुआ था। झंडे को देखते ही उसकी सारी मानसिक चिंतायें दूर हो गईं। उसके हृदय में बिजली-सी दौड़ गई। वह जल्दी-जल्दी अपने खेमे की ओर रवाना हुआ। उसके ढङ्ग से यह प्रतीत होता था, मानो उसे कोई तरकीब सूझ गई है जिसे वह काम में लाना चाहता है।

खेमे में जाकर वह अपनी शय्या पर पड़ रहा। सो जाने के पहले उसने अपने मन में सोचा कि कल मुझको आस्ट्रिया के ड्यूक के समीप उपस्थित होना है। उद्देश की सिद्धि कैसे हो, इसका उस समय विचार किया जायगा। उसके बाद ग्रैंड मास्टर के क्रूर उपाय के सम्बन्ध में विचार होगा।

यह छोटा उपन्यास [illegible] महत्वपू
है - इसमें मित्रता और प्रेम
अच्छा चित्र अंकित किया
[illegible]

चौदहवाँ परिच्छेद

आस्ट्रिया देश वह देश था जिसके स्वामी को राजा की पदवी प्राप्त थी। ल्यूपोल्ड ऐसे ही आस्ट्रिया का स्वामी था। वह आस्ट्रिया का ग्रैंड ड्यूक कहलाता था। अत्याचारी और महत्त्वाकांक्षी होने की अपेक्षा वह निर्बल हृदय और मिथ्याभिमानी अधिक था। वह लंबे क़द का हट्टा-कट्टा ख़ासा सुन्दर जवान था। उसके सिर के सुन्दर बालों की लटें उसके सिर पर लहराती रहती थीं। परन्तु उसका शरीर राजसी ठाठ के लिए उपयुक्त नहीं था। उसके रङ्ग-ढङ्ग से यह भी प्रकट होता था कि वह अपनी पद-मर्यादा से अधिक परिचित नहीं है। यही कारण था कि अपनी प्रतिष्ठा और मर्यादा क़ायम रखने के लिए उसे कभी-कभी बेमौक़े रूखा और क्रूर होना पड़ता था।

जब वह पहले-पहल इस धर्म-युद्ध में शामिल हुआ, तब उसने रिचर्ड से मित्रता करने का भाव बहुत अधिक दिखाया था और इस सम्बन्ध में अपनी ओर से काफ़ी प्रयत्न किया था। और रिचर्ड को भी यही चाहिए था कि वह भी उसी का जैसा अपनी ओर से प्रकट करे। परन्तु रिचर्ड ने वैसा नहीं किया। ल्यूपोल्ड बहादुरी में किसी प्रकार रिचर्ड से कम नहीं था, परन्तु रिचर्ड का-सा साहस उसमें नहीं था। बस इसी सबब से ल्यूपोल्ड रिचर्ड को तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा। इधर रिचर्ड भी उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगा, जिसे वह न तो छिपा सका न दूर कर सका। इस प्रकार इन दोनों में खुल्लमखुल्ला विरोध

हो गया था। ईसाई संघ की इस फूट और विरोध की दशा में मार्किस ने अपनी उद्देश-सिद्धि का उपक्रम किया।

मार्किस ने आस्ट्रिया के ड्यूक से दोपहर में मिलने का विचार किया। हाल में ही उसे कहीं से साइप्रस की शराब मिल गई थी, अतएव इसके बहाने उसने ल्यूपोल्ड के यहाँ जाने का निश्चय किया। उसने ड्यूक को लिखा कि आपको मैं साइप्रस की शराब भेंट करना चाहता हूँ। उसका पत्र पाकर ड्यूक ने मार्किस को अपने यहाँ भोजन करने के लिए बुलाया। ड्यूक ने इस अवसर पर बड़ा शानदार भोज दिया। आस्ट्रिया के बड़े से बड़े सरदार भोज में सम्मिलित हुए। जब भोज आरम्भ हुआ तब कमरे के बाहर बैंड बाजा बजने लगा। उस समय का ठाट-बाट देखकर मार्किस दङ्ग रह गया। ड्यूक ने मार्किस को अपनी ही मेज़ के आगे अपने दाहिने बिठाया था पर बातचीत वह दरबार के अपने वार्ताविद् से ही करता था। बात यह थी कि यह आदमी बहुमूल्य सुन्दर पोशाक पहने था। इसके हाथ में एक दण्ड था जिसमें चाँदी के सिक्कों के गुच्छे उसमें लगे हुए छल्लों में लटक रहे थे। जब कभी वह कोई कहने योग्य बात कहना चाहता था तब दरबारियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह दण्ड ऊपर उठाकर झनझना दिया करता था। यह ड्यूक के दाहिने कन्धे के पास खड़ा था। इसके अतिरिक्त उसका विदूषक उसके बायें कन्धे के पास खड़ा था। इन दोनों आदमियों की बदौलत भोज में बड़ा आनन्द रहा। इनसे यद्यपि ड्यूक अपना मनोरञ्जन बराबर करता रहा, तथापि वह इस बात को बड़ी सावधानी से ताकता था कि इस शानदार

भोज और आस्ट्रिया के राजा के दरबार का मार्किस पर कैसा प्रभाव पड़ा है।

मार्किस के मन के वास्तविक भाव चाहे जैसे रहे हों, परन्तु ऊपर से उसने प्रकट किया कि वह उस स्थल की सभी बातों से सन्तुष्ट है। वह सबके साथ उसी प्रकार हँसता और बातें करता रहा जैसे ड्यूक कर रहा था।

थोड़ी ही देर बाद विदूषक ने इँग्लैंड के राजा की हँसी करनी प्रारम्भ की। उस हँसी में सभी लोग शामिल हुए। परन्तु यह हँसी शायद वार्ताविद् को अच्छी न लगी। उसने रिचर्ड की प्रशंसा कर डाली। अतएव अवसर पाकर मार्किस ने कहा—"हममें सभी ने इन लड़ाइयों में भाग लिया है। परन्तु इस सम्बन्ध में इँग्लैंड के रिचर्ड की कीर्त्ति ही हुई है। क्या उस कीर्त्ति के अधिकारी दूसरे राजा नहीं हैं। क्या कोई गायक इस समय आस्ट्रिया के ड्यूक की प्रशंसा में एक गीत गावेगा?

इतना सुनना था कि तीन गवैयों ने तत्क्षण गाते-बजाते कमरे में प्रवेश किया। विदूषक ने दो को गाने से रोक दिया। केवल एक ही गाता रहा। उसने गाया—

"आस्ट्रिया से यह न पूछो कि तमाम राजाओं के बीच तुम्हारा झण्डा सबसे ऊँचा क्यों फहराता है। पूछो उस गरुड़ पक्षी से कि तू आकाश में इतना ऊँचे क्यों उड़ता है।"

इस पर विदूषक ने कहा—गरुड़ पक्षी तो हमारे महाराज के झंडे का चिह्न है और वह आकाश में बहुत ऊँचा उड़ते-उड़ते सूर्य के पास जा पहुँचता है।

मार्किस ने कहा—परन्तु शेर गरुड़ से भी ऊपर उछल गया है। मैं इँग्लैंड के झंडे के तीनों शेरों के सम्बन्ध में कह रहा हूँ। कहा जाता है, पहले ये तीन तेंदुये थे, परन्तु अब ये सब प्रकार से शेर हो गये हैं, इसलिए पशु-पक्षियों के मध्य वे महत्त्व का स्थान ग्रहण करेंगे ही!

ल्यूपोल्ड—क्या तुम यह बात सोच-समझकर कह रहे हो? क्या तुम्हारा यह विचार है कि इस युद्ध में जिन स्वाधीन राजाओं ने स्वेच्छा से भाग लिया है उनसे रिचर्ड बढ़कर है?

मार्किस—सब बातों से तो यही प्रकट हो रहा है। देखिए न, हमारी छावनी के बीच में केवल उसी का झण्डा फहरा रहा है। मानो वही हमारी सारी ईसाई-सेना का राजा और सेनापति है।

ल्यूपोल्ड—और तुम इस बात को इस प्रकार धैर्य से सह रहे हो और उसके सम्बन्ध में सरल ढङ्ग से कह रहे हो?

मार्किस—श्रीमान, यह मुझ जैसे तुच्छ मार्किस के झगड़ने की बात नहीं है, जब कि उसे फ्रांस के फ़िलिप और आस्ट्रिया के ल्यूपोल्ड जैसे प्रधान राजा चुपचाप सह रहे हैं। जिस अपमान को श्रीमान् प्रसन्नता से सह रहे हैं वह मेरे लिए अपमान की बात नहीं हो सकती। मेरी समझ में यह अँगरेज़ी अधीनता स्वीकार करने के कोई गहरे कारण होंगे।

क्रोध के साथ ल्यूपोल्ड ने कहा—मैंने अधीनता स्वीकार की! मैंने, आस्ट्रिया के प्रधान ड्यूक ने, पवित्र रोमन-साम्राज्य के प्रधान व्यक्ति ने! एक द्वीप के आधे भाग के राजा की मैंने स्वयं आधीनता स्वीकार की है! भगवान् जाने, कदापि नहीं! सारी छावनी और

सारा ईसाई-मण्डल अब देखेगा कि मैं समुचित मार्ग पर चलना जानता हूँ और मैं इञ्च भर भी अँगरेज़ कुत्ते के आगे से नहीं डिगा। मेरे सूरमाओ और हँसोड़ो मेरे साथ आओ। इसी दम हम आस्ट्रिया की गरुड़-ध्वजा फहरायेंगे जहाँ वह उतनी ऊँची फहरायेगी जितनी कि राजा की ध्वजा फहराया करती है।

यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ और दरबारियों के जयोल्लास के बीच खेमे के द्वार की ओर बढ़ा। वहाँ जाकर उसने अपना झण्डा थाम लिया, जो द्वार पर फहरा रहा था।

हस्तक्षेप-सा करते हुए मार्किस ने कहा—महाराज, रुकिए—इस समय छावनी में झगड़ा करने से आपकी बुद्धिमत्ता पर धब्बा लग जायगा। शायद यह अच्छा होगा कि इँग्लैंड की यह ढिठाई अभी कुछ समय तक और सहन की जाय—

किन्तु ल्यूपोल्ड ने डाँटकर कहा—नहीं, मैं एक मिनट भी नहीं रुक सकता। यह कहकर वह झण्डा लिये हुए उस चबूतरे की ओर जल्दी-जल्दी बढ़ा जहाँ इँग्लैंड का झण्डा फहरा रहा था। उसके पीछे-पीछे भोज के अतिथि और उसके अनुचर आ रहे थे। उसने इँग्लैंड के झण्डे के पास पहुँचकर इस ढङ्ग से उसे जा पकड़ा, मानो वह उसे उखाड़ डालना चाहता हो। यह देखकर उसके विदूषक ने जल्दी से बीच में पड़कर कहा—

"मेरे स्वामी! मेरे प्यारे स्वामी! ज़रा सोच-विचारकर काम कीजिए। शेरों के दाँत भी होते हैं। गरुड़ पक्षियों का राजा है, जैसे शेर पशुओं का राजा है। दोनों के राज्य एक-दूसरे से इतने पृथक्-

पृथक् हैं, जितना जर्मनी और आस्ट्रिया के राज्य हैं। इसलिए हे पक्षिराज, राजसिंह शेर का अपमान न करिए, किन्तु शान्ति के साथ अपने झण्डे को उसके झण्डे के बराबर फहराइए।"

यह सुनकर ल्यूपोल्ड ने झण्डे मे अपना हाथ हटा लिया। वह मार्किस को खोजने लगा। किन्तु वह वहाँ था ही नहीं। ज्यों ही उसने देखा कि झगड़े का श्रीगणेश हो गया, वह भीड़ से चुपचाप खसक गया और अन्य निरपेक्ष राजाओं से जाकर यह शिकायत की कि ल्यूपोल्ड का इस भोजन के बाद ही इँग्लैंड से अपने अपमान का बदला लेने का प्रयत्न करना कभी उचित नहीं है।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

जिस समय कि हकीम ने कहा था कि अमुक समय में महाराज रिचर्ड की निद्रा भङ्ग होगी; अन्त में वह समय आ गया और रिचर्ड आँखें मींजता हुआ उठकर बैठ गया। टामस ने हकीम से पूछा कि कहिए, महाराज का बुखार उतर गया। हकीम ने कहा कि हाँ, महाराज रिचर्ड का ज्वर उतर गया है और वे अब अच्छे हो गये हैं। स्वयं रिचर्ड ने भी उसका समर्थन किया। उसने टामस से पूछा कि राजकोष में इस समय कितने रुपये हैं! टामस ठीक संख्या न बतला सका।

रिचर्ड ने कहा—कोई हर्ज नहीं। चाहे ज़्यादा रुपया हो, चाहे कम हो; सब इस विद्वान् हकीम को दे दो। मुझे विश्वास है, इन्हीं ने मुझे फिर धर्म-युद्ध में भाग लेने के लिए समर्थ किया है। यदि कोष में एक हजार

पौंड से कम धन हो, तो उस रक़म को जवाहिरात तथा अन्य अमूल्य रत्नों से पूरा कर दो।

हकीम ने कहा—महाराज! ईश्वर ने मुझे जो गुण बख़्शा है उसे मैं बेचता नहीं। महाराज को विदित हो कि यदि मैं अपनी इस दैवी औषधि के गुणों के बदले में सोना या रत्न ले लूँगा तो उसका प्रभाव नष्ट हो जायगा।

रिचर्ड ने कहा—टामस, उन्हें इस मूर की सद्भावना एक उदाहरण है जो अपने को सर्वश्रेष्ठ नाइट समझते हैं।

हकीम ने कहा—आपका इतना कहना ही मेरे लिए काफ़ी पारितोषिक है। अच्छा, अब आप कुछ समय तक और विश्राम करें। यद्यपि मुझे विश्वास है कि दैवी औषधि का प्रभाव आपके विश्राम न करने से कभी नष्ट नहीं हो सकता, तथापि यदि आप बिना बलवान् हुए परिश्रम करना प्रारम्भ कर देंगे तो उससे आपको हानि पहुँच जाने की सम्भावना है।

रिचर्ड—हकीम जी, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। परन्तु जिस ज्वर से इतने दिनों से मैं कष्ट पा रहा था वह अब दूर हो गया है, और अब मैं पुरुषार्थ के कार्य करने में अपने को समर्थ पाता हूँ। किन्तु—वह सुनो, कैसा यह शोर-गुल हो रहा है और छावनी में वह कैसा दूर पर गाना-बजाना सुनाई दे रहा है! टामस, जाकर देखो तो!

एक मिनट में वापस आकर टामस ने कहा—महाराज! आर्च-ड्यूक ल्यूपोल्ड अपने दल-बल समेत छावनी में जा रहा है।

रिचर्ड ने कहा—मूर्ख कहीं का! क्या वह अपने मतवालेपन को

अपने खेमे के अन्दर ही छिपाये नहीं रख सकता? इस प्रकार अपनी बेशर्मी का परिचय समस्त ईसाई-मण्डल को देना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? मार्किस, तुम क्या कहते हो?

मार्किस ने इसी समय खेमे में प्रवेश किया था।

मार्किस—महाराज, सच तो यह है कि ल्यूपोल्ड जो कुछ करता है, सब बेमतलब का। वह स्वयं भी नहीं जानता है कि मैं क्या कर रहा हूँ। तो भी सत्य बात तो यह है कि मैं उसकी ऐसी शरारत में सम्मिलित नहीं हो सकता। वह इँग्लैंड के झण्डे को उखाड़कर उसकी जगह अपने देश का झण्डा फहराने का प्रयत्न कर रहा है।

"क्या कहा तुमने?" गरजकर रिचर्ड ने कहा।

मार्किस—महाराज आप रुष्ट न हों। एक मूर्ख अपनी मूर्खता के अनुसार—

चुप रहो—यह कहकर रिचर्ड अपने पलंग पर से उछल पड़ा। उसने कहा—मार्किस! खबरदार, अपने मुँह से अब एक शब्द भी न निकालना। मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि मुँह से एक शब्द भी न निकालना। जो कोई इस समय कुछ भी कहे-सुनेगा उसकी खैर नहीं। हकीम जी! मैं आपको भी सावधान किये देता हूँ, आप भी चुप रहें।

यह कहकर रिचर्ड ने झटपट अपने कपड़े पहने और अपनी तलवार खेमे के स्तम्भ से निकाल ली। इसके बाद बिना कोई और हथियार लिये या किसी को अपने साथ बुलाये वह झपटता हुआ खेमे के बाहर हो गया। मार्किस अपने हाथ बाँधे इस प्रकार खड़ा था, मानो

वह आश्चर्य में पड़ गया था। वह टामस को बातों में डालना चाहता था। परन्तु टामस उसको धक्का देकर आगे बढ़ गया और एक शाही साईस को बुलाकर उससे जल्दी-जल्दी कहा—लार्ड सॉल्सबरी के खेमे में शीघ्र दौड़ जाओ और उनसे कहो कि अपने आदमी एकत्र करें और मेरे पीछे-पीछे झंडेवाले चबूतरे की ओर आवें। उनसे यह भी कह देना कि महाराज का ज्वर उनके रक्त से निकलकर अब उनके मस्तिष्क में जा पहुँचा है।

बस अब क्या था? छावनी में हलचल मच गई। उक्त स्थल के आस-पास के रहनेवाले भिन्न-भिन्न देशों के सैनिक एकत्र हो गये। सब सशस्त्र थे और गड़बड़ के कारण कोई वास्तविक बात नहीं जानता था। परन्तु सौभाग्यवश लार्ड सॉल्सबरी समाचार पाते ही अपने साथ कुछ सैनिक लेकर टामस के पीछे ही घटनास्थल पर जा पहुँचे। इधर अपनी सेना को तैयार होकर खड़ी हो जाने और आवश्यकता पड़ने पर रिचर्ड की मदद के लिए व्यवस्थित रूप में आ पहुँचने का आदेश दे गये थे।

रिचर्ड बड़ी शीघ्र गति से झंडे की ओर बढ़ा जा रहा था। उसे इस प्रकार जाता देख कैनेथ को कुछ सन्देह हुआ। अतएव वह भी अपनी तलवार लेकर टामस से आ मिला।

अन्त में रिचर्ड झंडे के पास पहुँच गया। उस समय उसके आस-पास आस्ट्रिया के ड्यूक के अनुयायी जय-जयकार कर रहे थे। ड्यूक उन दोनों झंडों के पास खड़ा था। रिचर्ड भीड़ को चीरकर भीतर घुस गया। उसके पीछे टामस और कैनेथ भी घुस गये। रिचर्ड ने आस्ट्रिया के झंडे को पकड़कर गरजकर कहा—किसने इस झंडे को इँग्लैंड

के झंडे के बराबर फहराने का साहस किया है ? इस प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया। रिचर्ड ने एक बार फिर उपर्युक्त वाक्य को दोहराया। अब की बार उसकी आवाज़ में आकाश-पाताल गूंज उठा। आर्च ड्यूक कोई साधारण और कायर पुरुष तो था नहीं, वह भला कब इस प्रश्न का उत्तर दिये बिना रह सकता था। अतः उसने निर्भीक हो उत्तर दिया—यह साहस करनेवाला मैं आस्ट्रिया का ल्यूपोल्ड हूं।

रिचर्ड—अच्छा, तो आस्ट्रिया के ल्यूपोल्ड को अभी मालूम हो जायगा कि रिचर्ड उसके झंडे और उसके दर्प की क्या गति करता है।

यह कह रिचर्ड ने आस्ट्रिया के झंडे को उखाड़ डाला, उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले और उसके कपड़े पर अपना पदाघात किया। फिर उसने कहा—मैं आस्ट्रिया के झंडे को अपने पाँव से रौंदता हूं। क्या तुम्हारे ट्यूटन सैनिकों में कोई ऐसा नाइट है जो मेरे इस काम में बाधा दे ?

क्षण भर तक तो वहाँ शान्ति छाई रही। परन्तु जर्मनों की अपेक्षा कोई दूसरे बहादुर नहीं होते। ड्यूक के साथियों में कई एक की आवाज़ सुनाई दी 'मैं, मैं, मैं!' ल्यूपोल्ड ने भी अपने इन सैनिकों के स्वर में स्वर मिलाकर कहा—हाँ मैं हूँ।

हंगरी की सीमा पर के वीरवर अर्ल वालेनरोड ने कहा—"हम लोग इस प्रकार क्यों ताक रहे हैं। भाइयो और श्रेष्ठ जनो, इस आदमी का पैर हमारे देश के पवित्र झंडे के ऊपर रक्खा है। हमको झंडे की रक्षा और इंग्लैंड के गर्व को चूर-चूर करना चाहिए।" यह कहकर उसने तलवार खींच ली और रिचर्ड पर इतने वेग से वार किया कि यदि

कैनेथ बीच में आकर उस वार को अपनी ढाल पर न ले लेता तो निस्सन्देह रिचर्ड को मारक चोट लगती। परन्तु रिचर्ड ने उस सैनिक पर हमला नहीं किया वरन् उसने ऊँचे स्वर में कहा—मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं उस मनुष्य पर कभी प्रहार नहीं करूँगा जो अपने कन्धे पर क्रास का चिह्न रक्खे रहेगा। इसलिए वालेनरोड, जीते रहो! इँग्लैंड के रिचर्ड की याद रखने के लिए जीते रहो!

ऐसा कहते हुए रिचर्ड ने उस सैनिक को अपने दोनों हाथों से जा दबोचा और उसकी कमर पकड़कर उसे पीछे उछाल दिया। वह झंडे के चबूतरे को नाँघकर दूसरी ओर जा गिरा और सिर के बल लुढ़कता कुछ दूर तक चला गया। उसके कन्धे की हड्डी टूट गई और वह मुरदा-सा होकर वहाँ पड़ा रहा। रिचर्ड के इस अलौकिक शक्ति-प्रदर्शन से उससे सामना करने का न तो ड्यूक को साहस हुआ, न उसके साथियों को हुआ। हाँ, जो लोग सबसे पीछे दूर खड़े थे उन्होंने अलबत्ता अपनी तलवारें खनकाईं और कहा कि इस टापूवाले कुत्ते के टुकड़े-टुकड़े कर डालो। परन्तु जो लोग अधिक समीप खड़े थे वे व्यवस्था के नाम पर अपना भय छिपाकर कहने लगे—शान्ति! शान्ति! क्रास के और पोप के नाम पर शान्त हो!

जब आस्ट्रियावालों में शान्ति और युद्ध का परस्पर विरोधी चीत्कार मचा हुआ था, उस समय रिचर्ड सिंह की नाईं पूर्ववत् झंडे पर अपना पैर रक्खे ऐसे ढङ्ग से अपने चारों ओर घूर रहा था मानो वह अपना शत्रु खोज रहा हो। रिचर्ड के एक तरफ़ टामस और दूसरी तरफ़ कैनेथ उसकी रक्षा करने के विचार से चुपचाप खड़े थे। उनकी तलवारें

म्यान में थीं, पर उनकी धज से प्रकट होता था कि वे अपने प्राण देकर उसकी रक्षा करने को तैयार हैं। सॉल्सबरी भी अपने दल-बल-सहित धीरे-धीरे समीप ही आ पहुँचा था।

इसी समय फ्रांस का बादशाह फ़िलिप भी अपने एक-दो सरदारों के साथ वास्तविक बात जानने के लिए घटनास्थल पर आ पहुँचा। रिचर्ड को रोग-शय्या से उठा तथा अपने सहायक आस्ट्रिया के ड्यूक से सामना करते हुए देखकर उसने आश्चर्य का भाव प्रकट किया। रिचर्ड को फ़िलिप का खयाल था। अतएव जब उसने फ़िलिप को अपने सामने खड़ा देखा तब उसने झंडे से अपना पैर हटा लिया। ल्यूपोल्ड भी कुछ कुछ शान्त हो गया। परन्तु उसे इस बात से बड़ी लज्जा हुई कि फ़िलिप ने उसे क्रुद्ध रिचर्ड द्वारा अपमानित होते देख लिया है।

फ़िलिप ने पूछा—इँग्लैंड के राजा और आस्ट्रिया के ड्यूक के बीच इस अशोभित कलह का क्या मतलब है? यह कैसे सम्भव है कि जो इस पवित्र युद्ध के सरदार और स्तम्भ हैं—

रिचर्ड—आप इसे ड्यूक, राजा अथवा स्तंभ चाहे जो कुछ कहें, इसने शोखी की और उसका फल मैंने इसको दे दिया। बस!

ल्यूपोल्ड—"महाराज फ़िलिप! मेरी आपसे और प्रत्येक राजा से अपील है कि इस इँग्लैंड के राजा ने मेरे झंडे का अपमान किया है। उसको फाड़कर पैरों तले रौंद डाला है!"

रिचर्ड—मैंने ऐसा किया, क्योंकि ल्यूपोल्ड ने अपने झंडे को मेरे झंडे के बराबर गाड़ा था।

फ़िलिप की उपस्थिति से उत्साहित होकर ल्यूपोल्ड ने कहा—मेरा पद तुम्हारे पद से किसी प्रकार कम नहीं है।

रिचर्ड—अगर तुम अपने शरीर से इस बराबरी का दावा करो तो मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैं उसके साथ भी इसी चीथड़े का-सा व्यवहार करूँगा।

फ़िलिप—नहीं, भाई रिचर्ड शान्त हो। इस मामले में ल्यूपोल्ड की ही ग़लती है। ल्यूपोल्ड, सुनो। तुम्हें यह न समझना चाहिए कि हम लोगों ने इँग्लैंड के झंडे को सबसे ऊँचे स्थान में जो गड़ने दिया है उसका यह अभिप्राय है कि हम स्वतन्त्र राजे रिचर्ड से अपने को हीन स्वीकार करते हैं।

हम लोग इस पवित्र स्थान में सैनिक रूप में आये हैं। अपने अपने आमोद-प्रमोद को त्यागकर हम यहाँ अपने धर्म की रक्षा के पुनीत कार्य में संलग्न हैं। मैंने स्वयं तथा दूसरे राजाओं ने रिचर्ड को उसकी बहादुरी के कारण जो अधिकार प्रदान किया उसे किसी दूसरे अवसर पर देने को कदापि तैयार न होते। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब आप इस बात पर विचार करेंगे तब इस स्थान में अपना झंडा गाड़ने की ग़लती के लिए खेद प्रकट करेंगे। उसके बाद रिचर्ड अपने अपमानजनक व्यवहार का भी समाधान करेंगे।

इस पर ड्यूक ने क्रोध के साथ कहा कि 'मैं इस झगड़े को युद्ध-समिति के सामने उपस्थित करूँगा।'

उसके इस विचार की फ़िलिप ने प्रशंसा की।

रिचर्ड लापरवाही के साथ फ़िलिप की बातें सुनता रहा। अन्त में उसने

उच्च स्वर में कहा—मैं ज़्यादा बातें नहीं करता। सुनिए, जिस मामले से इँग्लैंड की मर्यादा का सम्बन्ध है उसे मैं न तो किसी समिति में पेश करूँगा, न किसी राजा से कहूँगा और न पोप से प्रार्थना करूँगा। मेरा झंडा यहाँ गड़ा हुआ है। इससे तीन हाथ के अन्तर पर जो झंडा गड़ा दिखाई देगा उसकी वही गति होगी जो अभी एक की हुई है।

फ़िलिप ने शान्ति के साथ उत्तर दिया—मैं अपनी शपथ के विरुद्ध लड़ाई कराने यहाँ नहीं आया हूँ। मैं भाई की तरह आपसे विदा होता हूँ। परन्तु यहाँ से जाने के पहले मैं यह चाहता हूँ कि ड्यूक महोदय भी इस मित्रता में अपना भाग लें।

यह सुनकर ड्यूक ल्यूपोल्ड कुछ इच्छा और कुछ दर्प दिखाता हुआ उन दोनों के समीप आ गया। परन्तु रिचर्ड ने बेपरवाही से कहा—मैं न तो मूर्खों की परवा करता हूँ और न उनकी मूर्खता की ही परवा करता हूँ।

यह सुनते ही ल्यूपोल्ड वहाँ से चला गया। ल्यूपोल्ड के चले जाने के बाद रिचर्ड ने उसकी ओर देखा। इसके बाद उसने कहा—रात्रि में मैं इस झंडे को अरक्षित छोड़ना नहीं चाहता—दिन में तो शेरों की केवल दृष्टि ही से उसकी रक्षा हो जायगी। टामस सुनो। इस झंडे की रक्षा का भार मैं तुम्हें सौंपता हूँ। इँग्लैंड की मर्यादा की रक्षा करो।

टामस—उसकी रक्षा करना मुझे अधिक प्रिय है। परन्तु रिचर्ड की ज़िन्दगी इँग्लैंड की रक्षा है। अतः सबसे पहले मैं चाहता हूँ कि अब श्रीमान् अपने खेमे को चलें।

इस पर रिचर्ड ने कैनेथ से कहा—वीरवर स्काट, मैं तुम्हारा कृतज्ञ

हूँ। और मैं उससे उऋण होऊँगा। यह देखो, इँग्लैंड का झंडा खड़ा है। रात में तुम्हें इस झंडे की रक्षा करनी पड़ेगी। तुम इसके पास से एक पग भी न हटना। प्राण-पण से इसकी रक्षा करना। यदि तीन से अधिक लोग एक साथ धावा करें तो झट बिगुल बजा देना। क्या यह कार्य अपने हाथ में लेते हो?

कैनेथ—अवश्य। जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे तब तक मैं अपने कर्तव्य से टस से मस न हूँगा। मैं अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होकर तुरन्त हाज़िर होता हूँ।

सोलहवाँ परिच्छेद

अर्द्धरात्रि का समय था। ऊपर आकाश में चन्द्रमा प्रकाशमान था। कैनेथ झंडे के पास पहरा दे रहा था। झंडे के पास ही उसका पूर्वोक्त कुत्ता भी पड़ा था। ऐसा मालूम होता था कि कुत्ता अपने और अपने स्वामी के पहरे का उद्देश समझता था। वह बीच-बीच में उस झंडे को देख लेता था। और जब दूर से पहरेदारों की आवाज़ सुनता, वह भी ऊँची आवाज़ से भौंक पड़ता था। मानो यह प्रकट करने के लिए कि मैं भी अपने कर्तव्य पर सावधान हूँ। इस प्रकार दो घंटे तक कैनेथ का पहरा निर्विघ्न रहा। अन्त में एकाएक कुत्ता बड़े ज़ोर से भूँकने लगा। कैनेथ ने यह जानकर कि झंडे के चबूतरे के अँधियारे भाग की ओर कोई धीरे-धीरे बढ़ता हुआ आ रहा है कहा—कौन है?

इस पर यह कर्कश और अप्रिय आवाज़ आई—अपने कुत्ते को रोक लो, नहीं तो मैं अपने धनुष के सन्धान से उसे ठीक कर दूँगा।

कैनेथ ने कहा—अपना धनुष अपने हाथ में ही लिये रहना। बाहर प्रकाश में आओ नहीं तो मैं तुमको वहीं ज़मीन में नाथ दूँगा।

इतने में ही एक बौना अँधियारे से निकलकर चाँदनी में आ गया, जिसे कैनेथ देखते ही पहचान गया। क्योंकि उसने इंगादी के गिरजे में जो दो बौने देखे थे उनमें एक यह था।

बौने ने कैनेथ के पास आकर कहा—तुम मेरे साथ उन लोगों के पास चलो जिन्होंने तुम्हें बुलाया है।

कैनेथ—क्षमा करो। मैं यहाँ से कहीं नहीं जा सकता। मुझको सुबह तक इस झंडे के पास पहरा देने की आज्ञा मिली है। मैं तुम्हारे साथ चलने में असमर्थ हूँ।

यह कहकर कैनेथ पहले की भाँति उस चबूतरे पर फिर टहलने लगा। परन्तु बौना रास्ता रोककर आगे आकर खड़ा हो गया। उसने कहा तुम सीधे मेरे कहने के अनुसार मेरे साथ चलो, नहीं तो मैं तुम्हें उस स्त्री के नाम पर चलने की आज्ञा दूँगा जिसका सौन्दर्य्य स्वर्ग से देवदूतों का आकर्षण कर सकता है। यह कहकर उसने कैनेथ के हाथ में एक अँगूठी रख दी। अरे! इसे पहचानने में उस चाँदनी रात में भी देर न लगी। यह तो वही अँगूठी थी जिसको कैनेथ ने अपनी प्रेयसी की उँगली में देखा था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने बौने से पूछा—

तुम्हें ईश्वर की क़सम है, सच-सच बतलाओ, यह अँगूठी तुमने कहाँ पाई? तुमको यहाँ किसने और क्यों भेजा है?

बौना—मैं यह सब नहीं जानता। मैं तो इस अँगूठी के बल पर इसकी स्वामिनी के पास चलने की आज्ञा भर देना जानता हूँ।

कैनेथ—अच्छा यह तो बताओ कि क्या उक्त रमणी जानती है कि इस समय मैं कहाँ, किस कार्य पर नियुक्त हूँ? क्या वह जानती है कि मेरा जीवन—जीवन की बात क्यों कहूँ, मेरी मर्यादा झंडे की रक्षा करने में निर्भर है? क्या उसकी ऐसी इच्छा हो सकती है कि मैं अपने कर्तव्य को छोड़ आऊँ? यह असम्भव है!

बौना घूम पड़ा, मानो वह जाना चाहता हो। उसने कहा—तुम ऐसा ही समझे रहो। मुझे इस बात से कुछ भी मतलब नहीं है कि तुम इस राजकीय रमणी के सच्चे भक्त हो अथवा नहीं!

कैनेथ—ठहरो-ठहरो, अरे भाई! ज़रा ठहरो! केवल एक और प्रश्न का उत्तर दे दो। क्या उक्त रमणी इस स्थान से नज़दीक है?

बौना—हाँ, वह यहाँ से कुछ ही दूरी पर है।

कैनेथ—क्या मुझे वहाँ देरी तक रुकना पड़ेगा? क्या वह मुझसे कोई काम करायेगी? यदि कल सवेरे के लिए उठा दिया जाय तो?

बौना—उस महिला ने तुमको इसी क्षण बुलवाया है। तुम्हें चलना हो तो अभी चलो, नहीं तो इस अँगूठी को मुझे लौटा दो।

कैनेथ—अच्छा तो यहाँ से दूर तो न जाना पड़ेगा?

बौना—बस, उस सामने के खेमे तक। वह देखो, चाँदनी में यहाँ से साफ़ दिखाई देता है।

कैनेथ ने अपने मन में कहा—तब तो अधिक दूर नहीं है। मैं बड़ी जल्दी लौट सकता हूँ। मैं यहाँ से कुत्ते का भूँकना सुन सकता हूँ। यदि कोई मनुष्य आयेगा तो मेरा कुत्ता अवश्य भूँकेगा। मैं जाकर अपनी प्रेयसी के पैरों पर गिर पड़ूँगा और उससे छुट्टी लेकर पहरा देने के लिए लौट आऊँगा। यह निश्चय करके उसने अपने कुत्ते को बुलाया और उससे कहा—रास्वल! तुम यहाँ पहरा देना और किसी को नज़दीक न आने देना। यह कहकर वह बौने के पीछे-पीछे चल पड़ा।

बौना कैनेथ को एक खेमे के पास ले गया। खेमे के पास पहुँचते ही बौने ने द्वार के परदे को ऊपर उठाया और कैनेथ से खेमे में प्रवेश करने के लिए कहा। पहले तो कैनेथ को उसके भीतर घुसने में कुछ हिचक हुई; परन्तु अपनी प्रेयसी के आदेश का विचारकर वह चुपचाप भीतर घुस गया। बाहर से बौने ने परदा डालकर कहा—जब तक मैं तुम्हें बाहर आने को न कहूँ, तब तक वहीं रहना।

सत्रहवाँ परिच्छेद

कुछ मिनटों तक कैनेथ को अँधेरे में अकेला ही रहना पड़ा। वहाँ कोई दीपक न था। अतएव वह नहीं जान सकता था कि मैं कैसे स्थान में लाया गया हूँ। उसने अपने मन में सोचा कि यदि राजकीय खेमे में मेरे इस समय इस प्रकार आने का पता लग जाय तो इसका परिणाम बड़ा बुरा हो। इतने में ही उसे पास के दूसरे खेमे से स्त्रियों की बात-चीत सुनाई दी। उससे उसे मालूम हो गया कि इँगलैंडेश्वरी तथा उनकी

अन्य सखियों ने छल करके मुझे यहाँ बुला लिया है। मेरी प्रेयसी एडिथ का इसमें कुछ भी दोष नहीं है। उसको भी धोखा दिया गया है। अस्तु, वह उस बात-चीत को चुपचाप खड़ा हुआ सुनने लगा।

एक स्त्री ने कहा—उसे बुला लो। मेरी एडिथ जान ले कि इस नाइट ने क्या किया है? यह अपने कर्त्तव्य से च्युत हो गया है। इससे उसे शिक्षा मिलेगी। उसने इस उत्तरी को अपने हृदय में कहीं अधिक स्थान दे दिया है। लो, वह आ रही है।

महारानी के पास आकर एडिथ ने कहा—महारानी साहिबा इस समय मौज में मालूम पड़ती हैं, यद्यपि अब सोने का समय है। मैं हाज़िर हूँ। क्या हुक्म है?

महारानी ने कहा—मैं तुम्हें अधिक देर तक न रोकूँगी। शीघ्र ही जाकर सोना। पर शायद ही आज तुम्हें नींद पड़े। क्योंकि तुम बाज़ी हार गई।

एडिथ—महारानी साहबा! मैंने तो हँसी के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझा था। मैंने बाज़ी कब बदी थी।

महारानी—क्या तुमने अपनी अँगूठी की बाज़ी मेरे कंठे से उस नाइट को कर्तव्य-च्युत करने में नहीं लगाई थी? यदि अपनी अँगूठी हार जाने से तुम नाराज़ हुई हो तो मैं उसे न लूँगी।

एडिथ—यह आप जानती हैं कि जो कुछ मेरे पास है, सब आपका है। परन्तु यह खेद की बात है कि मेरे नाम या अँगूठी का उपयोग एक वीर पुरुष को अपराधी बनाने में किया गया। उसने जो भूल की है; शायद उसके लिए अपमान तथा दण्ड सहना पड़े।

महारानी—तो क्या हमें अपने इस सच्चे नाइट के बचाव का डर है ? यदि यही बात है तो तुम्हें हमारी शक्ति का पता नहीं है. तुम उसकी बेक़दरी करती हो एडिथ ! तुम्हारी तरह दूसरियों का भी प्रभाव कवचधारी सैनिकों के हृदयों पर है। शेर का भी हृदय मांस का ही होता है, पत्थर का नहीं। विश्वास करो, मैं महाराज रिचर्ड से इस नाइट का अपराध क्षमा करवा दूँगी। जिस पर तुम्हारा इतना स्नेह है, उस नाइट का आज्ञा-उल्लंघन का अपराध मैं क्षमा करवा दूँगी।

यह सुनकर एडिथ महारानी के पैरों पर गिर पड़ी। उसने कहा—श्रीमती जी ! आप महाराज रिचर्ड को नहीं जानतीं—आपका विवाह महाराज से हाल में ही हुआ है। आप नहीं जानती हैं कि महाराज का क्रोध कितना भयङ्कर होता है। ईश्वर के लिए उस भले आदमी को यदि आपने उसे धोखा देकर बुलाया हो तो जितनी जल्दी हो सके, लौटा दें।

महारानी—एडिथ उठो ! जो तुम सोच रही हो, उससे कहीं अधिक अच्छा परिणाम होगा। मैं तुम्हारे उत्तरी मित्र का सारा अपराध रिचर्ड के सामने अपने ऊपर ले लूँगी। मैं बौने को भेजकर उसे वापस जाने के लिए भी कहलाती हूँ। वह यहीं पास के किसी खेमे में होगा।

बौने ने कहा—महारानी ! आप ग़लती कर रही हैं। वह बिलकुल पास के ही खेमे में है। उस परदे के बग़लवाले खेमे में तो है ही।

महारानी—तब तो उसने हम लोगों का कुल वार्तालाप सुन लिया होगा। चल मूर्ख, तुझे इतनी भी तमीज़ नहीं !

महारानी के डाँटते ही बौना डर से चिल्लाता हुआ बाहर भाग गया।

अठारहवाँ परिच्छेद

महारानी ने प्रकट घबराहट से एडिथ के कान में कहा—तो अब क्या किया जा सकता है ?

एडिथ—वही करना चाहिए जो सर्वथा उचित है। चलो हम लोग उससे मिलकर क्षमा माँगें। यह कहकर वह दरवाज़े का परदा उठाने का उपक्रम करने लगी। यह देखकर महारानी ने उसे वैसा करने से मना किया। परन्तु इस बीच में एडिथ परदा उठा चुकी थी। और वह सीधी कैनेथ के सामने जाकर खड़ी हो गई। उससे कहा—बहादुर नाइट! यहाँ से तुम शीघ्र अपनी जगह को लौट जाओ। यहाँ लाने के लिए तुमको धोखा दिया गया है। सवाल-जवाब करने का यह समय नहीं है।

कैनेथ ने उसके आगे घुटने टेककर कहा—मैं स्वयं कोई प्रश्न पूछना नहीं चाहता।

अधीरता से एडिथ ने पूछा—क्या तुमने सब बातें सुनी हैं ? हे ईश्वर! तब तुम यहाँ क्यों रुके हुए हो, जब कि प्रत्येक मिनट जो यहाँ बीत रहा है, वह तुम्हारे लिए अपमान का कारण है।

कैनेथ—मैंने सब सुना है, और सब तुम्हारे मुँह से सुना है। पर तुमसे एक निवेदन है। और अपमान! सो मैं उसे अपने रक्त से धो लूँगा।

एडिथ—ऐसा न करना। बुद्धि से काम लो। अभी कुछ न बिगड़ा होगा; पर तुम अब यहाँ से जल्दी जाओ।

केनेथ—मैं तुमसे क्षमा चाहता हूँ, क्योंकि मैंने समझा था कि तुम्हें मेरी ज़रूरत है।

एडिथ—लो मैंने तुम्हें क्षमा किया। पर क्षमा किस अपराध की। वास्तव में मैं तुम्हारी हानि का कारण हुई हूँ।

केनेथ—यह लो अपनी अँगूठी।

एडिथ—नहीं-नहीं, उसे अपने पास रक्खे रहो। उसे मेरे चिह्न के स्वरूप अपने पास रक्खे रहो। जाओ, जल्दी यहाँ से जाओ; तुम्हें मेरी क़सम है।

केनेथ को उसके अनुरागप्रदर्शन पर बड़ा सन्तोष हुआ। वह उठकर खड़ा हो गया। उधर एडिथ वहाँ से चली गई। केनेथ का हृदय उस समय चिन्ता से व्याप्त था। वह वहाँ से रवाना हुआ। बाहर हवा में आने पर उसे चेत हुआ। इतने में ही उसे चबूतरे की तरफ़ से आती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी। पहले उसने कुत्ते का क्रोध से भूँकना सुना, तत्पश्चात् उसे उसके कराहने का शब्द सुनाई दिया। अपने रोस्तवेल की कराह सुनकर वह हिरन-सा उछल पड़ा और चबूतरे की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि इँग्लैंड का झंडा ग़ायब है। उसका दण्ड वहीं टूटा पड़ा था। उसी के पास उसका स्वामिभक्त कुत्ता मौत के मुँह में जाने की तैयारी कर रहा था।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

संध्या समय जब केनेथ ने झंडे की रक्षा का भार ग्रहण किया तब रिचर्ड सीधा अपने कमरे में जाकर विश्राम करने लगा। यदि और

कोई राजा होता तो वह उस दिन वैसी घटना के हो जाने पर अपने रक्षकों की संख्या बढ़ा देता और अपनी सेना का कुछ भाग अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित रखता। परन्तु इसके विपरीत रिचर्ड उस सन्ध्या को अपने साधारण पहरे को भी उठा दिया। यही नहीं उसने अपने सैनिकों को शराब देकर अपने आरोग्य-लाभ का उत्सव मनाने को उन्हें आज्ञा दे दी।

हकीम महाराज की सेवा में अर्द्धरात्रि तक उपस्थित रहा और इस बीच में उसने दो बार दवा दी। अर्द्धरात्रि के तीन घंटे बाद हकीम महाराज से विदा हुआ और अपने खेमे का मार्ग लिया। रास्ते में उसने कैनेथ के खेमे में उसके स्क्वायर को देखा, वहाँ उसको पता लगा कि कैनेथ झंडा की रक्षा के काम में नियुक्त है। यह जानकर हकीम झंडे के चबूतरे के पास पहुँचा। वहाँ वह कैनेथ को उस दशा में पाया जिसका उल्लेख पिछले अध्याय में हो चुका है।

सूर्योदय का समय था। महाराज रिचर्ड के खेमे के बाहर किसी सैनिक के आने की आहट सुनाई दी। टामस रिचर्ड के पास ही कुत्ते जैसा सजग सो रहा था। परन्तु उसके और कुछ करने की कौन कहे, आहट से यह पूछा—कौन है ?

इसके भी पहले कैनेथ ने बड़े उदास भाव से खेमे में प्रवेश किया।

टामस ने कड़े स्वर में; परन्तु धीरे से कैनेथ को पहचानकर फिर पूछा—कहाँ इस प्रकार से घुसे चले आते हो ?

रिचर्ड भी जाग पड़ा। उसने कहा—टामस ! चुप रहो। सर कैनेथ एक वीर सैनिक है। वह अपने कर्तव्य-पालन का वर्णन करने के

लिए हमारे पास आया है। ऐसे मेहमानों के लिए मेरा खेमा सदा खुला हुआ है। यह कहता हुआ रिचर्ड लेटे से ठिहुने के बल हो गया। उसने पूछा—कहो सर कैनेथ! तुम रात्रिवाले पहरे की चौकसी का हाल बताने आये हो न? तुमने तो खूब सावधानी के साथ पहरा दिया होगा? इँग्लैंड के झंडे का उड़ना ही उसकी रखवाली के लिए पर्याप्त है। उसकी रक्षा के लिए तुम्हारे जैसे नाइटों की ज़रूरत नहीं है।

कैनेथ—मेरा पहरा सावधानी के साथ नहीं हुआ। इँग्लैंड के झंडे को कोई उड़ा ले गया।

रिचर्ड—और तुम इस समाचार को बतलाने के लिए जीवित रह गये! तुम्हारे चेहरे पर ज़रा-सा खरोंच भी नहीं है। तुम इस प्रकार गूँगे की तरह क्यों खड़े हो? साफ़-साफ़ बतलाओ, बादशाहों के साथ मज़ाक करना अच्छा नहीं। यदि तुम झूठ भी कहते हो तो मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ।

कैनेथ—मैं झूठ! खैर मैं इस लाञ्छन को भी सह लूँगा। महाराज! मैंने सच ही कहा है।

इतना सुनते ही रिचर्ड क्रोध से जल उठा। परन्तु उसने तत्क्षण अपने को सँभाल लिया। उसने कहा—देखो तो। इस बुखार ने इसका दिमाग़ खराब कर दिया है। ऐसा नहीं हो सकता। अगर तुम न जा सको तो किसी दूसरे को भेज दो।

इतने में सर हेनरी नेवाइल ने हाँफते हुए आकर बादशाह को सूचना दी कि झंडा ग़ायब हो गया है। जो नाइट उसकी रखवाली के लिए नियुक्त था; शायद वह भी मार डाला गया है; क्योंकि जहाँ झंडे

का दण्ड टूटा पड़ा है, वहां बहुत खून पड़ा हुआ है। किंतु जैसे ही उसकी निगाह कैनेथ पर पड़ी, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—मैं यहाँ किसको अपने सामने खड़ा देखता हूँ ?

रिचर्ड उछल पड़ा और फरसा उठा लिया। उसने कहा—विश्वासघाती को ! और उसे तुम अब विश्वासघाती की मृत्यु मरते देखोगे। यह कहकर उसने फरसे को इस प्रकार घुमाया, मानो वह वार करना चाहता हो।

कैनेथ पत्थर की मूर्ति की नाईं चुपचाप खड़ा रहा। उसका सिर खुला हुआ था, आँखें नीचे भूमि को देख रही थीं। उसके आगे रिचर्ड खड़ा था। मानो वह कैनेथ पर फरसे का वार करना चाहता था; परन्तु फरसे को ज़मीन से टेककर उसने कहा—"नेवाइल ! परन्तु वहां खून पड़ा था। बहादुर स्काट, सुनो ! कहो कि मैंने झंडे की रक्षा करने में चोरों में से दो को मार डाला है। दो न सही एक ही सही। कहो कि मैंने उस पर करारा हाथ जमाया। यह कह देने पर तुम मेरे खेमे से कुशलपूर्वक अपनी अपकीर्ति लिये चले जा सकोगे।

कैनेथ ने दृढ़ता से उत्तर दिया—महाराज ! आपने मुझे झूठा कहा है। यह दोषारोप कर आपने अन्याय किया है। वास्तव में झंडे की रक्षा में केवल एक कुत्ते का खून बहा है, जिसने अपने मालिक की अपेक्षा अधिक स्वामिभक्ति के साथ उस झंडे की रक्षा की, जिसे उसका मालिक छोड़कर चला गया था।

यह सुनते ही रिचर्ड ने अपना फरसा सँभालते हुए कहा—अच्छा अब…; परन्तु इतने में टामस उन दोनों के बीच में आकर खड़ा हो गया।

उसने कहा—महाराज ! ऐसा वहाँ नहीं हो सकता और न यह काम आपके हाथ से होने पायेगा। यही कम भूल नहीं हुई कि एक दिन और रात के लिए झंडे की रक्षा का भार एक स्काट के सिपुर्द किया गया। क्या मैंने पहले ही आपसे निवेदन नहीं किया था कि स्काट लोग कभी झूठे और कभी सच्चे होते हैं ?

रिचर्ड—हाँ, तुमने ऐसा ज़रूर कहा था। मैं मानता हूँ कि तुमने सच कहा था। किंतु आश्चर्य है कि कैनेथ निर्भीक की तरह अपने स्थान पर ज्यों का त्यों खड़ा हुआ है। विश्वासघाती और साहस-हीन वह हो सकता है; परन्तु भयभीत वह तनिक भी नहीं है। यदि उसने ज़रा भी भय दिखलाया होता तो मैंने उसका सिर चूर-चूर कर दिया होता। लेकिन एक निर्भीक और ज़रा भी चूँ तक न करनेवाले पर मैं हाथ नहीं चला सकता।

इसके बाद कुछ समय तक सन्नाटा रहा।

कैनेथ ने कहा—महाराज !

रिचर्ड ने उत्तर दिया—क्या तुम्हारी ज़बान खुल गई। ईश्वर से क्षमा माँगो, वही तुमको क्षमा करेगा; हम तो तुम्हें क्षमा नहीं कर सकते; क्योंकि तुम्हारे कारण इँग्लैंड का अपमान हुआ है। यदि तुम मेरे एकमात्र सगे भाई ही होते तो भी तुम्हें अपने अपराध के लिए क्षमा न मिलती।

कैनेथ—मैं मनुष्य की दया माँगने की बात नहीं कहता, मैं चाहे अभी मरूँ, चाहे आध घंटे बाद। हाँ, मैं आपसे केवल एक प्रार्थना करता हूँ, वह यह कि कुछ कहने के लिए मुझे आप एक क्षणभर का अवसर प्रदान करें।

रिचर्ड ने समझा कि कैनेथ झण्डे के बारे में कोई बात बतलायेगा, इसलिए उसने कहा—अच्छा, कहो।

कैनेथ—मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उसमें केवल महाराज का सम्बन्ध है, अतः मैं केवल आपके ही कानों में यह बात रखना चाहता हूँ।

इस पर रिचर्ड ने टामस और नेवाइल को वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। नेवाइल ने तो उसी क्षण आज्ञा का पालन किया; परन्तु टामस कमरे के बाहर नहीं गया। उसने रिचर्ड से कहा—महाराज, मैं वही करूँगा जो मेरे मन में आयेगा। मैं महाराज को इस झूठे स्काट के साथ अकेले नहीं छोड़ूँगा।

रिचर्ड ने क्रोध से कहा—टामस ! तुमको मेरे पराक्रम पर विश्वास नहीं है !

कैनेथ—कोई हर्ज नहीं। मैं अब देरी नहीं करना चाहता। मैं गिल्सलैंड के लार्ड के सामने ही कहूँगा। वे एक सच्चे आदमी हैं। यह कहकर उसने कहा—महाराज ! आपके चारों ओर राजद्रोह का कुचक्र रचा गया है। और यह विद्रोह सैकड़ों झण्डों की हानि की अपेक्षा आपको अधिक हानि पहुँचायेगा। इसके बाद उसने कुछ ठिठककर कहा—महाराज, कुमारी एडिथ।

रिचर्ड—हाँ, तो कुमारी एडिथ से तुम्हें क्या करना है, उससे इस मामले से क्या मतलब ?

कैनेथ—महाराज ! आपके राजघराने को अपमानित करने के लिए एक स्कीम सोची गई है। कुमारी कैनेथ का सलादीन के साथ विवाहकर सन्धि की जायगी।

रिचर्ड—चुप रहो ! अगर फिर ऐसी बेअदबी की और अपने मुँह से उसका नाम निकाला तो तेरी ज़बान खिंचवा लूँगा। एडिथ का विवाह चाहे ईसाई से हो और चाहे तुर्क से, तुझे क्या मतलब ?

कैनेथ—महाराज ! बेशक उससे मेरा कोई मतलब नहीं है। क्योंकि क्षण भर में सारी दुनिया से मेरा कोई सम्बन्ध न रहेगा। परन्तु मैंने जो कुछ कहा है सो केवल आपको सूचना देने और आपकी मान-रक्षा करने के लिए कहा है। मैं श्रीमान् से कहता हूँ कि यदि आप अपने मन में कुमारी एडिथ का विवाह··

रिचर्ड ने फरसे को सँभालते हुए कहा—उसका नाम न ले, और न उसका खयाल कर।

कैनेथ ने ज़रा ज़ोश में आकर उत्तर दिया—नाम न लूँ ! उसे ध्यान में न लाऊँ ? मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि उसका नाम ही मेरे मुख का अन्तिम शब्द होगा। मेरे मन का अन्तिम विचार उसी का चित्र होगा। मेरे इस नंगे सिर पर अपने बाहु-बल को आजमाकर, देख न लो कि मेरा उसका नाम लेना रोक सकते हो।

रिचर्ड उसके निर्भयतापूर्ण निश्चय के कारण इस बार भी उस पर प्रहार न कर सका। उसने कहा—यह तो मुझको पागल बना देगा।

बीसवाँ परिच्छेद

बाहर कुछ गड़बड़ सुनाई पड़ा। और खेमे के बाहरी भाग से महारानी के आने की सूचना दी गई। इस पर रिचर्ड ने ज़ोर से कहा—

नेवाइल ! उसे रोक लो ! उसे रोक रक्खो ! यह दृश्य स्त्रियों के देखने का नहीं है। अरे ! यह राजद्रोही मुझे इस प्रकार चक्कर में डाले रहा ! उसने टामस से धीरे में कहा—तुम इसे पीछे के द्वार से यहाँ से ले जाओ और इस पर अपनी निगरानी रखना। यह शीघ्र ही मारा जायगा। देखना कि दंड देते समय इसका किसी प्रकार अपमान न किया जाय। वह अपनी सैनिक वेश-भूषा में ही मारा जायगा।

टामस कैनेथ को लेकर रिचर्ड के कमरे से बाहर हुआ और एक दूसरे खेमे में ले गया। वहाँ उसके अस्त्र-शस्त्र ले लिये गये और हथकड़ी-बेड़ी डाल दी गई। जब सारी कार्रवाई हो गई तब टामस ने कहा—महाराज रिचर्ड की आज्ञा है कि तुम्हारा सम्मान के साथ वध किया जाय। उस समय तुम्हारे अस्त्र-शस्त्र न लिये जायँ और तुम्हारा सिर तलवार से अलग किया जाय। उन्होंने प्रसन्न होकर यह भी कहा है कि मृत्यु के समय तुम्हें पादरी का दर्शन भी करा दिया जाय।

कैनेथ—बड़ी कृपा है।

टामस—अच्छा, तो अब तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ।

कैनेथ—मैं तैयार हूँ।

टामस वहाँ से बाहर जाने लगा। परन्तु न जाने क्या सोचकर वह द्वार पर ठहर गया और कैनेथ की ओर देखने लगा। कैनेथ उस समय गम्भीर ध्यान में था। संसार की चिन्ता उसके मन से हट-सी गई थी। उसका यह भाव देखकर टामस लौट आया और कैनेथ के पास आकर उसने उससे कहा—कैनेथ ! तुम अभी नौजवान हो। तुम्हारा पिता अभी जीवित है। क्या तुम्हारे पक्ष में, तुम्हारी सफ़ाई में कुछ नहीं कहा या किया जा सकता ?

कैनेथ—कुछ नहीं। मैंने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। जो झंडा मुझे सौंपा गया था वह ग़ायब हो गया। जल्लाद तैयार हो तो मेरा सिर इस शरीर से अलग होने को हाज़िर है।

टामस—ईश्वर तुम पर दया करे। अच्छा होता यदि मैं ही पहरा देता। एक साधारण आदमी कह सकता है कि इस मामले में कोई भेद है। जहाँ तक मुझे जान पड़ता है, किसी गहरी चाल के द्वारा तुम अपने स्थान से हटाये गये हो। शायद किसी नारी के करुण-क्रन्दन ने तुमको आकर्षित किया हो। कैनेथ! मुझसे अपने हृदय की सच्ची-सच्ची बात कह दो। शान्त हो जाने पर रिचर्ड तुम्हें क्षमा कर देगा। क्या तुम मुझसे कोई बात बतलाना चाहते हो?

उस अभागे नाइट ने अपना मुँह उस दयालु योद्धा की ओर से फेर लिया और कहा—मुझे कुछ नहीं कहना है।

अतएव टामस हार मानकर खेमे से चुपचाप बाहर हो गया।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

वीरवर रिचर्ड की महिषी महारानी बेरेनगेरिया नेवा के राजा की पुत्री थी। अपने काल में वह अत्यन्त सुन्दर स्त्री गिनी जाती थी। उसकी अवस्था यद्यपि इक्कीस बरस की थी, तथापि शरीर की रूप-रेखा से लोग उसे इक्कीस से कम की ही समझते थे। स्वभाव से वह हँसमुख और उदार थी। परन्तु उसके साथ ही वह अधिकार-प्रिय भी थी।

महारानी अपने पति से बड़ा प्रेम करती थी; परन्तु वह उसके रूखे स्वभाव तथा उच्च विचारों के कारण उससे डरती थी। इसके अतिरिक्त वह अपने को उससे बुद्धि में हीन समझती थी। और जब रिचर्ड कुमारी एडिथ से वार्तालाप करता तब उसे अच्छा नहीं लगता था। और रिचर्ड उससे इस कारण बातें करता था कि महारानी की अपेक्षा उसकी बातें अधिक सरस, अधिक मधुर और बुद्धिमत्तापूर्ण होती थीं। परन्तु इस व्यवहार से महारानी एडिथ से ईर्ष्या नहीं करती थी।

यह सब राजमहल की महिलाओं से छिपा न होने से वे बहुधा महारानी को प्रसन्न करने के लिए कुमारी एडिथ की हँसी उड़ाने और उसको बेवक़ूफ़ बनाने का भरसक प्रयत्न किया करती थीं। उन्हें कुमारी एडिथ के प्रति कैनेथ के गुप्त प्रेम का भी पता मिल गया था। इसी लिए वे कभी-कभी कैनेथ की चाल-ढाल, रहन-सहन, अस्त्र-शस्त्रों के सम्बन्ध में आलोचना करके एडिथ को चिढ़ाया करती थीं। अस्तु, महारानी ने रिचर्ड के नीरोग होने की कामना से इंगाद्दी की यात्रा की। इस अवसर पर उस पवित्र स्थान के गिरजे में महारानी की एक दासी ने एडिथ को अपने प्रेमी से गुप्त सङ्केत करते देख लिया था, जिसका भेद उसने महारानी से तुरन्त बतला दिया था। महारानी इस यात्रा से अपने साथ दो बौने लेकर लौटी थीं। जेरूसलेम की पदच्युत महारानी ने उसे इन्हें भेंट में दिया था। इन बेडौल और डरावने बौनों में से एक से महारानी ने कैनेथ के साहस की परीक्षा वहाँ के गिरजे में ली थी, जब वह अकेला रह गया था। अब यह दूसरी बार उसने अपना बौना भेजकर उनसे दिल्लगी की है, जिसका परिणाम भयङ्कर दिखाई देता है।

दूसरे दिन सवेरे जब एडिथ को एक स्त्री से, जिसे उसने हाल-चाल लेने को भेजा था, मालूम हुआ कि झगडा शायद हो गया है और उसके रक्षक का पता नहीं है। तब वह झपटकर महारानी के पास पहुँची और निवेदन किया कि आप अब शीघ्र रिचर्ड के पास जायँ और अपने ठट्ठे के बुरे परिणाम को रोकने में अपने प्रभाव का उपयोग करें।

उसकी बात सुनकर महारानी घबरा गई। परन्तु उसने एडिथ को इधर-उधर की बहुत-सी बातें बनाकर सान्त्वना देने का प्रयत्न किया। उसके बेमतलब की बातों के प्रवाद को बाधा देने की जब एडिथ व्यर्थ चेष्टा कर रही थी तब वहाँ एक स्त्री आई। वह बहुत ही भयभीत थी। उस पर पहली दृष्टि पड़ते ही एडिथ तुरन्त मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर गई होती; यदि उसे अपने पद का खयाल न होता।

उसने कहा—“श्रीमती! बातें करने में देरी न करिए; किन्तु एक आदमी की जान बचाइए; यदि वास्तव में बचाई जा सकती हो।”—यह कहते समय उसका गला भर आया। आगन्तुक स्त्री ने भी उसके कथन का समर्थन किया।

महारानी ने उत्तर दिया—मैं जाने को तैयार हूँ। परन्तु यदि रिचर्ड इस समय प्रसन्न न होगा तो मेरी उससे कुछ कहने की हिम्मत न पड़ेगी। अच्छा मैं जाती हूँ। मेरा अमुक गहना और कपड़े तो लाओ।

एडिथ ने क्रोध से कहा—आप तो अपने साज-शृङ्गार के फेर में हैं। उधर एक की जान जोखिम में है। ऐसा है तो आप आराम करें। मैं महाराज के पास जाऊँगी। यह कह वह कमरे के बाहर निकलने को थी कि महारानी ने चिल्लाकर कहा—उसे रोक लो।

उस आगन्तुक स्त्री ने धीरे से एडिथ का हाथ पकड़कर कहा—एडिथ, तुम्हारा जाना ठीक नहीं है। और महारानी! मुझे विश्वास है, आप जायँगी और अब देर नहीं करेंगी। यदि एडिथ अकेली जायगी तो महाराज और भी नाराज हो जायँगे; और उनका क्रोध एक ही जान लेकर न ठंडा होगा।

महारानी ने कहा—हाँ, मैं जाती हूँ। अतएव लाचार होकर महारानी जल्दी चलने को तैयार हो गई। वह एडिथ तथा अन्य सहेलियों के सहित सिंहराज रिचर्ड के खेमे की ओर रवाना हुई।

बाईसवाँ परिच्छेद

रानी के एकाएक प्रवेश पर रिचर्ड को आश्चर्य हुआ, साथ ही नाराज़ी भी हुई। वह उस समय अपने पलङ्ग पर लेटा था। और उसके सामने आज्ञा की प्रतीक्षा में जल्लाद चुपचाप खड़ा था। महारानी सीधी रिचर्ड के पलङ्ग के पास जाकर घुटने टेककर बैठ गई और राजा का दाहना हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर और उसे मुँह के पास लाकर चूम लिया। रिचर्ड ने पूछा—बेरेंगेरिया, क्या चाहती हो?

रानी ने कहा—उस आदमी को यहाँ से हटा दो। उसको देखकर मुझे डर लगता है। रिचर्ड ने उसे वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी, जिस पर वह वहाँ से चला गया।

उसके चले जाने के बाद रिचर्ड ने पूछा—कहो, इतना सवेरे और बेमौक़े तुम मेरे पास क्यों आई हो।

रानी ने कहा—महाराज, क्षमा कीजिए ! क्षमा कीजिए !

रिचर्ड—क्षमा ! किस बात के लिए ?

महारानी—सबसे पहले इस बात के लिए कि मैं आपकी आज्ञा के बिना यहाँ चली आई हूँ। यह कहकर वह रुक गई।

रिचर्ड—यह तो कोई बात नहीं है। इसमें क्षमा कैसी ? हाँ, मैं नहीं चाहता था कि तुम यहाँ आकर अपने स्वास्थ्य को जोखिम में डालो क्योंकि यहाँ बीमारी रही है।

महारानी—किंतु अब तो आप अच्छे हैं न ? अच्छा यह बतलाइए कि क्या आप मुझको एक वरदान देने में इनकार तो नहीं करेंगे ?

रिचर्ड—हाँ, जो वीर तुमको सर्वसुन्दरी स्वीकार करने से इनकार करने का साहस दिखायेगा उस पर अपने भाले का वार करने के लिए काफ़ी चंगा हूँ।

महारानी—तब तो मुझे एक वरदान अवश्य देंगे।

रिचर्ड—कहो क्या चाहती हो ?

महारानी—इसी अभागे स्काट नाइट···

रिचर्ड ने कठोरता से कहा—उसके सम्बन्ध में मत कुछ कहो। वह शीघ्र ही मरता है। उसके भाग्य का निबटारा हो गया।

महारानी—नहीं महाराज ! वह झंडा तो केवल रेशम का ही था। मैं दूसरा झंडा तैयार कर दूँगी, स्वयं अपने हाथ से उसे काढ़ दूँगी और उसमें मोती टाँक दूँगी।

रिचर्ड ने उसे बीच में रोककर क्रोध से कहा—तुम नहीं समझतीं कि तुम क्या कह रही हो। मोती ! क्या समग्र प्राच्य के मोती इँग्लैंड

के अपमान का परिहार कर सकेंगे ? जाओ और अपने पद, काल और स्थान का ज्ञान प्राप्त करो। इस समय हमें वह काम करना है जिसमें तुम्हारी राय और तुम्हारे हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है।

महारानी ने एडिथ के कान में कहा—सुनती हो एडिथ ! हमारी बातों से महाराज नाराज़ ही होंगे।

इस पर एडिथ ने आगे आकर कहा—महाराज ! मैं आपसे दया की प्रार्थना नहीं करती। मैं चाहती हूँ कि आप न्याय करें। महाराज ! यह सैनिक, जिसे आपने मौत की सज़ा दी है, दूसरों के द्वारा जाल में फँसाया गया था, इसी कारण वह अपने कर्तव्य से च्युत हो गया। श्रीमान् उसको धोखा दिया गया है। उससे जान-बूझकर ग़लती नहीं हुई। सच तो यह है कि उसके पास खबर भेजी गई कि एडिथ ने तुमको अपने खेमे में बुलाया है। इसी समय चलो। बस, वह वहाँ से उसी दम चल पड़ा और उसकी अनुपस्थिति में झंडा ग़ायब हो गया। श्रीमान् स्वयं विचार करें कि इसमें उसका क्या दोष है ? आप जानते ही हैं कि इस ईसाई छावनी में ऐसा कोई नाइट नहीं है जो प्लैंटाजेनेट जैसे राजघराने की कुमारी का आदेश पाकर अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होगा।

रिचर्ड ने क्रोध से अपने ओठ काटते हुए कहा—तब क्या तुमने उससे भेंट की ? क्या महाराज हेनरी की, तुम्हारे इस कार्य से, यश की वृद्धि होगी ? कुछ परवा नहीं। मैंने उसका सिर उड़ा देने का हुक्म दे दिया है।

एडिथ—आप उसको हरामी कहते हैं ! कहिए। वह मेरा प्रेमी

था और अत्यन्त सच्चा प्रेमी था। किंतु न तो उसने कभी मुझसे भेंट करने की और न बातचीत करने का ही प्रयत्न किया है। वह उसी प्रकार के दर्शनों से सन्तुष्ट रहा है जैसे लोग साधु-सन्तों का करके सन्तुष्ट होते हैं और इस बात के लिए एक वीर, स्वामिभक्त और भले नाइट को प्राण-दण्ड दिया जायगा।

महारानी ने धीरे से कहा—एडिथ, चुप रहो। तुम तो अपनी बातों से महाराज को और भी रुष्ट कर रही हो।

एडिथ—मुझे उसकी परवाह नहीं है। उन्हें इस योग्य नाइट पर अपनी इच्छा पूरी कर लेने दो। जिस एडिथ के लिए उसे मरना होगा वह उसकी स्मृति के लिए रोना जानती है। मैं उसकी जीवितावस्था में पत्नी नहीं बन सकी। क्योंकि हम दोनों की पद-मर्यादा में बड़ा भारी अन्तर था। परन्तु मृत्यु छोटे-बड़े को एक में मिला देती है। अब मेरा परिणय उसकी क़ब्र से होगा। मैं उसकी पत्नी बनकर रहूँगी। रिचर्ड उसे और अधिक क्रोध के साथ उत्तर देने को था कि इतने में जल्दी से एक पादरी उसके कमरे में घुस आया। बादशाह के सामने घुटनों के बल होकर कैनेथ की सिफ़ारिश की और कहा कि उसका मृत्युदण्ड रोक दिया जाय। उसने यह भी कहा कि महाराज! मैंने गिल्सलैंड के लार्ड से तब तक के लिए ठहर जाने के लिए कहा है जब तक मैं आपसे उसके सम्बन्ध में विनय न कर आऊँ। महाराज! उस अपराधी नाइट ने मुझसे एक ऐसी गुप्त बात कही है जिसे सुनकर आप स्वयं उसको प्राण-दण्ड न देंगे।

रिचर्ड—वह कौन-सी गुप्त बात है! मैं सुनना चाहता हूँ।

पादरी—महाराज, इंगाद्दी की गुफ़ा में मैंने अपने शरीर को बीस बरस तक तपाया है। सो क्या इसी लिए कि मैं किसी पुरुष की गुप्त बातें प्रकाशित कर उसके साथ विश्वासघात करूँ।

रिचर्ड—तो क्या तुम्हीं वह साधु हो, जिसके पास युद्ध-समिति के सदस्यों ने इस अपराधी को सलादीन से सन्धि करने के लिए मेरी राय लिये बिना ही भेजा था? इस कारण तो उसका वध और पहले हो जाना चाहिए था।

पादरी—महाराज! आप वह बुराई करने को तैयार हैं जिसके लिए बाद को आप दुखी होंगे।

रिचर्ड ने ज़मीन पर पैर पटककर कहा—इँग्लैंड के अपमान का बदला अभी तक नहीं चुकाया जा सका। पादरी तथा महिलाओ! यहाँ से जाओ। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ, मुझे ऐसी आज्ञा दे देनी पड़ेगी। जिनको सुनकर तुम सब अप्रसन्न होगे।

'शपथ न लीजिए'—यह कहता हुआ हकीम भी इतने में घुस आया।

रिचर्ड—हकीम जी, अच्छा आइए।

हकीम—महाराज! मैं आपसे एक गम्भीर विषय के सम्बन्ध में इसी समय बात-चीत करने की आज्ञा चाहता हूँ।

इस पर महाराज ने कहा—बैरेनगेरिया, तुम यहाँ से जाओ। एडिथ तुम भी जाओ। पर ये बातें फिर कहने न आना। मेरा हुक्म है कि दोपहर तक प्राण-दण्ड न दिया जायगा। जाओ, अब शान्त होओ। एडिथ! अगर तुम बुद्धिमान् हो तो जाओ।

यह कहकर उसने ऐसी कड़ी दृष्टि से देखा कि उस साहसी

कुमारिका का भी हृदय काँप उठा होगा। महिलाओं और पादरी ने महाराज रिचर्ड की आज्ञा का पालन किया।

तेइसवाँ परिच्छेद

रिचर्ड ने हकीम से कहा—कहिए हकीम जी! कैसे चले?

हकीम—महाराज! मैं केवल इतना चाहता हूँ कि नाइट का अपराध क्षमा किया जाय और उसे प्राण-दण्ड न दिया जाय।

इस पर रिचर्ड उत्तेजित-सा होकर अपने खेमे के भीतर इधर-उधर टहलने लगा, कुछ देर के लिए चुप हो गया और अपने मन में सोचने लगा—ज्योंही यह खेमे के भीतर आया था मैं जान गया था कि किस लिए आया है। यहाँ एक ग़रीब की जान है जिसे न्याय से विनष्ट कर देने का हुक्म है। मैं बादशाह और सैनिक हूँ, हज़ारों का युद्ध में वध किया है; पर इस पर मेरी कुछ नहीं चलती, यद्यपि इसने मेरे अस्त्रों के, घराने के और मेरी रानी के सम्मान पर बट्टा लगा दिया है। परन्तु इसका जीवन बचाने के लिए सभी प्राणपण से चेष्टा कर रहे हैं, मेरी स्त्री, सम्बन्धी, पादरी और हकीम सभी ज़ोर दे रहे हैं। कैसी हँसी की बात है!

हकीम पहले तो रिचर्ड को आश्चर्य से देखता रहा; पर जब वह शान्त दिखाई दिया तब उसने कहा—महाराज! हँसनेवाले मुख से प्राण-दण्ड का आदेश नहीं होना चाहिए। क्या मैं आशा करूँ कि आपने उस नाइट को जीवन-दान दे दिया है?

रिचर्ड—इसके बदले में तुम एक हज़ार क़ैदी छुड़वा लो और अपने इतने देश-बन्धुओं को अपने-अपने घर पहुँचवा दो। मैं अभी हुक्म देने को तैयार हूँ। परन्तु इसके जीवन-दान से तुम्हारा कोई लाभ नहीं, इसे तो प्राण-दण्ड का हुक्म दे दिया गया है।

हकीम—महाराज! जिस प्रकार आप न्याय करना जानते हैं, उसी प्रकार आप क्षमा करना भी जानते हैं। यदि महाराज इस सैनिक को जीवन-दान देंगे तो अन्य अनेक के प्राणों की भी इससे रक्षा होगी।

रिचर्ड—हकीम जी, आप क्या कहते हैं, ज़रा साफ़-साफ़ कहिए!

हकीम—महाराज! जिस औषधि के द्वारा आप तथा आपकी तरह और रोगी अच्छे किये गये हैं वह रक्षा-कवच है। मैं तो उसका प्रयोग भर करना जानता हूँ। सारी करामात उसी की है।

रिचर्ड—निस्सन्देह यह एक अद्‌भुत और विलक्षण वस्तु है। मैंने तो ऐसी औषधि न कभी सुनी और न कभी देखी।

हकीम—इस तरह के कवच बनाये जा सकते हैं; परन्तु जो साधु इस विधि से रोगियों का रोग दूर करता है उसको कड़ी तपस्या और उपवास करने पड़ते हैं। परन्तु यदि प्रतिमास इस प्रकार तैयार किये गये कवच का उपयोग कर कम से कम बारह आदमियों के प्राणों की रक्षा न की गई तो उसकी दिव्य शक्ति का अन्त हो जायगा। यही नहीं; किन्तु जिस पछले रोगी पर इसका प्रयोग होगा वह तथा हकीम दोनों पर तत्काल कोई न कोई विपत्ति आयेगी और साल भर में उनकी मृत्यु हो जायगी। इसी से मैं एक आदमी की जान बचाना चाहता हूँ, जिससे निश्चित समय के भीतर उक्त संख्या पूरी हो जाय।

रिचर्ड—छावनी के भीतर जाओ। तुम्हें हज़ारों रोगी मिल जायँगे। किसी को भी अच्छा कर देना। बारह की संख्या पूरी हो जायगी। पर मेरे जल्लाद को उसके रोगियों से क्यों वञ्चित करते हो? मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि एक अपराधी को प्राण-दण्ड से मुक्त कर देने से तुम्हारी इस जादूभरी ओषधि की कथा से क्या सम्बन्ध है?

हकीम—जब श्रीमान् यही नहीं समझ सके कि पानी के एक बूँद से आप किस प्रकार चंगे हो गये तो इस ओषधि के सारे रहस्यों को कैसे समझ सकते हैं। अतएव, आपके लिए इतना ही काफ़ी है कि आप मेरी प्रार्थना से इस मनुष्य को क्षमा-दान कर दें। श्रीमान अपने और अपने इस नौकर को एक घोर विपत्ति से बचा लेंगे।

रिचर्ड—मैं तुम्हारे इस कवच आदि के विरुद्ध कुछ नहीं कहता; परन्तु तुमको जानना चाहिए कि इस समय तुम इँग्लैंड के रिचर्ड से बातें कर रहे हो। तुम विपत्ति आने आदि का भय दिखाकर मुझको बेवक़ूफ़ नहीं बना सकते। रिचर्ड को शुभ-अशुभ, शकुन-अपशकुन आदि बातों पर विश्वास नहीं है।

हकीम—तो भी मैं कहना चाहता हूँ कि आपके इस नौकर ने कोई झूठी बात नहीं कही है। महाराज! सोचिए तो कि आप मारना चाहें तो सैकड़ों को मार सकते हैं; पर किसी आदमी को नीरोग नहीं कर सकते। आप जिसका चाहें सिर कटवा सकते हैं; परन्तु इतनी सामर्थ्य आपमें नहीं है कि किसी की दाँत की पीड़ा को अच्छा कर दें।

रिचर्ड—बस बहुत हो गया! तुम एक हकीम भर हो, और हकीम

की तरह बातचीत करो। तुम मेरे मंत्री या सलाहकार नहीं हो। इससे होश में होकर बातें करो।

अब तक हकीम बड़ी नम्रता से तथा रिचर्ड के उच्च पद एवं सम्मान का लिहाज़ करके बातचीत कर रहा था; परन्तु रिचर्ड की रुखाई देखकर उसने उद्दण्डता के साथ कहा—क्या इँग्लैंड के महाराज को अपने प्राणरक्षक के साथ इसी तरह पेश आना चाहिए ? यदि बात ऐसी ही है, तो आप सुन लें कि योरप और एशिया के प्रत्येक राज दरबार में जहाँ कहीं बीन बाजा बजता है और तलवार धारण की जाती है, जहां कहीं मान-मर्य्यादा की रक्षा होती है और अपयश की भर्त्सना की जाती है, वहां और संसार के कोने-कोने में मैं आपको अकृतज्ञ बताकर आपकी निन्दा करूँगा। और ऐसे देश जहाँ अभी आपका नाम नहीं हुआ है, वे भी आपकी इस करतूत से परिचित हो जायँगे।

रिचर्ड के हृदय में ये वाक्य तीर की तरह चुभ गये। उनसे न रहा गया। वह उठकर हकीम की ओर झपटा। तब हकीम ने कहा—हाँ, हाँ, प्रहार कीजिए। मेरे शब्दों की अपेक्षा स्वयं आपका कार्य्य आपकी करतूत को अच्छी तरह प्रकट कर देगा।

रिचर्ड क्रोध के साथ पहले की भाँति फिर खेमे में टहलने लगा। अन्त में उसने कहा—अकृतज्ञ और निर्दयी ! डरपोक और विधर्मी भी ! अच्छा हकीम तुमने अपना पुरस्कार चुन ही लिया है। यदि तुमने मेरे मुकुट के अमूल्य रत्न माँगे होते तो उनके देने से मैं इनकार न करता। खैर, इस स्काट को लो, मैं इसे तुम्हारे सिपुर्द करता हूँ। इस आदेश-पत्र को दिखलाकर तुम उसे प्राप्त कर सकोगे। उसको अपना क्रीत दास

बनाकर रखना और अपनी इच्छा के अनुसार उसके साथ व्यवहार करना; परन्तु उसे सावधान कर देना कि भूलकर भी वह मेरी नज़रों में न गुज़रे।

हकीम—मैंने सब सुन और समझ लिया है महाराज! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

रिचर्ड—उससे कह देना कि वह भविष्य में मेरे सामने भूलकर भी न आये। कहो, और भी कोई बात है, जिसमें मैं तुमको ख़ुश करूँ?

हकीम—महाराज! आपकी उदारता से मेरी इच्छा का पात्र पूरा भर गया है। मुझे अब और कुछ न चाहिए?

इस पर रिचर्ड ने हँसते हुए कहा—जिस बात से तुम प्रसन्न होते, यदि मैं जानता तो बड़ी उमङ्ग से तुम्हारी इच्छा पूरी करता।

हकीम—महाराज! मुझे अपने विजयी हाथ को स्पर्श करने की आज्ञा दीजिए, जिससे यदि मुझे भविष्य में फिर कभी किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता हुई तो निस्संकोच माँग सकूँ।

रिचर्ड—स्वीकार है। लेकिन, मुझसे अपराधियों की मुक्ति की प्रार्थना न करना।

हकीम—"महाराज युग-युग जियें" यह कहकर, यथाविधि अभिवादन कर चला गया।

चौबीसवाँ परिच्छेद

महाराज रिचर्ड को वह खबर सुनाने के लिए टायर के बड़े पादरी दूत बनाकर भेजे गये, जिनको यदि कोई दूसरा शख्स सुनाता तो महाराज

की क्रोधाग्नि बिना भड़के कभी न रह सकती। पादरी की सूचना से उसे पता चला कि सलादीन अपनी सेनायें एकत्र कर रहा है और योरप के राजे-महाराजे युद्ध से ऊबकर उससे विमुख हो गये हैं। अपने देशों को लौट जाने का विचार सबसे पहले फ्रांस के फ़िलिप ने प्रकट किया। उसकी प्रजा शैम्पेन के अर्ल ने भी वही निश्चय ग्रहण किया। आस्ट्रिया का ल्यूपोल्ड भी ऐसे ही अवसर की घात में था। अन्य नृपतियों ने भी वैसे ही विचार प्रकट किये। अतएव यह स्पष्ट था कि केवल रिचर्ड ही रह गया था और यदि वह रहना चाहे तो उसे उन वालंटियरों से मदद मिलती जो अँगरेज़ी सेना में शामिल हो जाते। इनके सिवा मान्टी सर्ट के कानरेड तथा टेम्पल और सेंट जान की श्रेणी के नाइटों की सहायता मिलने की आशा थी।

रिचर्ड को अपनी सारी स्थिति का पता लग गया। एक बार अपना क्रोध प्रकट करने के बाद वह शान्त होकर चुप बैठा रहा और अपना सिर झुकाये पादरी की बातें सुनता रहा। यहाँ तक कि उसने उस समय भी हस्तक्षेप न किया जब पादरी ने यह कहा कि स्वयं रिचर्ड के दुराग्रह से ही योरप के राजे युद्ध से विमुख हुए हैं।

रिचर्ड ने जवाब दिया—पादरी साहब! क्रास का यह झंडा या तो जेरूसलेम के कँगूरों पर फहरायेगा या मेरी क़ब्र के ऊपर ही गाड़ा जायगा।

पादरी—महाराज! आप कर सकते हैं। परन्तु इस बात में काफ़ी गौरव है कि यदि सलादीन से ऐसी शर्तें करा ली जायँ कि वह पवित्र गिरजे को हम लोगों को लौटा दे, पवित्र तीर्थ का रास्ता यात्रियों के लिए

खोल दे और रिचर्ड को जेरूसलेम का संरक्षक राजा की पदवी प्रदान कर हमारे पवित्र नगर की संरक्षा का विश्वास हमें करा दे।

रिचर्ड—सो कैसे हो सकता है? पवित्र नगर-संरक्षक राजा मैं? किंतु सलादीन तो अब भी अपना हक़ क़ायम रखने का प्रस्ताव करता है।

पादरी—शक्तिशाली रिचर्ड के संयुक्त राजा और प्रतिज्ञाबद्ध मित्र के रूप में विवाह-द्वारा सम्बन्ध स्थापित कर...

रिचर्ड—क्या कहा? विवाह-द्वारा! हैं! मैं क्या सोच रहा हूँ? एडिथ का विवाह सलादीन के साथ! क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ? अथवा यह बात किसी ने मुझसे कही है। क्या स्काट ने, हकीम ने या उस साधु ने इस बात का मुझसे संकेत किया था? मुझे याद नहीं।

पादरी—जहाँ तक मुझे प्रतीत होता है साधु ने ही कहा होगा; क्योंकि उसने इस सम्बन्ध में अधिक परिश्रम किया है।

रिचर्ड ने क्रोध के साथ कहा—मेरे सम्बन्धी का विवाह एक विधर्मी के साथ!

उसका क्रोध कम करने के लिए पादरी ने कहा—इस सम्बन्ध में पहले पोप की सम्मति लेनी आवश्यक है। वह साधु रोम में प्रसिद्ध भी है। वही इस विषय की बातचीत करेगा।

रिचर्ड—कैसे! पहले मेरी सम्मति दिये बिना ही?

शान्त करने के विचार से पादरी ने कहा—कदापि नहीं। केवल आपकी विशेष स्वीकृति से।

रिचर्ड—एक विधर्मी के साथ मेरे सम्बन्ध की कुमारी के विवाह के सम्बन्ध में मेरी स्वीकृति! ख़ैर, कहो, मैं धैर्य के साथ सब बातें सुनूँगा।

रिचर्ड की बात सुनकर पादरी के हर्ष का ठिकाना न रहा। उसने बड़े उत्साह से बतलाया कि सलादीन और एडिथ का पाणिग्रहण हो जाने से समस्त ईसाई-मण्डल का कितना और कैसे हित होगा। अन्त में उसने कहा कि यह भी सम्भव है कि इस विवाह के द्वारा सलादीन अपना धर्म छोड़कर ईसाई हो जाय।

इस पर रिचर्ड ने पूछा—क्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूप से कभी सलादीन ने ईसाई होने की इच्छा प्रकट की है? यदि उसने ऐसा किया है तो इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मैं अपने सम्बन्ध की कुमारी का, चाहे वह मेरी बहन ही क्यों न हो, उसके साथ सहर्ष विवाह कर सकता हूँ।

पादरी—सलादीन ने हमारे ईसाई उपदेशकों के उपदेश सुने हैं। मैंने तथा दूसरों ने भी उसे उपदेश किया है। वह बड़े धैर्य से सुनता है और शान्ति से सुनता है। इससे अनुमान कर सकते हैं कि वह ईसाई-धर्म में लाया जा सकता है। इंगाद्दी के साधु को भी इस बात का विश्वास है कि यह विवाह तुर्क को ईसाई-धर्म में लाने का एक साधन होगा।

रिचर्ड पादरी की बातें मुँह नीचा किये हुए दुख के साथ सुनता रहा। अन्त में उसने कहा—मैं नहीं कह सकता कि मुझको क्या हो गया है। समय ने कितना पलटा खाया है। एक समय ऐसी सन्धि का प्रस्ताव मुझसे कोई करता तो मैं उसे तत्काल मार गिराता। किंतु आज वही बात मेरे कानों को विचित्र नहीं मालूम पड़ रही है। मैं सलादीन से सन्धि क्यों न कर लूँ। सलादीन

बहादुर, न्यायी और दयालु है, अपने योग्य शत्रु के साथ उचित व्यवहार करना जानता है; जब कि योरप के राजे अपने मित्रों का साथ छोड़ रहे हैं और धर्म तथा वीरता से विमुख हो रहे हैं। खैर, मैं एक बार फिर राजाओं को एकत्र करने का प्रयत्न करूँगा। यदि मैं असफल हुआ तो मैं आपसे फिर सम्मति लूँगा। ध्यान रहे कि मैं आपके प्रस्ताव को इस समय न तो स्वीकार ही करता हूँ और न अस्वीकार ही। अच्छा मैं चलता हूँ। आप कहते हैं कि रिचर्ड अभिमानी और जल्दबाज़ है, परन्तु आप शीघ्र देखेंगे कि रिचर्ड कितना विनीत है।

यह कहकर पादरी साहब के साथ रिचर्ड ने कौंसिल में सम्मिलित होने के लिए शीघ्र अपने ख़ेमे से प्रस्थान किया।

पचीसवाँ परिच्छेद

सभा-भवन में बैठे हुए समस्त राजा महाराज रिचर्ड की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसके आने में जो देरी हो रही थी उसका अनुचित लाभ उठाने में उसके शत्रु व्यस्त थे। वे उसके अभिमान तथा दर्प के दृष्टान्तों का उल्लेख कर रहे थे। यहाँ तक कि उन्होंने इस देरी को भी उसके अभिमान का ही एक प्रमाण ठहराया।

उन लोगों ने आपस में यह तय कर लिया कि जब रिचर्ड यहाँ आये तब उसका उचित से अधिक स्वागत न किया जाय। किन्तु जब उन लोगों ने रिचर्ड को सभा-भवन में प्रवेश करते हुए देखा, तब वे

अपने निश्चय को भूल गये और सबों ने खड़े होकर उसका स्वागत किया। उन्होंने एकस्वर में ईश्वर से महाराज रिचर्ड की रक्षा-कामना घोषित की।

रिचर्ड ने सबको धन्यवाद दिया और कहा—मुझे हर्ष है कि मैं अपने बन्धुओं के बीच फिर आ उपस्थित हुआ।—इस प्रकार धन्यवाद देने के बाद उसने कहा—मैं आप लोगों से इस समय कुछ निवेदन करना चाहता हूं, यद्यपि मेरे इस काम से उस मन्त्रणा के कार्य में कुछ देरी हो जायगी जिसे करने को हम सब लोग यहां एकत्र हुए हैं।—उसके ऐसा कहने पर सब राजे अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और सभा-स्थल में सन्नाटा छा गया। रिचर्ड ने कहा—आज एक धार्मिक त्योहार का दिन है। अतएव हम लोगों को शुद्ध मन से अपनी-अपनी ग़लतियां को क़बूलकर परस्पर का मनोमालिन्य दूर कर देना चाहिए। हे राजाओ और इस पवित्र युद्ध के प्रवर्तको! रिचर्ड एक योद्धा है। उसका हाथ उसकी जीभ की अपेक्षा अधिक मुस्तैद है। उसकी जीभ अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कठोर भाषा की आदी है। अतएव उसके मुख से जल्दी में निकल गई किसी बात के कारण, या उसके ऐसे कार्यों से जो विचारकर न किये गये हों, आप लोगों को पेलेस्टाइन के उद्धार के कार्य से विमुख नहीं होना चाहिए। यदि रिचर्ड से आपमें किसी को कुछ धक्का पहुँचा हो तो वह उसका प्रतिकार करने के लिए तैयार है। ऐ मेरे भाई फ़्रांस-नरेश! क्या मैं ऐसा अभागा हूँ! आप ही बतायें कि मैंने आपके साथ अन्याय किया है?

फ़िलिप ने राजसी धज से उत्तर देते हुए कहा—फ़्रांस-नरेश को इँगलैंड-नरेश से किसी बात की कोई शिकायत नहीं है।

इस पर रिचर्ड ने आस्ट्रिया के आर्क-ड्यूक के पास बेधड़क जाकर कहा—हाँ, आस्ट्रिया के नाराज़ होने का कारण है। वह इँग्लैंड की शिकायत कर सकता है। इसी प्रकार इँग्लैंड को उससे है। अतएव इस अवसर पर हम दोनों को परस्पर क्षमा करना चाहिए जिससे योरप में शान्ति विराजे और हम लोगों का मनोरथ सफल और पूर्ण हो। परन्तु ल्यूपोल्ड को इँग्लैंड का झण्डा लौटा देना चाहिए, और फिर रिचर्ड भी आस्ट्रिया के झण्डे का जल्दी में अपमान कर डालने के लिए खेद प्रकट करेगा।

ल्यूपोल्ड नीचे मुख किये हुए रुष्ट और असन्तुष्ट चुपचाप खड़ा रिचर्ड की बातों को सुन रहा था। इस पर आस्ट्रिया का पक्ष लेकर जेरूसलेम के पैट्रियार्क ने कहा—मैं शपथ लेकर कहता हूँ कि इँग्लैंड के झण्डे में आर्क-ड्यूक का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कोई सम्बन्ध नहीं है।

यह सुनकर रिचर्ड ने कहा—तब तो हमने आर्क-ड्यूक के साथ और भी अधिक अन्याय किया। इसके लिए मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ। और मेल करने को मैं अपना हाथ आगे बढ़ाता हूँ। परन्तु ड्यूक ने हाथ नहीं मिलाया। तब रिचर्ड ने कहा—ल्यूपोल्ड तो मुख से बोलते तक नहीं! अब से हम दोनों न तो शान्ति-काल में मित्र हैं और न युद्ध-काल में शत्रु। 'अच्छा यही सही।'—यह कहकर रिचर्ड ने ल्यूपोल्ड की ओर से अपना मुँह फेर लिया। इसके बाद उसने कहा—शैम्पेन के श्रेष्ठ अर्ल, मांट सेरट के मार्किस, टेम्पलर्स के वीर ग्रैंड मास्टर, मैं आप लोगों के सामने अपना अपराध स्वीकार करता हूँ और उसके

लिए पश्चात्ताप करता हूँ। क्या आपमें से कोई, मुझ पर और कोई अभियोग लगाता है ?

लड़ाइयों करनेवाले मार्किस ने कहा—इस बात को छोड़कर मैं तो और कोई नहीं जानता कि इँग्लैंड-नरेश ने अपने ग़रीब भाइयों से इस युद्ध के जीतने का सारा यश छीन लिया है जिसे प्राप्त करने की उन्हें इस युद्ध में आशा थी।

ग्रैंड मास्टर ने कहा—जो दोष मैं आपके सिर मढ़ सकता हूँ वह मार्किस के बनाये हुए दोष से अधिक गम्भीर है। यद्यपि मुझ जैसे सैनिक पादरी को इतने राजाओं के चुप रहते कुछ कहना शोभा नहीं देता। तथापि पीठ पीछे बुराई करने की अपेक्षा साफ़-साफ़ सामने कह देना मैं अधिक अच्छा समझता हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि आप (रिचर्ड) बड़े बहादुर और योग्य नृपति हैं, तो भी हमें इस बात से दुःख होता है कि आप सर्वदा हम पर अपना प्रभुत्व-सा प्रकट करते रहते हैं। जो स्वाधीन राजाओं को स्वीकार नहीं है। आपने हम लोगों से साफ़-साफ़ खुलकर कहने का अनुरोध किया है, इसलिए सच्ची बात के सुनने से आपको न क्रोधित होना चाहिए और न आश्चर्य ही प्रकट करना चाहिए। क्योंकि यह बात उसने कही है जिसके लिए सांसारिक आडम्बर वर्जित है।

जब पादरी उसके व्यवहार पर इस प्रकार स्पष्ट आक्रमण कर रहा था उस समय रिचर्ड का मुँह लाल हो उठा। जब पादरी का वक्तव्य समाप्त हो गया तब सबने उसका समर्थन किया। रिचर्ड को क्रोध और लज्जा दोनों हुए। परन्तु उसने क्रोध करना उचित नहीं समझा।

उसने कहा—क्या ऐसा भी है ! क्या हमारे बन्धुओं को हमारी

स्वाभाविक भूलों के कारण दुःख हुआ है ? कभी-कभी हमने बिना सलाह किये ही आदेश दिये हैं। मैं नहीं जानता था कि मेरे ऐसा करने से आप लोग बुरा मान जायँगे, यहाँ तक कि अपने कर्तव्य-पथ से कार्य की समाप्ति के समय विमुख हो जायँगे। मैं विजय किये हुए नगर का नामकरण अपने नाम पर करता। परन्तु राज्य तो मैंने दूसरों को ही सौंप दिया है। यदि मैंने युद्ध या धावे की जल्दी में दूसरे के सैनिकों पर अपना हुक्म चलाया है तो मैंने उनके साथ अपने सैनिकों जैसा ही व्यवहार किया है और उनके खाने-पीने और दवा-दारू का प्रबन्ध भी किया है जो उनके राजा उनके लिए नहीं प्रस्तुत कर सके। इन बातों के याद दिलाने में मुझे लज्जा लगती है। खैर, अब आप भविष्य की चिन्ता करें। आपको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि रिचर्ड का अभिमान, क्रोध या महत्त्वाकांक्षा आप लोगों के उस मार्ग में बाधा न देगी, जिस पर आने को धर्म और यश आपको आह्वान करता है। मैं स्वेच्छा से सैन्य-संचालन का सारा अधिकार, यहाँ तक कि अपनी सेना को भी आप लोगों के सपुर्द कर दूँगा। जिस राजा को चाहें, सेनापति बना दें। अथवा यदि आप लोग इस युद्ध से थक गये हों तो अपनी-अपनी सेनाओं के दस-पंद्रह हज़ार सैनिक मेरे पास छोड़ जायँ, जिनकी सहायता से मैं आपकी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा। अन्त में जब विजय प्राप्त करूँगा तब मैं जेरूसलेम के फाटक पर रिचर्ड का नाम नहीं; किन्तु उन उदार राजाओं के नाम अंकित किये जायँगे जिन्होंने रिचर्ड के विजय के साधन प्रदान किये हैं।

रिचर्ड के इस निश्चयपूर्ण भाषण ने राजाओं पर जादू-सा प्रभाव

डाला, वे फिर उत्साहपूर्ण हो उठे, उनका जोश उमड़ पड़ा। एक स्वर से वे सब ज़ोर-ज़ोर से कहने लगे—आगे बढ़ो रिचर्ड ! आगे बढ़ो ! हमें आगे ले चलो—जेरूसलेम को—हाँ जेरूसलेम को। ईश्वर की यही इच्छा है। नहीं, नहीं, ईश्वर की यही आज्ञा है।

इसके बाद फिर किसी ने कुछ न कहा। जेरूसलेम की ओर समस्त सेना क्षणिक सन्धि की समाप्ति के बाद उमड़ चली।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

धर्म-युद्ध में आये हुए राजाओं में युद्ध जारी रखने के सम्बन्ध में एकता स्थापित करने के बाद रिचर्ड का ध्यान झंडे के ग़ायब हो जाने की परिस्थिति के जाँचने तथा कैनेथ और एडिथ के सम्बन्ध का हाल जानने की ओर गया। तदनुसार उसने टामस से लेडी कलिस्टा को बुला भेजा। जब टामस ने महारानी के पास जाकर रिचर्ड का आदेश सुनाया तब उसको तथा उसकी सखियों को आश्चर्य हुआ। टामस लेडी कलिस्टा को रिचर्ड के पास लिवा ले गया। रिचर्ड के पूछने पर उसने कैनेथ के चकमा देकर बुलाने का सारा क़िस्सा शुरू से आख़ीर तक सच-सच कह सुनाया। उसने एडिथ को निर्दोष बताया और सारा दोष महारानी पर मढ़ दिया। रिचर्ड का पहले का क्रोध अब शान्त हो गया था और अब वह उस अपराध के लिए जिसका प्रायश्चित्त अब नहीं हो सकता था, महरानी की सख़्त लानत-मलामत करने को तैयार न था।

लेडी कलिस्टा ने महारानी के पास आकर सारा हाल कहा। महारानी को मालूम हो गया कि अब रिचर्ड मेरे पास आयेगा, अतएव ख़ूब सज-धज के साथ उसने अपना शृङ्गार किया और रिचर्ड के आने की प्रतीक्षा करने लगी। रिचर्ड ने सोचा था कि महारानी मुझे देखकर भयभीत हो जायगी और क्षमा माँगेगी। परन्तु जब वह महारानी के पास गया तब उसे वहाँ का मामला बिलकुल उलटा ही मालूम हुआ। रिचर्ड की भर्त्सना सुनने की कौन कहे महारानी बेरेंगेरिया ने अपने को सर्वथा निर्दोष बतलाया। उसने कहा—मैंने बौने से सिर्फ़ यही कहा था कि उस नाइट को चबूतरे से कुछ दूर हटा लाओ—यहाँ तक उसका कहना ठीक था कि उसने उसे ख़ेमे में लाने को नहीं कहा था। इस प्रकार अपनी निर्दोषिता सिद्ध करते हुए उसने रिचर्ड पर निर्दयता का दोषारोपण इस बात पर किया कि उसने उसकी प्रार्थना पर भी उस नाइट को प्राण-दान नहीं दिया, जिससे उसे बहुत दुःख हुआ है और भविष्य के लिए वह निराश हो गई है। इस प्रकार कहती हुई अन्त में महारानी फूट-फूटकर रोने लगी।

रिचर्ड महारानी को यह कहकर आश्वासन देने लगा कि केनेथ अभी तक जीता है, उसको प्राणदण्ड की आज्ञा नहीं दी गई। हकीम के कहने से मैंने उसके अपराध को क्षमा कर दिया है। महारानी ने जब यह सुना तब उसे और भी अधिक दुःख हुआ। उसने कहा—एक विधर्मी तुर्क के कहने को तो आपने मान लिया और उस सैनिक को छोड़ दिया; परन्तु मेरी प्रार्थना पर आपने तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

यह रङ्ग देखकर रिचर्ड ने गम्भीर होकर कहा—प्रिये! हकीम

5/3/58

ने मेरे प्राणों की रक्षा की है। यदि यह बात तुम्हारी दृष्टि में कुछ महत्त्व रखती है तो तुम्हें हकीम को इससे भी अधिक दे डालने के सम्बन्ध में उससे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

महारानी सन्तुष्ट हो गई, उसने कहा—प्रियतम! तो आप उस महापुरुष को मेरे पास क्यों नहीं लाये? मैं दिखला देती कि उस व्यक्ति का कितना आदर करती हूँ जिसने मेरे सर्वस्व जीवनधन को रोगोन्मुक्त किया है।

अन्त में उस दाम्पत्य-कलह का अन्त हुआ। महाराज और महारानी ने सारा दोष उसी बौने पर मढ़ा और उसे दरबार-निकाले का दंड दिया। इसके बाद रिचर्ड महारानी से विदा होकर एडिथ के कमरे में गया जो महारानी के पास था। एडिथ ने महाराज का अभिवादन किया और उनकी आज्ञा मिलने पर अपने स्थान पर बैठ गई। उसके शरीर पर किसी भी प्रकार के आभूषण नहीं थे। उसकी वेष-भूषा से उदासी प्रकट होती थी। रिचर्ड को एडिथ की इस उदासीनता का कारण समझने में विलम्ब नहीं लगा। उसके पास बैठकर उसने कहा—

बहन! तुम मुझसे नाराज़ मालूम होती हो। क्या तुम मुझको क्षमा न करोगी?

एडिथ—कौन ऐसा है जो रिचर्ड को क्षमा करने से इनकार कर सके!

रिचर्ड—यह लल्लोपत्तो रहने दो। तुम्हारी इस वेष-भूषा से तो लोग तुम्हें एक नई विधवा समझ सकते हैं। बेशक, तुमने सुना होगा,

तुम्हारे रञ्ज करने का कोई कारण नहीं है। तब तुम क्यों शोक का रूप बनाये हो ?

एडिथ—प्लैंटाजेनेट-घराने की मर्यादा लुप्त हो जाने के लिए, उस कीर्ति के लिए जो मेरे पिता के घर को छोड़कर चली गई।

रिचर्ड को क्रोध आ गया। उन्होंने क्रोध के साथ कहा—मर्यादा चली गई! कीर्ति जो हमारा घर छोड़कर चली गई! बताओ न, मुझसे ऐसी कौन-सी ग़लती हुई है ?

एडिथ—प्लैंटाजेनेट ने या तो अपराधी को दंड दिया होता अथवा उसे क्षमा कर दिया होता। अभागे को मृत्यु का दंड देना कठोर हो सकता है; परन्तु वह न्याय का तो ढंग है। किन्तु किसी को दासता और देश-निकाले के बन्धन में जकड़ देना खुल्लम-खुल्ला अत्याचार है। कहनेवाले कह सकते हैं कि आपने अपने गुस्से के ताव में आकर एक वीर सैनिक को इस कारण निकाल बाहर किया कि कहीं ऐसा न हो कि वीरता में उसका नाम आपसे सामना करने लगे।

रिचर्ड—मैं! मैं! क्या मैं भी यश के ईर्ष्यालुओं में हूँ। मुझे तो पसन्द है, यदि वह यहाँ वीरता में समानता का दावा करने के लिए मौजूद होता। एडिथ! तुम्हें अपने प्रेमी की अनुपस्थिति में इतना रुष्ट न होना चाहिए कि तुम रिचर्ड के साथ अन्याय करो।

एडिथ—मेरे प्रेमी की अनुपस्थिति! किन्तु—हाँ—वह मेरा प्रेमी भले प्रकार कहा जायगा, क्योंकि इस उपाधि के लिए उसे खासी भरपाई करनी पड़ी है।

मैं तो उसके लिए वह ज्योति थी जो उसके मार्ग को आलोकित कर

उसको शूरता के पथ पर ले जा रही थी। इस पर यह कहना कि मैं अपनी पद मर्यादा को भूल गई अथवा उसने अपनी पद मर्यादा का अतिक्रमण किया, सरासर झूठ है। कोई बादशाह ही ऐसा क्यों न कहे, तो भी मैं यह सुनने के लिए तैयार नहीं हूँ।

रिचर्ड—मैं तो यही कहता हूँ कि तुमने इस आदमी पर वही कृपा की है जो कोई भी नाइट किसी भी राजकुमारी से प्राप्त करने का अधिकार, चाहे उस नाइट का कहीं भी जन्म हुआ हो—रखता है; परन्तु मुझे प्रेम-लीला का कुछ हाल मालूम है। (प्रेम की भावनायें, पहले हृदय में धीरे धीरे ही चुपचाप उठती हैं। उसके बाद प्रेमी और प्रेमिका के दूर रहते हुए भी वे परस्पर स्नेह करने लगते हैं; परन्तु जब अवसर आते हैं तब रब्त-ज़ब्त बढ़ती है और इसी प्रकार). परन्तु तुम्हारे सामने यह सब कहना फ़ज़ूल है, क्योंकि तुम तो अपने को संसार भर में सबसे बढ़कर चतुर और बुद्धिमती मानती हो!

एडिथ—महाराज! मैं आपकी सलाह सदा प्रेम से सुनती हूँ; पर उसी समय तक जब तक कि आपके शब्दों द्वारा मेरा अपमान और अनादर नहीं होता।

रिचर्ड—राजा सलाह नहीं देता, वह आज्ञा देता है।

एडिथ—सलादीन जैसे राजा अवश्य हुक्म देते हैं; क्योंकि उनको गुलामों पर शासन करना पड़ता है।

रिचर्ड—एडिथ, जब तुम एक स्काट का इतना आदर करती हो तब तुम्हें सलादीन के प्रति अपने इस घृणा के भाव को दूर करना

होगा। क्योंकि सम्भव है कि एक झूठे स्काट की अपेक्षा तुम किसी तुर्क को ही स्वीकार करो।

एडिथ—कभी नहीं, यहाँ तक कि रिचर्ड के मुसलमान-धर्म की दीक्षा ले लेने पर भी नहीं।

रिचर्ड—अच्छा, जो तुम चाहती हो वही होगा। तुम मुझे भी जैसा चाहो समझो। मैं यह नहीं भूलने का कि हम दोनों भाई-बहन हैं।

यह कहकर रिचर्ड ने एडिथ से प्रेम के साथ जाने की आज्ञा ली; परन्तु एडिथ की मुलाक़ात से वह संतुष्ट नहीं जान पड़ता था।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

केनेथ को छावनी से निकाल दिये जाने के चौथे दिन रिचर्ड अपने ख़ेमे में बैठा था। वह सायंकाल की शीतल मन्द पछुवा का आनन्द ले रहा था। वह धीरे-धीरे अपना स्वास्थ्यलाभ कर रहा था, जो उसकी आक्रमण-सम्बन्धी योजना के लिए अत्यन्त आवश्यक था। इसी समय पहरेदार ने आकर ख़बर दी कि सलादीन का दूत आया है। रिचर्ड ने कहा—आदर के साथ उसे यहाँ तुरन्त मेरे पास ले आओ।

अँगरेज़ नाइट ने सलादीन के दूत को रिचर्ड के सामने उपस्थित किया। वह हट्टा-कट्टा एक हबशी ग़ुलाम था। मुँह का रंग यद्यपि काला था, तथापि देखने में वह हबशी नहीं मालूम होता था। उसके काले-काले केशों के ऊपर एक सफ़ेद पगड़ी बँधी थी। वह सफ़ेद चोग़ा पहने

था, एक लम्बी सीधी तलवार उसकी कमर से लटक रही थी। दाहिने हाथ में एक भाला लिये था और दूसरे हाथ में रेशमी सुनहरी रस्सी से एक शिकारी कुत्ता थामे था।

दूत ने समुचित अभिवादन के बाद रिचर्ड को सलादीन का पत्र दिया, जो अरबी-भाषा में लिखा हुआ था। उस पत्र का आशय इस प्रकार था :—

'शाहंशाह सलादीन की चिट्ठी इँग्लैंडकेसरी रिचर्ड के नाम, आपके पिछले पत्र से मालूम हुआ कि आप सुलह के स्थान में युद्ध करना चाहते हैं। परन्तु यह निश्चय करके आपने बड़ी भूल की है। हम अपनी महती सेना के बल आपको आपकी भूल का अनुभव करा देने के लिए तैयार हैं। आपने जो दो बौने भेंट में भेजे हैं उनके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। इन सबके बदले मैं आपको एक हबशी ग़ुलाम भेजता हूँ। इसका नाम जाहौक़ है। इसकी सेवा से आप सन्तुष्ट होंगे।'

इस पत्र का आशय जान लेने के बाद रिचर्ड ने उस दूत के हृष्ट-पुष्ट शरीर को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसने पूछा कि क्या तुम मिथ्या-विश्वासी हो। परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया। केवल सङ्केत-द्वारा सूचित किया कि मैं ईसाई हूँ। तब रिचर्ड ने कहा—निस्सन्देह यह एक हबशी ईसाई है और इसे इन मिथ्या-विश्वासियों ने वाक्शक्ति से वञ्चित कर दिया है। इस पर उसने नकारात्मक सङ्केत किया।

रिचर्ड ने कहा—अच्छा तुम जन्म के गूँगे हो। क्या तुम मेरी वर्दी और अस्त्र-शस्त्रों को साफ़ कर सकोगे? गूँगे ने सिर हिला दिया। और आगे बढ़कर उसने कमरे की एक खूँटी पर रक्खे रिचर्ड की जिरह-बख़्तर

और अस्त्र-शस्त्र ऐसे ढङ्ग से उठाये, जिससे तत्काल मालूम हो गया कि वह ऐसे कामों में ख़ूब प्रवीण है।

रिचर्ड ने उसे अपने पास रहने का आदेश दिया। उसने अपनी एक ढाल की ओर इशारा किया और कहा कि इसको साफ़ करो। बस, तुम्हारा काम आज से शुरू हो गया। आज्ञा पाते ही वह तत्काल अपने कार्य में लग गया।

रिचर्ड के ख़ेमे के बाहर लगभग बीस धनुर्धर चुपचाप पहरा दे रहे थे। उनमें कुछ गोली खेल रहे थे, कुछ लड़ाई के सम्बन्ध में वार्तालाप कर रहे थे और कुछ ज़मीन में लेटे हुए थे। इन्हीं में एक दूसरा मुसलमान आ घुसा। यह एक वृद्ध हँसोड़-सा था। इस तरह के बहुरूपिये प्रायः छावनी में घुस आया करते थे। उस वृद्ध को देखते ही सैनिकों ने उसे कहा—नाच दिखाओ, नहीं तो धनुष की रस्सी से खाल उधेड़ देंगे। वह चाहता ही-सा था। उछल-उछलकर नाचने लगा। नाचते-नाचते कभी ख़ेमे के फाटक के पास पहुँच जाता, कभी बहुत दूर तक चला जाता, कभी दाहिनी ओर नाचता, कभी बाईं ओर, कभी धीरे-धीरे और कभी ज़ोर-ज़ोर। अन्त में नाचते-नाचते जब बिलकुल थक गया तब रिचर्ड से कोई छत्तीस-गज़ के अन्तर पर ख़ेमे के द्वार के सामने वह चित्त गिर पड़ा।

एक धनुर्धर ने कहा—इसे पानी पिला दो। नाचने के बाद ये प्रायः पानी पीते हैं। एक ने उसे पानी की जगह शराब पिला दी। उसे पीकर वह मुसलमान बड़ा सन्तुष्ट हुआ। उसने कहा कि ईश्वर बड़ा दयालु है। उसको यह कहते सुनकर सिपाही लोग खिलखिला-

कर हँस पड़े। उनकी हँसी सुनकर रिचर्ड जाग उठा। उसने डाँटकर कहा—"हूँ, क्यों शोर मचाते हो कम्बख्तो, क्या शामत आई है?" सिपाही फटकार पड़ते ही चुप हो गये। उन्होंने उस मुसलमान को भी द्वार के सामने से उठा ले जाने की चेष्टा की। परन्तु चाहे थकावट से हो, चाहे शराब के नशे के कारण हो, उसने अपनी जगह नहीं छोड़ी।

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

उपर्युक्त घटना के एक पौन घंटा या उससे कुछ अधिक देर बाद तक शाही ख़ेमे के सामने बिलकुल शान्ति छाई रही। ख़ेमे में महाराज रिचर्ड मौज से चुपचाप पड़ रहे थे। उनके पीछे वह हबशी ग़ुलाम भी बैठा हुआ अपना काम कर रहा था। ख़ेमे के द्वार के बाहर सौ क़दम की दूरी पर एक धनुर्धर बैठा या लेटा पहरा दे रहा था। द्वार और पहरेदारों के बीच अपनी जगह पर उक्त मुसलमान बेहोश पड़ा था। हबशी ने ढाल को इतना साफ़ कर दिया था कि वह शीशे की तरह चमकने लग गई। उसने उसी की चमक में देखा कि उक्त मुसलमान ख़ेमे के बाहर धीरे-धीरे ज़मीन से खिसककर ख़ेमे की ओर आने का प्रयत्न कर रहा है। यह देखकर उसे आश्चर्य और भय हुआ। वह सजग हो गया और अवसर पर हस्तक्षेप करने के लिए वह गुप्त रीति से तैयार हो गया। इधर वह मुसलमान साँप की तरह खिसकता-खिसकता ख़ेमे के इतना समीप पहुँच गया कि रिचर्ड उससे केवल दस गज़ दूर रह गया। यहाँ से वह शेर की तरह झपटकर रिचर्ड

पर जा पहुँचा और उस पर वार करने को उसने अपनी तलवार खींच ली।

हबशी इसके लिए पहले से ही तैयार था। उसके वार करने के पहले ही उसने उसके उठे हुए हाथ जहाँ के तहाँ थाम लिये। इस पर उसने हबशी पर वार किया। जिसमें उसका हाथ कुछ खरोंच-सा गया। इस प्रकार उसके वार से अपने को बचा हबशी ने उसे उठाकर ज़मीन पर दे मारा, जिससे उसका सिर चकनाचूर हो गया। और ईश्वर तेरी जय हो, कह कर उसने प्राण छोड़ दिये।

इस घटना को देखकर रिचर्ड उठ बैठा था। इस समय तक गोल-माल सुनकर पहरेदार बाहर से भीतर आ गये थे। उन्हें देखकर रिचर्ड ने कहा तुम बड़े सावधान पहरेदार हो! क्या खूब रक्षा कर रहे हो! बस चुपचाप खड़े रहो। क्या कभी मरा हुआ तुर्क नहीं देखा? यह लाश यहाँ से दूर फेंको। इसके बाद उसने हबशी की ओर देखा। उसने कहा—अरे! यह क्या? तू तो घायल हो गया, और एक विषैले अस्त्र से? इसके बाद उसने एक पहरेदार से कहा—तू इस घाव का ज़हर चूसकर थूक दे। तुझे कोई डर नहीं है।

सिपाही लोग एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। एक ने हिम्मत करके कहा—महाराज! आप हम लोगों से घाव के रक्त को चूसने के लिए कह रहे हैं, मानो यह किसी फल का रस हो।

रिचर्ड—ठीक है, परन्तु इतना तुम लोगों को समझ लेना चाहिए कि रिचर्ड उस काम को दूसरों से करने के लिए कभी नहीं कहता जो वह स्वयं नहीं पसंद करता है। यह कहकर वह स्वयं रक्त पीने के लिए

उद्यत हो गया। सिपाहियों ने मना किया। हबशी ने भी बाधा की; परन्तु रिचर्ड ने उसके घाव में अपना मुँह लगा ही दिया। यह देखकर हबशी हटकर अलग जा खड़ा हुआ और घाव को कपड़े के टुकड़े से लपेटकर सङ्केत-द्वारा सूचित किया कि मैं यह तुच्छ कार्य बादशाह को नहीं करने दूँगा।

इतने में कुछ अफ़सरों-समेत नेवाइल ने खेमे में प्रवेश किया। उसने भी रिचर्ड को मना किया।

रिचर्ड ने कहा—क्यों हल्ला करते हो, कोई डर नहीं है। हबशी को अपने खेमे में ले जाओ। देखो, यह भागने न पाये। इसको आराम से रखना। बड़े काम का आदमी जान पड़ता है। और तुम मांसभक्षी, मद्यप कुत्तो! अपने पहरे पर जाओ। अपनी आँखें खुली और मुँह बंद रक्खो। शराब कम पीओ और खूब निगाह रक्खो, नहीं तो कहे देता हूँ, पेट भर खाना न पाओगे।

पहरेदार लज्जित हो गये, वे अपने पहरे पर फिर जा डटे। इसके बाद रिचर्ड ने हबशी की ओर मुँह करके कहा—सलादीन ने लिखा है कि तुम गुप्त से गुप्त बात का रहस्य खोल देते हो, अगर तुम झंडे के उस चोर का पता लगा दो, जिसने मेरा झंडा उड़ा दिया है तो मैं तुम्हारे भर तोलकर तुम्हें सोना दूँगा।

इस पर उस हबशी ने सिर हिलाकर सूचित किया कि मैं इस काम का भार अपने ऊपर लेता हूँ।

रिचर्ड ने कहा—परन्तु तुम उस चोर का हाल बताओगे कैसे? क्या तुम लिखना जानते हो? हबशी ने सिर हिलाकर हाँ का सङ्केत किया।

रिचर्ड—नेवाइल, यह तो एक रत्न है, इसे लिखने का सामान दो। हबशी ने क़लम-दावात के मिलने पर कागज़ पर कुछ लिखकर रिचर्ड को दिया। उसमें लिखा था—अजेय और विजयी इँग्लैंड-नरेश रिचर्ड को उसके दीनतम ग़ुलाम का लिखा, यह कि यदि मैं उस स्थान पर खड़ा कर दिया जाऊँ, जहाँ से ईसाई-सेना के सब सरदार एक-एक करके निकलें, तो झंडा उड़ा देनेवाले को मैं तत्काल पहचान लूँगा, चाहे वह सात पर्दों के भीतर छिपकर क्यों न आये।

इसके बाद उसने एक और कागज़ लिखकर रिचर्ड को दिया। उसका आशय यह था कि मैं सलादीन के पास से श्रीमती एडिथ के लिए कोई सन्देश लाया हूँ। उस सन्देश के पहुँचाने के लिए श्रीमान् की आज्ञा चाहता हूँ।

रिचर्ड ने इस लेख का आशय नेवाइल को बताया।

नेवाइल ने कहा—महाराज, मैं यह तो ठीक-ठीक नहीं कह सकता कि श्रीमान् किसी आदमी को कहाँ तक स्वतन्त्रता दे सकते हैं। पर हाँ, यदि महाराज, इसी प्रकार का कोई संदेशा सलादीन के पास भेजें तो मैं ज़रूर कह सकता हूँ कि उस संदेश-वाहक की सलादीन के हाथ से कम दुर्गति न होगी।

रिचर्ड—मैं तुम्हारे आशय को भली-भाँति समझता हूँ; परन्तु तुम ख़ुद ही सोचो कि जिस मनुष्य ने अभी-अभी मेरे प्राणों की रक्षा की है, उसको मृत्यु-दंड देना तो दूर रहा, एक साधारण दंड देना कहाँ तक न्यायसंगत होगा। इस ग़ुलाम ने जो प्रार्थना की है उसके सम्बन्ध में मैं और ज़्यादा तो न कहूँगा केवल यही कि उसने बड़े साहस से काम लिया

है । अब इस पर मेरी कृपा तभी होगी जब उस चोर का पता लगा देगा, जिसका हमने वादा किया है । खैर; नेवाइल देखो, इसे अच्छी तरह रखना, कोई कष्ट इसे न होने पाये । दूसरे इंगादी के साधु को ढूँढ़कर मेरे पास शीघ्र लाओ । मैं उससे एकान्त में मिलना चाहता हूँ ।

नेवाइल ने हबशी को साथ लेकर अपने ख़ेमे का मार्ग थामा । जो कुछ उसने देखा और सुना, विशेषकर रिचर्ड का जो असाधारण व्यवहार देखा, उससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ ।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

ल्योपोर्ड का अभागा नाइट कैनेथ उस अरबी हकीम के सुपुर्द कर दिया गया था । रिचर्ड ने उसे छावनी से निकाल दिया था और हकीम का उसको एक प्रकार का ग़ुलाम बना दिया था । अतएव वह हकीम के साथ उसके ख़ेमे में गया जहाँ हकीम के साथ के लोग तथा उसका माल-असबाब था । वहाँ पहुँचने पर वह बिना कुछ कहे-सुने चिल्लाकर एक पलङ्ग पर गिर पड़ा और दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा, ज़ोर-ज़ोर से आहें भरने लगा । हकीम अपने नौकरों को तड़के कूच करने का आदेश दे रहा था । उसने कैनेथ की चिल्लाहट सुनी । वह उसके पास आकर दवा-दारू का प्रबन्ध करने लगा । उसने कहा—मेरे दोस्त, धैर्य रक्खो और खुश हो । देखो न कवि क्या कहता है ! इन्सान को अच्छे मालिक की ग़ुलामी मंजूर कर लेनी चाहिए, बनिस्बत इसके कि वह अपने इन्द्रियों के वशीभूत रहे ।

आधी रात के बाद तक कैनेथ जागता रहा था। इतने में ही नौकर उठे और चुपचाप ऊँटों पर सामान लादने लगे और चलने की तैयारी करने लगे। तीन बजे के लगभग कैनेथ जगाया गया। वह चुपचाप उठ खड़ा हुआ और जहाँ ऊँट-घोड़े आदि तैयार खड़े थे वह भी जा पहुँचा। घोड़े और ऊँट लद चुके थे। एक ऊँट पर लकड़ी के एक खुले हुए सन्दूक़ में कुत्ते की बीच-बीच में कराहने की आवाज़ सुनाई दे जाती थी। कैनेथ को इसके पहचानने में देरी न लगी; क्योंकि यह उसी का कुत्ता था।

खैर, शेष रात के बीतने पर सवेरा होते ही सूर्य्य भगवान् पूर्व-दिशा में उदय हुए। हकीम ने सबसे पहले अज़ाँ दी। मुसलमान बालू से वज़ू करने लगे। इसके बाद मक्का की ओर मुँह कर, वे सब नमाज़ पढ़ने लगे।

कैनेथ ने ईसाई होने के कारण मुसलमानों की इस विधि को मूर्ति-पूजा समझकर घृणा की दृष्टि से देखा, तो भी उनके भगवत्प्रेम को देखकर उसके हृदय में भी धर्म का भाव जाग्रत हुआ। ईश्वर का स्मरण होते ही उसके हृदय में धैर्य का भाव उदय हो गया। उसने सोचा कि चाहे जो हो, अब तो मुझे इसी हालत में रहना ही है, अतः व्यर्थ में शोक करने से क्या लाभ।

नमाज़ के समाप्त होते ही यात्री चल पड़े, हकीम साहब ने चिल्लाकर घोषणा की कि चलो, जल्दी चलो, घोड़ों और ऊँटों की चाल तेज़ करो। बात की बात में घोड़े हवा में उड़ने लगे। रेगिस्तान की गर्द ने सबको चारों ओर से घेर लिया।

कैनेथ ने भी अपने घोड़े को तेज़ किया। परन्तु मुसलमानों के घोड़ों की चाल को उसका घोड़ा न पा सका। हकीम इस समय सब के आगे निकल गया था।

कैनेथ इस दौड़ में थक गया था फिर भी किसी तरह वह हकीम का साथ दिये रहा। अन्त में वे उसी चश्मे के पास जा पहुँचे, जहाँ कैनेथ से अमीर शेरकोह से पहले भेंट हुई थी। वह इस स्थान को तत्काल पहचान गया।

हकीम ने कैनेथ से कहा कि अब घोड़े से उतर पड़ो और इस फ़ौवारे में मुँह-हाथ धो और स्नानकर निश्चिन्त हो आराम करो।

तीसवाँ परिच्छेद

जब कैनेथ की लम्बी और गहरी नींद भंग हुई तब उसने इधर-उधर निगाह दौड़ाई। उसने अपने को भिन्न परिस्थिति में पाया। उसने अपने मन में सोचा कि मैं अभी स्वप्न ही देख रहा हूँ। नम्र घास की जगह वह एक सुन्दर पलङ्ग पर लेटा हुआ था, उसकी कज़्ज़ाकी क़मीज़ के स्थान में उसे रेशमी वस्त्र पहना दिया गया था, जहाँ वह पहले खजूर के वृक्षों के पत्तों की झोपड़ी के नीचे लेटा था, वहाँ इस समय वह रेशमी खेमे के नीचे आराम कर रहा था; जिसकी बड़ी सुन्दर सजावट थी। बड़ा परिवर्तन था। कैनेथ को बड़ी देर तक पता ही न चला कि जो कुछ वह देख रहा है, सच है अथवा केवल धोखा है। पास ही स्टूल पर एक बोतल में बढ़िया शरबत रक्खा था। एक टब भी सुगन्धित जल से भरा हुआ था। कैनेथ ने इस टब में नहाकर अपने को स्वच्छ करने

का विचार किया। नहाने से उसे बड़ा आराम मिला। अब उसे अपने मोटे कपड़े पहनने की इच्छा हुई। परन्तु उनका वहाँ कहीं पता न था। उनके स्थान पर पहनने के लिए तुर्की कपड़े रक्खे हुए मिले। उनके साथ ढाल-तलवार भी रक्खी थी। यह सब एक अमीर के उपयुक्त पोशाक थी।

कैनेथ ने अपने मन में निश्चय किया कि इस अमीरी-ढङ्ग की तैयारी का उपयोग मुझे यथासम्भव कम ही करना होगा। परन्तु अभी वह बिलकुल स्वस्थ नहीं हुआ था, उसे नींद आ रही थी, अतएव वह पलङ्ग पर फिर लेट गया और उसे तत्काल नींद आ गई।

थोड़ी ही देर में वह हकीम के आवाज़ देने पर जाग पड़ा। हकीम ने बाहर से पूछा कि तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है, कैसी नींद आई? क्या मैं भीतर आ सकता हूँ? क्योंकि दरवाज़े पर अभी परदा पड़ा हुआ है।

कैनेथ—मालिक को भीतर आने के लिए ग़ुलाम की आज्ञा लेने की ज़रूरत नहीं है।

हकीम—लेकिन यदि मैं मालिक की हैसियत से न आता होऊँ तो...?

कैनेथ—हकीम को अपने मरीज़ के पास आने-जाने में रोक-टोक नहीं रहती है।

हकीम—मैं हकीम के रूप में नहीं आता हूँ, इसलिए भीतर घुसने के पहले मुझे आज्ञा माँगनी आवश्यक है।

कैनेथ—मित्र के लिए मित्र के घर का दरवाज़ा सदा खुला रहता है। तुमने तो सदा मेरे साथ मित्र जैसा ही बर्ताव किया है।

हकीम—मान लो कि मैं मित्र की हैसियत से भी नहीं आ रहा हूँ।

कैनेथ—तो फिर जिस हैसियत से चाहो उस हैसियत से आओ।

यह तुम्हें ज्ञात ही है कि मुझमें तुम्हें भीतर न आने देने की न क्षमता है और न इच्छा ही है।

हकीम—तब तो मैं तुम्हारे पुराने शत्रु; किन्तु एक सज्जन शत्रु की हैसियत में आता हूँ।

यह कहकर हकीम ने कमरे में प्रवेश किया और कैनेथ के पलङ्ग के पास जा खड़ा हुआ। कैनेथ के आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा। क्योंकि बोली तो उसकी हकीम जैसी थी; परन्तु रूप-रेखा और पोशाक उसी शेरकोह जैसी थी।

हकीम साहब या पूर्वपरिचित शेरकोह ने कहा—कैनेथ, तुम इतने भोले-भाले क्यों हो? क्या तुम समझते हो कि लोग वैसे ही होते हैं, जैसे वे दिखाई देते हैं? हम दोनों ने एक साथ नमक खाया है। यही कारण है कि मृत्यु और विपत्ति से तुम्हें बचाना मैंने अपना कर्तव्य समझा है। अच्छा, यह तो बताओ कि सूरज के निकल आने पर भी तुम अब तक क्यों बिस्तर पर पड़े हुए हो? या जो कपड़े तुम्हारे पास रक्खे हुए हैं वे तुम्हारे पहनने योग्य नहीं हैं?

कैनेथ—पहनने के योग्य न हों, ऐसी बात नहीं है। परन्तु उन कपड़ों के पहनने योग्य मैं स्वयं नहीं हूँ। इसलिए तुम मुझको ग़ुलाम के कपड़े-लत्ते ला दो, मैं उन्हीं को पहनना चाहता हूँ। स्वतन्त्र पूर्वी सिपाहियों की पोशाक पहनना और मुसलमानों की पगड़ी बाँधना मेरे लिए उचित नहीं जँचता।

शेरकोह—क्या मैंने तुमको यह नहीं बताया है कि सलादीन केवल उन्हीं लोगों को अपने धर्मावलम्बियों में मिलाना पसन्द करता है जो

लोग आन्तरिक प्रेरणा के वशीभूत हो धर्म-परिवर्तन करना चाहते हैं। लालच देकर अथवा डरा-धमकाकर मुसलमान बनाना उनकी नीति के प्रतिकूल है। अतः मैं अनुरोध करता हूँ कि इस पोशाक को जो तुम्हारे लिए तैयार की गई है तुम सहर्ष पहन लो; क्योंकि सम्भव है कि अपनी निजी पोशाक पहनने से बाद को तुम्हें शाही छावनी में किसी तरह का अपमान सहना पड़े?

कैनेथ—तो क्या मैं तुम्हारा ग़ुलाम नहीं हूँ और क्या मुझे पूरी स्वतन्त्रता है।

शेरकोह—हाँ, पूरी स्वतन्त्रता है। जिस मनुष्य ने वीरता के साथ मेरा सामना किया है, वह कहीं मेरा ग़ुलाम हो सकता है?

कैनेथ—मैं आपकी इस कृपा का किस प्रकार बदला चुकाऊँ? मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ और इस कृपा के योग्य नहीं हूँ।

शेरकोह—नहीं, ऐसा मत कहो। क्या यह बात सच नहीं है कि तुम्हारी बातचीत से आकर्षित होकर, महाराज रिचर्ड के दरबार की सुन्दरियों का वर्णन सुनकर ही मैंने अपना भेस बदला और ईसाई खेमे में दाखिल हुआ? सचमुच ऐसा अनुपम दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

कैनेथ—मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सका।

शेरकोह—नहीं समझ सके? अरे! यदि तुमने रिचर्ड के दरबार में उन दृश्यों को नहीं देखा जिनको मैंने स्वयं देखा है, तो तुमसे बढ़कर अभागा कौन होगा? महाराज रिचर्ड की महारानी की सुन्दरता का क्या कहना! नीली-नीली आँखें, गोरा-गोरा शरीर, कैसी सुकुमारता, कैसी

मधुरता, कैसी छवि ! उनकी कान्ति के आगे तो सोना भी कोई चीज़ नहीं। सचमुच वे तो संसार की महारानी बनाने के योग्य हैं।

कैनेथ ने रुखाई से कहा—इँग्लैंड के बादशाह रिचर्ड की पत्नी के सम्बन्ध में तुम कहते हो ? लोग उनको श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं, कोई दूसरी दृष्टि से नहीं देखता।

शेरकोह—जब स्त्री-जाति के सम्बन्ध में तुम्हारे विचार इतने पवित्र और इतने उच्च हैं, तो अच्छा है कि महारानी के विषय में मैं अब चुप ही रहूँ। परन्तु उस दूसरी ललना, उस महिला को, कैसे मैं भूल सकता हूँ, जो सुन्दरता में महारानी से भी बढ़-चढ़कर है। झूठ न मानो, यदि कोई प्रेमी इस युवती के पास आकर प्रेम-भिक्षा माँगे, तो वह अवश्य पसीज जायगी। यही नहीं, वह तो प्रेमी को उसके प्रेम के लिए धन्यवाद देगी; इसलिए नहीं कि उसने उसको स्त्री की अपेक्षा देवाङ्गना समझा है।

कैनेथ ने ग़ुस्से में लाल होकर कहा—रिचर्ड के सम्बन्धी के प्रति आदर का भाव रक्खो।

शेरकोह ने भी लाल होकर उत्तर दिया—आदर ! यह नहीं हो सकता। काबा की क़सम, यदि मुझे उसका आदर ही करना है, तो सलादीन की मलका के रूप में मैं उसका आदर करूँगा और तरह से नहीं।

कैनेथ अपने पलँग पर से उछलकर खड़ा हो गया, उसने कहा—जिस स्थान पर लेडी एडिथ ने अपना पैर रख दिया है उस स्थान तक की सलाम करने के योग्य सलादीन नहीं है।

अपना हाथ तलवार की मूठ पर रख, मारे ग़ुस्से के लाल हो,

आँखें चढ़ा शेरकोह ने कहा—क्यों, क्या कहा ? परन्तु कैनेथ पर उसके क्रोध का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जिस आदमी ने रिचर्ड जैसे सिंह के क्रोध का सामना किया, भला वह कहीं तुर्क जैसे साधारण चीन के क्रोध से भयभीत हो सकता है ?

कैनेथ ने कहा—जो बात मैंने इस समय कही है वह सदा इसी भाँति कह सकता हूँ।

कैनेथ की बात सुनकर शेरकोह कुछ शान्त हो गया, कम से कम उसने तलवार की मूठ पर से अपना हाथ खींच लिया। परन्तु उसका ग़ुस्सा कम न हुआ।

इकतीसवाँ परिच्छेद

कुछ समय तक दोनों सैनिक चुपचाप खड़े रहे। लेकिन शीघ्र ही दोनों ने सोच लिया कि क्रोध करने से कोई लाभ नहीं है। अतः हमें शान्त हो जाना चाहिए। अन्त में वे दोनों शान्त हो गये, उनका सारा ग़ुस्सा जाता रहा।

सबसे पहले शेरकोह बोला। उसने कहा—तुम जानते हो कि मैं हकीम हूँ। यदि कोई अपने घाव को अच्छा करना चाहता है तो उसे हकीम-द्वारा छुए जाने पर रोगी को झिझकना नहीं चाहिए। अब मैं मरीज़ के घाव पर अँगुली रखता हूँ। सच कहो कैनेथ, तुम एडिथ से प्रेम करते हो न ?

कैनेथ—मैंने उससे ज़रूर किया, वैसा प्रेम किया, जैसा मनुष्य ईश्वर से प्रेम करता है।

शेरकोह—और अब तुम उससे प्रेम नहीं करते ?

कैनेथ—शोक ! अब मैं इस योग्य नहीं रहा कि उससे प्रेम कर सकूँ। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि इस विषय की बातचीत समाप्त करो। तुम्हारे शब्द तीर की तरह मेरे हृदय में बिंध रहे हैं।

शेरकोह—मुझे एक क्षण के लिए क्षमा करो। मैं पूछता हूँ कि जब तुमने—एक साधारण सैनिक ने—प्रेम करना प्रारम्भ किया था, तब क्या तुमने समझा था कि तुम्हें सफलता मिलेगी ! तुम्हें कुछ भी आशा थी ?

कैनेथ—प्रेम निराशामय नहीं होता। परन्तु मेरा प्रेम तो निराशामय ही साबित हुआ।

शेरकोह—और अब क्या सारी आशाओं पर पानी फिर गया !

कैनेथ—हाँ, हमेशा के लिए।

शेरकोह—मेरा तो विश्वास है कि यदि तुम पहली जैसी प्रसन्नता फिर पा जाओ, तो शायद तुम्हारी आशा-लता फिर से लहलहाने लगे। यदि कल तुम्हारा यश पहले की तरह फिर चारों ओर फैल जाय, तो जिसे तुम प्रेम करते हो वह सलादीन की मलिका तथा किसी राजकुमारी से किसी बात में कम न होगी।

कैनेथ—ऐसा ही था, यदि मैंने...।

इस पर शेरकोह ने हँसकर कहा—क्या तुम सलादीन से द्वन्द्व-युद्ध करोगे ?

कैनेथ—यदि मैं करूँ भी, तो कोई बड़ी बात नहीं; क्योंकि सलादीन जैसे अनेक मुसलमानों की पगड़ियाँ मैंने भाले से ज़मीन पर गिरा दी हैं।

शेरकोह—परन्तु सलादीन तुम्हें मारकर फिर युद्ध छेड़ना न चाहेंगे। खैर, इस बात से यहाँ मतलब नहीं है। यदि किसी प्रकार झंडा चुरानेवाले का पता लग जाय तो तुम्हारा काम ठीक हो जाय और यदि तुम मेरा कहना मानो तो तुम स्वयं उसका पता लगा लोगे जिससे तुम्हारा काम बन जायगा।

कैनेथ—मुझे स्वीकार है। तुम जो कहोगे वही करूँगा।

शेरकोह—तो फिर सुनो। तुम्हारा कुत्ता अब अच्छा हो गया है। इसी कुत्ते के द्वारा तुम चोर का पता अपने आप लगा सकते हो।

कैनेथ—यह तो ठीक है; परन्तु छावनी में लोग मुझे पहचान लेंगे, जो ठीक न होगा।

शेरकोह—तुम दोनों का भेष बदल दिया जायगा, जिससे तुम्हें कोई सैनिक और न कोई तुम्हारा सम्बन्धी ही पहचान सकेगा। शर्त यह है कि सारा काम मेरी राय से ही हो। इसके बदले में तुम्हें सलादीन का एक पत्र महाराज रिचर्ड की भतीजी के पास पहुँचाना होगा।

कैनेथ ने शेरकोह की शर्त बड़े ध्यान से सुनी। कुछ समय तक वह सोचता रहा। उसने कहा—अच्छा, सलादीन का पत्र-वाहक होना मैं स्वीकार करता हूँ। परन्तु ध्यान रहे कि सलादीन के इस प्रेम का समर्थन करना मेरे किये नहीं हो सकेगा।

शेरकोह—मेरे खेमे में आओ। मैं तुम्हारा ऐसा भेष बदल दूँ कि फिर तुम्हें कोई न पहचान सके।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

पाठको ! आप सब जान गये होंगे कि जो हब्शी .गुलाम रिचर्ड के पास भेजा गया था वह कौन था और उसका क्या प्रयोजन था !

महाराज रिचर्ड अपने झंडे के चबूतरे के पास घोड़े पर सवार डटे हुए थे। उनके वस्त्र लाल रङ्ग के थे। सुनहरे कपड़ों से घोड़े की पीठ सुसज्जित थी। रिचर्ड के समीप ही वह हब्शी .गुलाम भी अपने कुत्ते के साथ मौजूद था। चबूतरे के ऊपर लकड़ी का एक मचान भी बनाया गया था। इसके ऊपर महारानी तथा दरबार की अन्य स्त्रियाँ बैठी थीं। एक-एक कर दूसरे आ-आकर महाराज रिचर्ड और उनके झंडे का अभिवादन करते थे। जब कभी कोई ऐसा राजा आता जिसके सम्बन्ध में रिचर्ड की धारणा अच्छी नहीं थी और पुरानी शत्रुता के कारण जिस पर झंडा उड़ाने का उन्हें शक था, तब वे .गुलाम और .गुलाम के कुत्ते की ओर देखने लगते।

सबसे पहले फ़्रान्स का बादशाह फ़िलिप आगस्टस आया और रिचर्ड से मिला। दोनों ऐसे भाव से मिले मानो दोनो समान हैं।

इसके बाद टेम्प्लर्स के नाइट पादरी आये। टेम्प्लर्स का ग्रैंड मास्टर धर्मोपदेशक के अतिरिक्त सेनापति भी था और इस हैसियत से रिचर्ड के सामने उसको भी झुकना चाहिए था; परन्तु उसने ऐसा नहीं किया और पादरी की तरह रिचर्ड को आशीर्वाद देना ही उसने उचित समझा।

इसके बाद आस्ट्रिया के बादशाह ल्यूपोल्ड का नम्बर आया।

रिचर्ड ने ल्यूपोल्ड को सामने आता देखकर एक नज़र हब्शी और उसके कुत्ते की ओर डाली। परन्तु न तो हब्शी और न उसका कुत्ता ही टस से मस हुआ। इस पर रिचर्ड ने कहा—मुझे डर है कि तुमको अपने प्रयत्न में सफलता नहीं मिलेगी, यद्यपि तुम अपनी सहायता के लिए एक कुत्ता भी साथ लाये हो ?

हब्शी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

अन्त में कानरेड आया। रिचर्ड उससे मिलने के लिए आगे बढ़े रिचर्ड से इनका इधर बहुत हेल-मेल हो गया था। रिचर्ड ने बढ़ते हुए कहा—बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आप अपने साथियों को साथ लेकर यहाँ आये हैं।

कानरेड महाराज रिचर्ड के शब्दों का उत्तर देनेवाला ही था कि हब्शी का कुत्ता एकाएक भूँक उठा। यह देखकर हब्शी ने रस्सी ढील दी, कुत्ता तीर-सा कानरेड पर जा टूटा। उसने कानरेड का गला पकड़कर उसे घोड़े पर से झटक ज़मीन पर गिरा दिया।

यह देखकर रिचर्ड ने कहा—जिस अपराधी की मुझे ज़रूरत है उसी को तुम्हारे कुत्ते ने पकड़ा है। अब अपने कुत्ते को खींच लो। कहीं ऐसा न हो कि वह कानरेड को टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

उस हब्शी ने तत्काल कुत्ते को खींच लिया और उसको मज़बूती से थाम लिया, तथापि वह अपना क्रोध बराबर प्रकट करता रहा। इतने में अनेक आदमी जमा हो गये, कानरेड के भी आदमी आ गये। जब उन्होंने अपने सरदार की बुरी गति देखी तब उन्होंने चिल्लाकर कहा—इस ग़ुलाम को काट डालो। इसके कुत्ते को टुकड़े-टुकड़े कर डालो।

परन्तु गरजकर रिचर्ड ने कहा—जो कोई कुत्ते पर चोट करेगा, वह अपने को मरा समझे। कुत्ते ने अपनी बुद्धि के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। कानरेड! मांटी सेरेट के मार्किस, सीधे खड़े हो जाओ! विश्वासघाती और झूठा कहीं का! मैं तुझ पर राजद्रोह का अपराध लगाता हूँ!

मार्किस के होश-हवास गुम हो गये, उसने कहा—बात क्या है? मुझ पर कैसा अभियोग? आप मुझे गालियाँ क्यों दे रहे हैं?

फ़िलिप इस समय तक वहाँ पहुँच गया था, उसने कहा—यह अवश्य कोई भयङ्कर भूल होगी।

रिचर्ड—मार्किस, खड़े हो जाओ, यदि तुम्हें हिम्मत है और इस बेज़बान कुत्ते के लगाये गये अभियोग से इनकार है जो इस कुत्ते की अन्तर्दृष्टि ने पहचान लिया है कि तुम्हीं ने उसे घायल किया था और इँग्लैंड का अपमान किया था?

मार्किस ने जल्दी में कहा—रिचर्ड! मैंने तुम्हारा झण्डा छुआ तक नहीं।

रिचर्ड—तुम्हारी बात से ही प्रकट हो जाता है। बिना अपराधी हुए तुमने कैसे जान लिया कि झंडे की बात है?

कानरेड—तुमने तो इस एक बात के लिए छावनी भर में ऊधम मचा रक्खा है। क्या कुत्ते से अधिक अपने एक साथी का विश्वास नहीं किया जा सकता?

इस समय तक बड़ा हो-हल्ला मचने लगा।

यह देखकर फ़िलिप ने कहा—राजाओ और रईसो! ईश्वर के लिए

हम लोगों को अपने-अपने ख़ेमों को लौट चलना चाहिए। एक घण्टा बाद हम लोग सभा-भवन में एकत्र होकर इस मामले पर विचार करेंगे।

रिचर्ड—यदि फ़िलिप की यह इच्छा है तो ऐसा ही हो।

तैंतीसवाँ परिच्छेद

रिचर्ड अपने ख़ेमे में लौट आया। उसने उस हबशी ग़ुलाम को अपने पास बुलवाया। ग़ुलाम चुपचाप रिचर्ड के पास आकर खड़ा हो गया और आज्ञा सुनने की प्रतीक्षा करने लगा।

रिचर्ड ने कहा—तुमने तो अपराधी को ख़ूब पकड़ा। परन्तु अभी उसे ठीक करना है। तुमको सलादीन के पास शीघ्र एक पत्र लेकर जाना होगा। उसमें उससे प्रार्थना की जायगी कि वह द्वन्द्व-युद्ध के लिए कोई निरपेक्ष भूमि ठीक कर दे और ख़ुद भी आकर इस युद्ध का आनन्द ले। मेरी समझ में तुम सलादीन की छावनी में उस नाइट को खोज लोगे जो इस विश्वासघाती मार्किस से सत्य और अपनी कीर्ति के लिए युद्ध करेगा।

हबशी ने सिर हिला दिया।

रिचर्ड ने कहा—अच्छा, तुम मेरा काम करने के लिए तैयार हो। ख़ैर, तुमने एडिथ से भेंट की है!

यह सुनते ही उस ग़ुलाम के मुँह का भाव ऐसा हो गया मानो वह कुछ कहना चाहता है; परन्तु वह गुँगवाकर ही रह गया।

रिचर्ड—अरे! एडिथ का नाम सुननेमात्र से ही गूँगा मनुष्य बोलने-

सा लग सकता है ? तो फिर न जाने उसके नेत्रों का इस पर क्या प्रभाव पड़े। अच्छा मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम एडिथ से मिलो और सलादीन का सन्देश उसे दो।

किन्तु तुम्हें सावधान किये देता हूं कि एडिथ के सामने तुम ज़बान मत खोलना. मैं यह नहीं सुनूँगा कि जादू के बल से मैं बोलने लग गया।

ग़ुलाम ने मुँह पर उँगली रखकर सूचित किया कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

इसके बाद रिचर्ड ने नेवाइल को बुलवाया। नेवाइल के आ जाने पर उसने कहा कि इस ग़ुलाम को रानी से कहकर एडिथ से भेंट करा लाओ। वह उसे एकान्त में सलादीन का संदेश देगा। इसके लिए आध घंटे का समय है।

ग़ुलाम को बाहर खड़ाकर नेवाइल महारानी के खेमे में गया और महाराज की आज्ञा कह सुनाई। इसको सुनकर स्त्रियों ने बड़ा कहकहा मचाया।

एक स्त्री ने कहा—हवशी ग़ुलाम, जो सलादीन का सन्देशा लाया है वह कैसा है ? खूब ! हम इस दूत से मिलने के लिए उत्सुक हैं। तुर्क और मूर ग़ुलाम तो हमने बहुतेरे देखे हैं, परन्तु हवशी ग़ुलाम कभी नहीं देखा।

नेवाइल—ऐसी बात नहीं है।

लेडी कैलिस्टा ने कहा—श्रीमती जी ! आप इस सन्देश-वाहक को सीधे एडिथ के पास ले जाने की आज्ञा दें। इनका यही मतलब है।

महारानी—तो इसे वहाँ जाने दो !

नेवाइल ग़ुलाम को एडिथ के ख़ेमे में ले गया। वहाँ वह एडिथ के पास पहुँचाया गया। नेवाइल ख़ेमे के बाहर खड़ा रहा।

चौंतीसवाँ परिच्छेद

ग़ुलाम ने ख़ेमे में प्रवेश करते ही घुटने के बल हो श्रीमती एडिथ का समुचित अभिवादन किया। एडिथ उस समय चाँदी का एक पात्र अपने हाथ में लिये थी, जिसमें कोई सुगन्धित वस्तु जल रही थी। उसके प्रकाश में ग़ुलाम के चेहरे को पहचानकर एडिथ ने कहा—अच्छा क्या तुम हो ? क्या सचमुच तुम स्काटलैंड के वीर नाइट कैनेथ हो ? क्या तुमने यह दासों का भेष बनाया और इस प्रकार सैकड़ों जोखिमों से अपने को घिरवा दिया है।

एडिथ का कथन सुनकर कैनेथ का हृदय तिलमिला उठा। बात मुँह तक आ गई; पर रिचर्ड की आज्ञा और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान आ गया। बेचारा चुपचाप रह गया।

एडिथ—मैंने ठीक पहचाना है। झंडेवाले चबूतरे पर जब देखा था तभी तुमको और तुम्हारे कुत्ते को पहचान गई थी। वह स्त्री सच्ची नहीं है और तुम जैसे नाइट के सर्वथा अनुपयुक्त, जो अपने सच्चे प्रेमियों को चाहे किसी भी भेष में हो, पहचान न सके। तब तुम निर्भय होकर मुझसे बोलो। क्या कारण है कि तुम चुप हो। लज्जा अथवा भय के मारे चुप्पी साधे हो ?

नाइट ने कुछ उत्तर न दिया। केवल आह करके ही रह गया। इस पर एडिथ ने कहा—अच्छा, जैसी तुम्हारी मरज़ी है वैसा ही हो। तुम नहीं बोलते तो मैं भी नहीं बोलती।

नाइट ने तब सलादीन का पत्र चुपचाप एडिथ के कर-कमलों में रख दिया।

एडिथ—अपने सन्देश के सम्बन्ध में भी तुम कुछ कहना नहीं चाहते?

छद्मवेशी नाइट ने अपने दोनों हाथों से अपने माथे को दाब लिया। इससे उसका अभिप्राय यह था कि मुझे आपकी आज्ञा उल्लंघन करने में बहुत दुःख मालूम हो रहा है; परन्तु क्या करूँ, मजबूर हूँ।

एडिथ ने ग़ुलाम की विवशता पर कुछ ध्यान न दिया। क्रोधित होकर बोल उठी—तो जाओ यहाँ से। मैंने बहुत देर तक बातें कीं; परन्तु तुमने उत्तर तक नहीं दिया। जाओ यहाँ से। मैंने अपने को तुम्हारी निगाहों में तो गिरा ही दिया, अपनी निगाह में भी मैं ख़ुद गिर गई।

छद्मवेशी नाइट संदेश की चिट्ठी की ओर प्रायः अनिच्छा से देखने लगा। इस पर एडिथ ने कहा—हाँ, हाँ, मैं भूल गई। आज्ञाकारी सेवक संदेश का उत्तर चाहता ही है। यह सन्देश सलादीन का है। उसने उसे पढ़कर कहा—अपने स्वामी से जाकर कह देना कि मैंने उनके संदेश की क्या दुर्गति की है।

यह कहकर सलादीन की चिट्ठी को उसने पृथ्वी पर फेंक दिया और पैर रखकर उसे पाँवों से कुचल डाला।

यह काम कर एडिथ वहाँ से जाने को उद्यत हुई। इस पर उस छद्मवेशी नाइट ने उसके वस्त्र को पकड़ लिया और उसको रोकना चाहा। परन्तु एडिथ ने एक झटका देकर कपड़े को छुड़ा लिया और वहाँ से दूसरे कमरे में चली गई।

इसी समय नेवाइल ने ग़ुलाम को बाहर से आवाज़ दी। ग़ुलाम भी कमरे से बाहर हुआ और पैर घसीटता-घसीटता नेवाइल के पीछे-पीछे चलने लगा। कुछ समय के बाद दोनों रिचर्ड के खेमे में दाखिल हुए।

पैंतीसवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन फ़्रांस के बादशाह फ़िलिप ने रिचर्ड को कुछ बातचीत करने के लिए बुलाया। रिचर्ड के मिलने पर उसने कहा कि मैं अब अपने देश फ़्रांस को लौट जाना चाहता हूँ; क्योंकि युद्ध में मुझे सैनिकों की कमी और विरोध के कारण सफलता की आशा नहीं है। रिचर्ड ने बहुतेरा कहा-सुना; पर उसका असर नहीं हुआ। जब इनकी सभा भङ्ग हुई तब उसे आस्ट्रिया के ड्यूक तथा अन्य राजाओं का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—हम लोग युद्ध को अब बन्द कर देना चाहते हैं, क्योंकि इँग्लैंड के रिचर्ड बड़ी मनमानी करते हैं।

यह परिस्थिति देखकर रिचर्ड को बड़ा क्रोध हुआ, परन्तु इसी समय सलादीन का एक नया राजदूत रिचर्ड के पास आया, जिससे उसका ध्यान दूसरी ओर बँट गया। इस दूत ने कहा कि सलादीन ने द्वन्द्व-युद्ध

का स्थान 'मरुभूमि का रत्न' नामक स्थान निर्दिष्ट किया है और दर्शकों की रक्षा की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली है।

'मरुभूमि का रत्न' नामक स्थान द्वन्द्व-युद्ध के लिए वास्तव में उपयुक्त स्थान था। अतएव यह तय हुआ कि मार्किस अपने सौ साथियों और आस्ट्रिया के ड्यूक तथा टेम्पलर्स के ग्रैंड मास्टर के सहित युद्ध के नियत दिन, नियत स्थान पर उपस्थित हो और रिचर्ड भी अपने सौ साथियों और लड़नेवाले वीर के पक्ष में उसी तिथि को उसी स्थान पर पहुँच जाय। सलादीन ने इतना और लिखा था कि मैं ५०० सवारों को लेकर घटनास्थल पर उपस्थित होऊँगा। इनके अतिरिक्त कुछ प्रतिष्ठित तटस्थ सज्जनों को भी युद्ध के देखने का मौक़ा दिया जायगा। युद्ध का सारा इन्तज़ाम सलादीन ने अपने ऊपर ले लिया था।

अन्त में युद्ध का दिन आ ही गया। सुबह होते ही मार्किस अपने साथियों को लेकर, तथा रिचर्ड भी अपने सिपाहियों को साथ ले घटनास्थल की ओर चल पड़े। रिचर्ड के साथ महारानी और एडिथ भी गई थीं। 'मरुभूमि के रत्न' का दृश्य बहुत ही भव्य हो गया था। आगन्तुकों के ठहरने के लिए वहाँ गाड़े गये बहुसंख्यक खेमों से वह स्थान जगमगा उठा था। यहीं सलादीन से रिचर्ड की भेंट हुई। सलादीन सादी पोशाक पहने एक सफ़ेद अरबी घोड़े पर सवार था। उसके साथ उसके शरीर-रक्षक सवार भी थे।

रिचर्ड और सलादीन दोनों भाई-भाई की तरह प्रेम से मिले।

सलादीन ने कहा—महाराज रिचर्ड का मैं स्वागत करता हूँ। आपका यहाँ आना उतना ही हितकर हुआ जितना की मरुभूमि में पानी का।

रिचर्ड ने उसके साथ के लोगों की ओर देखकर पूछा—क्या ये सब लोग अरब के रईस हैं?

सलादीन—हाँ, यद्यपि ये बहुसंख्यक हैं, तथापि सन्धि के नियम के अनुसार ये अस्त्र-शस्त्र से सज्जित नहीं है।

रिचर्ड—मुझे सन्देह नहीं है। पर मैंने सन्धि का नियम भङ्ग किया है; क्योंकि मैं अपने साथ ऐसे वीर लाया हूँ जो अस्त्र-शस्त्र से सज्जित हैं। बात यह है कि चमकीली आँखें और सुन्दर रूप ऐसे अस्त्र हैं जिन्हें कोई भी छोड़कर नहीं आ सकता। अच्छा आओ, इनसे भी भेंट कर लो।

सलादीन ने पालकियों की ओर देखकर सिर झुका दिया। उसने कहा—तोबा, तोबा! पर-स्त्री का खुला मुख देखना पाप है।

रिचर्ड—तब भाई साहब, आप उनसे एकान्त में भेंट कीजिएगा।

सलादीन—तो ज़रूरत ही क्या है? आइए, खेमे में प्रवेश कीजिए! यह आप ही के ठहरने के लिए खड़ा किया गया है।

यह कह, सलादीन रिचर्ड को एक शाही खेमे में लिवा ले गया।

छत्तीसवाँ परिच्छेद

सलादीन के सामने रिचर्ड खड़ा था। सलादीन की निगाह रिचर्ड की भारी तलवार पर जा पड़ी। सलादीन ने कहा—अगर मैंने इस तलवार को युद्ध में चलते न देखा होता तो मुझे विश्वास ही न होता कि इसे मनुष्य चलाता है। क्या किसी वस्तु पर इसका एक वार दिखाने का अनुरोध कर सकता हूँ?

रिचर्ड ने उत्तर दिया—बड़ी प्रसन्नता से। यह कहकर वह इधर-उधर

देखने लगा कि किस वस्तु पर वार करूँ। एक नौकर के हाथ में लौह-दण्ड था। उस पर निगाह पड़ गई। उसे लेकर रिचर्ड ने लकड़ी के एक कुन्दे पर रख दिया और दोनों हाथों से उस पर तलवार चलाई। उस लौहदण्ड के दो टुकड़े हो गये।

सलादीन ने कहा—ख़ूब रहा! इसके बाद उसने रिचर्ड का हाथ देखा और उसके भारी हाथ से अपने पतले हाथ को मिलानकर वह हँसने लगा।

इसके बाद सलादीन ने अपने पराक्रम का परिचय रिचर्ड को दिया। उसने अपनी तलवार के दो-एक ऐसे हाथ दिखाये कि रिचर्ड चकित रह गया। उसने कहा—आपका मुक़ाबिला करना तो जान का गँवाना है। आप वैसे ही घाव करने में हैं, जैसे आपके हकीम साहब घाव के अच्छा करने में हैं। मुझे विश्वास है, हकीम साहब से भेंट होगी।

यह सुनते ही सलादीन ने पगड़ी उतारकर तातारी टोपी पहन ली। उसने कहा—किसी शायर ने ठीक कहा है कि रोगी कमज़ोरी की हालत में भी हकीम को पग की आहट से पहचान लेता है; परन्तु अच्छा हो जाने पर उसके मुँह से भी उसे नहीं पहचानता।

रिचर्ड ने आश्चर्य से कहा—यह तो जादू का काम हुआ! टोपी और पोशाक के अभाव से ही मैं उन्हें नहीं पहचान पाया। मेरे बन्धुवर सलादीन ही हकीम साहब हैं।

रिचर्ड ने फिर कहा—आपके ही बीच में पड़ने से ल्योपोर्ड के नाइट की प्राण-रक्षा हुई थी। और आपकी ही चाल से वह भेष बदल कर मेरी छावनी में गया।

सलादीन—परन्तु मैंने अपनी सफलता से समझा था कि आप उसे न पहचान पायेंगे।

रिचर्ड—एकाएक भेद खुल गया। उसके घाव में ओठ लगाते समय जान गया कि उसका चमड़ा रँगा हुआ है। तब सब भेद खुल गया। मुझे आशा है कि कल के युद्ध के लिए वह तैयार है।

सलादीन—हाँ, सब तरह से लैस है। बड़ी उमंग में है। उसके लिए अस्त्र-शस्त्र और घोड़ा मँगवा दिया है।

इसके बाद उन दोनों में नाना प्रकार की बातें होती रहीं। बातों-बातों में रिचर्ड को ज्ञात हो गया कि सलादीन को कैनेथ से लेडी एडिथ के प्रेम का पता लग गया है। सलादीन ने स्वयं इस बात को स्पष्ट रूप से रिचर्ड को बतला दिया और कहा कि कैनेथ का एडिथ से प्रेम मुझसे पहले हुआ है, अतः उसका प्रेम ज्यों का त्यों बना रहेगा। मेरा ही पीछे हटना उचित है।

यह कहकर सलादीन रिचर्ड के खेमे के बाहर हुआ। उसके चले जाने के बाद टामस आया। रिचर्ड ने पूछा—क्या कैनेथ भले प्रकार अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित है?

टामस—हाँ महाराज! खूब अच्छी तरह से।

रिचर्ड—अच्छा, तुम महारानी के पास अभी जाओ और उन्हें सूचना दो कि मैं उनसे मिलने के लिए आता हूँ।

टामस—'जो आज्ञा' कहकर चला गया।

एक घंटे के बाद रिचर्ड महारानी बेरंनगेरिया के खेमे में गया। वहाँ उसने एडिथ से अलग कान में कहा—क्या हम दोनों अब भी एक दूसरे के शत्रु हैं?

एडिथ—नहीं महाराज! महाराज रिचर्ड से कोई शत्रुता क्यों रक्खेगा, जब वह अपनी उदारता और महत्ता का परिचय देता है।

यह कहकर एडिथ ने अपना हाथ रिचर्ड के सामने बढ़ा दिया। रिचर्ड ने उसे चूमकर कहा—प्यारी एडिथ! तुम्हें धोखा हुआ है। मैंने इस नाइट को ठीक सज़ा दी, क्योंकि उसने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। उसके लिए कल मौक़ा है। उसे अपने पराक्रम का परिचय देना पड़ेगा; परन्तु भूलना नहीं, मार्किस भाला चलाने में एक ही है। कहीं ऐसा न हो कि नाइट उससे हार जाय।

एडिथ—असम्भव है। मैंने स्वयं अपनी आँखों मार्किस को डर के मारे पीला और कम्पित होते देखा है। वह अपराधी है। और यह युद्ध धर्म-युद्ध है। ईश्वर से न्याय की प्रार्थना है।

रिचर्ड—अच्छा मैं अब तुमसे एक बात सच सच और साफ़-साफ़ पूछना चाहता हूँ। यदि कैनेथ को इस युद्ध में सफलता मिल जाय तो तुम्हारा इससे कैसा सम्बन्ध होगा?

एडिथ—मेरा? मेरा उससे केवल यही सम्बन्ध हो सकता है कि वह एक वीर सम्मानित नाइट है।

रिचर्ड—परन्तु इस नाइट ने तो तुम्हारे लिए बड़े कष्ट झेले हैं?

एडिथ—उसका सम्मान और प्रशंसा कर तथा उसके कष्टों के लिए आँसू बहा मैं उससे उऋण हो चुकी हूँ। यदि उसे किसी पुरस्कार की ज़रूरत है तो उसे अपनी मर्यादा के भीतर रहना चाहिए। मैं न तो मिथ्या विश्वासी से विवाह करूँगी और न किसी अज्ञातकुलशील से।

सैंतीसवाँ परिच्छेद

द्वन्द्व-युद्ध का अखाड़ा १२० गज़ लम्बा और ४० गज़ चौड़ा था। उसके बीचोंबीच में पश्चिम ओर सलादीन के बैठने का स्थान था। सलादीन युद्ध का निरीक्षक और निर्णायक बनाया गया। इसी स्थान पर दोनों वीर युद्ध प्रारम्भ करनेवाले थे। मध्यभाग के सामने स्त्रियों के बैठने का स्थान था। अखाड़े के एक किनारे रिचर्ड के सवारों और दूसरे किनारे मार्किस के साथियों के लिए जगह की गई थी।

सुबह होते ही मुसलमानों ने नमाज़ पढ़ी। स्त्रियों ने पदार्पण किया। इधर टेम्पलर्स का ग्रैंड मास्टर मार्किस के पास गया। उसे निराश देखकर उसने उसे धैर्य बँधाया। कह-सुनकर उसे लड़ने के लिए खड़ा किया। सूर्योदय के ठीक एक घण्टे बाद रण-दुन्दुभी बज उठी। युद्ध का समय आ गया। दर्शक और प्रबन्धक सभी यथास्थान आकर बैठ गये थे। दोनों योद्धाओं ने, एड़ी से लेकर चोटी तक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, अखाड़े में बड़े गर्व के साथ पदार्पण किया। दोनों बड़े वीर, पराक्रमी और सुन्दर दिखलाई पड़ते थे। किन्तु स्काट की भौंहें चढ़ी हुई और मार्किस की भौंहें झुकी हुई थीं। दोनों योद्धाओं ने एक-एक कर महारानी के स्थान के पास बनी हुई वेदी पर जाकर अपने पक्ष के न्यायपूर्ण होने की शपथ ली, अपनी-अपनी सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने यथाविधि एक निगाह स्त्रियों की ओर डाली और अपने मस्तक को भूमि की ओर झुकाया। फिर अपने-अपने घोड़े पर चढ़कर अपने-अपने स्थान पर जा खड़े हुए। जब मार्किस उस स्थान की क्रिया समाप्तकर

अपने स्थान की ओर जाने लगा तब ग्रैंड मास्टर ने मार्किस के पास आकर कहा--अरे मूर्ख और कायर, वीरता के साथ युद्ध करना, नहीं तो यदि तुम बच भी गये तो भी मैं न बच सकूँगा।

इसके बाद कैनेथ के पक्षवालों ने रण-दुन्दुभी फिर बजाई। उनमें एक ने घोषित किया—महाराज रिचर्ड का सैनिक, स्काटलैण्ड का वीर नाइट, सर कैनेथ, मान्सरेट के मार्किस पर झंडा चुराने, महाराज रिचर्ड का अपमान करने तथा उनसे विद्रोह करने का अभियोग लगाता है।

इसके बाद युद्ध का प्रारम्भ हो गया।

अड़तीसवाँ परिच्छेद

कुछ समय तक दोनों सैनिक एक दूसरे के सामने चुपचाप प्रतिमा की तरह खड़े रहे। इसके बाद सलादीन के सङ्केत करते ही दोनों अपने घोड़े दौड़ाकर एक दूसरे पर जा टूटे। मार्किस ने आक्रमण में पूरा कौशल दिखलाया। उसने कैनेथ की ढाल के बीच में अपना भाला मारा। जिसका फल उसमें पूरा घुस गया। वार के झोंके से कैनेथ का घोड़ा पिछले पैरों के बल हो गया; परन्तु कैनेथ ने उसे सँभाल लिया। उसे भाले से भी चोट नहीं आई। इधर मार्किस पर कैनेथ का वार पूरा पड़ा। उसका भाला उसकी ढाल पार करता हुआ उसकी छाती में जा धँसा जिससे आहत होकर वह घोड़े से नीचे जा गिरा। द्वन्द्व-युद्ध के प्रबन्धक सैनिक तथा सलादीन ने जाकर मार्किस को घेर लिया। कैनेथ ने कहा—तुम्हें अब अपराध स्वीकार है न ?

पागल की तरह आकाश की ओर देखते हुए मार्किस

ने कहा—ईश्वर ने निर्णय कर दिया। मैं अपने अपराध को स्वीकार करता हूँ।

किन्तु मुझसे भी बढ़कर अपराधी और विश्वासघाती छावनी में मौजूद है। दयाकर अपराध स्वीकार करने के लिए पादरी बुला दो।

रिचर्ड ने कहा—भाई सलादीन, उस तावीज़ का उपयोग अब कीजिए।

सलादीन—विश्वासघाती इस योग्य नहीं है।

रिचर्ड—तो भी मेरी प्रार्थना है आपसे जो कुछ हो सके, कीजिए। कम से कम पादरी से मिलकर अपराध स्वीकार कर लेने का समय तो दीजिए।

सलादीन—श्रीमान की आज्ञा शिरोधार्य है। गुलामो! इस घायल आदमी को मेरे खेमे में ले चलो।

ग्रैंड मास्टर—नहीं, ऐसा मत करो। मैं और आस्ट्रिया के ड्यूक उसको अपने खेमे में ले जाकर अपनी देख-भाल में रखना चाहते हैं।

रिचर्ड—अर्थात् तुम लोग यह चाहते हो कि उसकी दवा-दारू न की जाय।

ग्रैंड मास्टर—नहीं, नहीं, मैं यह कब कहता हूँ, यदि सलादीन उसकी दवा-दारू करना चाहें तो हमारे खेमे में खुशी से कर सकते हैं।

रिचर्ड ने सलादीन से कहा—अच्छा सलादीन ऐसा ही करो। इसी समय रिचर्ड ने अपने सैनिकों को विजय-दुन्दुभी बजाने की आज्ञा दी। थोड़ी ही देर में दुन्दुभी के स्वर से सारा आकाश गूँज उठा। इसके बाद रिचर्ड ने कैनेथ से कहा—हे ल्योपोर्ड के वीर नाइट, मैं तुमसे

कुछ और कहना चाहता हूँ। परन्तु अभी नहीं कहूँगा। महिलाओं के सामने ही कहूँगा।

कैनेथ ने मस्तक नवा दिया।

सलादीन से भी रिचर्ड ने कहा—क्यों भाई सलादीन, तुम भी महिलाओं से मिलोगे? मेरी समझ में यदि आपको धन्यवाद देने का अवसर महारानी को न मिलेगा, तो वे प्रसन्न न होंगी।

सलादीन ने उत्तर दिया—महाराज क्षमा करिए। मैं महारानी से नहीं मिल सकता। कारण कि मुझे घायल मार्किस की दवा-दारू करनी है।

रिचर्ड—सुनो, सुनो! दुन्दुभी बज रही है। इससे सूचित होता है कि महारानी तथा अन्य महिलायें अपने स्थान से जानेवाली हैं। आओ, वीर कैनेथ को उनके पास ले चलें।

यह कह महाराज रिचर्ड कैनेथ को महिलाओं के पास लिवा ले गया। वहाँ पहुँचकर कैनेथ ने समुचित रूप से महारानी का अभिवादन किया। महारानी से रिचर्ड ने कहा—इस नाइट के अस्त्र-शस्त्रों को उतारो। तत्पश्चात् एडिथ से कहा—नाइट का मुकुट तुम उतारो। दोनों महिलाओं ने महाराज की आज्ञा का पालन किया।

तदनन्तर रिचर्ड ने कहा—अब बताओ कि यह नाइट हबशी गुलाम की तरह दिखाई पड़ता है अथवा इसका मुँह किसी साधारण आवारा नाइट जैसा है? परन्तु यह आवारा स्काटलैंड के राजवंश का हंटिंग्डम का अर्ल है। इसका असली नाम डेविड है।

यह सुन सब लोग चकित हो गये!

महारानी बेरेनगेरिया ने पूछा—महाराज, आपको किस प्रकार पता लगा कि केनेथ स्काटलैंड के राजकुमार हैं।

रिचर्ड—हाल में स्काटलैंड के राजा ने हमारे तीन सरदार क़ैद कर लिये हैं। वे तीर्थ-दर्शन के लिए स्काटलैंड गये थे। कारण यह बताया गया कि स्काटलैंड के राजकुमार हमारी यहाँ की छावनी में हमारे क़ब्ज़े में हैं। अतएव जब राजकुमार स्काटलैंड पहुँचा दिये जायँगे तब ये सरदार छोड़ दिये जायँगे। इँग्लैंड से जब यह समाचार मुझे मिला तब मेरा ध्यान ल्योपोर्ड के नाइट की ओर गया। इसके बाद जब टामस अस्कलम से लौटा तब उसने सारा हाल कहा। उसमें अर्ल के साथी ने इनका पता बताया था।

इसके बाद रिचर्ड ने एडिथ से कहा—एडिथ! अपना हाथ इधर लाओ। फिर अर्ल से कहा—राजकुमार, तुम भी अपना हाथ इधर लाओ।

एडिथ—रुकिए महाराज! आपने तो मेरा विवाह सलादीन से करने का निश्चय किया था। क्योंकि इस विवाह-द्वारा आप सलादीन और सलादीन के मुसलमानों को ईसाई बनाना चाहते हैं।

रिचर्ड—हाँ, मेरा ऐसा विचार अवश्य था; परन्तु अब वह विचार बदल गया है।

दोपहर को सलादीन ने अपनी देश की रीति-नीति के अनुसार योरप के राजाओं के स्वागत का प्रबन्ध अपने खेमे में किया था। वह वहाँ बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। इस समय वह एक जन्मपत्री पर विचार करने लगा। उसने अपने मन में कहा—कौन नहीं जानता कि मैं रिचर्ड का भयंकर शत्रु हूँ। इस शत्रुता का अन्त करने के लिए ही रिचर्ड ने

एडिथ का विवाह मेरे साथ करने का निश्चय किया था। परन्तु अब प्रकट होता है कि इस वीर अर्ल और एडिथ के विवाह में इँग्लैंड और स्काटलैंड में मेल होगा, जो मेरी अपेक्षा कहीं अधिक इँग्लैंड का शत्रु है। जन्मपत्री से प्रकट होता है कि एडिथ का पति ईसाई हो। इसी से इंगादी के पागल पादरी ने ईसाई हो जाना चाहा था। परन्तु मैं मुहम्मद का सच्चा अनुयायी हूँ।

सलादीन इसी प्रकार के ऊहापोह में पड़ा था कि एकाएक बौना आ पहुँचा। उसने कहा—कुछ एकान्त में कहना चाहता हूँ। सलादीन उठकर उसके साथ चला गया।

उनतालीसवाँ परिच्छेद

सलादीन ने योरप के राजाओं का यथाविधि स्वागत किया और उन्हें यथोचित आसनों पर यथास्थान बिठलाया। परन्तु स्काटलैंड के वीर राजकुमार डेविड का स्वागत उसने विशेष रूप से किया। इसके बाद अतिथियों को मीठा शरबत पिलाया गया, जो सबको बहुत पसन्द आया।

इस समय एक बड़ी भयंकर दुर्घटना हो गई। जैसे ही सलादीन के प्याले को लेकर ग्रैंड मास्टर शरबत पीने चला, वैसे ही सलादीन ने अपनी तलवार म्यान से निकालकर उसके सिर को काट डाला। यह देखकर समस्त उपस्थित समुदाय चौकन्ना हो गया।

सभी एक स्वर से चिल्ला उठे कि विश्वासघात है! विश्वासघात है!

इस पर सलादीन ने कहा—कोई डर नहीं है। क्रोध न करिए। सब मामला अभी खुला जाता है। धैर्य रखिए। आप लोग शायद यह नहीं जानते कि मैंने इस क्रूर और दुष्ट ग्रैंड मास्टर का वध क्यों किया है!

अच्छा सुनिए—मैंने इसे इसलिए नहीं मारा है कि इसने रिचर्ड के प्राण लेने का प्रयत्न किया या स्काटलैंड के राजकुमार और मुझको मार डालने के लिए रेगिस्तान में पीछा किया या इसने हमारे खिलाफ़ यहाँ की रेगिस्तानी जातियों को हम पर चढ़ाई करने को उभाड़ा। किन्तु इसलिए कि इसने अभी अपने साथी मार्किस की छाती में छुरा घुसेड़कर मार डाला है; क्योंकि वह उस षड्यन्त्र का भंडाफोड़ करनेवाला था, जिसमें यह भी शामिल था।

रिचर्ड—मैं आपकी बात सत्य मानता हूँ। परन्तु जो कुछ आप कह रहे हैं उसका प्रमाण देना चाहिए।

मलादीन—ठीक है! मेरे पास प्रमाण भी मौजूद है। और वह प्रमाण मेरा यह आपका बौना है। यह घटना-स्थल पर मौजूद था, इसने मुझे अभी आकर सूचना दी है। यह बौना उस समय खेमे में मौजूद था जब मार्किस के पास यह गया था। पर्दे की ओट में खड़े होकर इसने उन दोनों की बातचीत सुनी। बातचीत का फल यह हुआ कि यह मार्किस से नाराज़ हो गया और उस बेचारे के हृदय में छुरा भोंक दिया। बहुत मुमकिन था कि वह बच जाता, मैं अपने तावीज़ की बदौलत उसे अच्छा कर देता। मैंने मार्किस की लाश मँगवाकर अपनी आँखों से देखी है।

रिचर्ड—तब तो इसको दंड देकर आपने न्याय ही किया है।

मलादीन—मैं इसे और ही ढङ्ग से दण्ड देना चाहता था। परन्तु यदि मैं इसे अपना शरबत पी लेने देता तो अतिथि धर्म के विरुद्ध मैं उसका वध कैसे करता। यदि उसने मेरे बाप को मार डाला होता और

उसके बाद मेरा खा-पी लिया होता तो फिर मेरे हाथ से उसकी कुछ भी क्षति न होती। हमारा ऐसा ही धर्म है।

सलादीन ने उसकी लाश हटाने की आज्ञा दी।

अन्त में सभा विसर्जित हुई। सब लोग एक-एक करके खेमे से बाहर निकलने लगे। सलादीन ने रिचर्ड का हाथ पकड़कर कहा—इँग्लैंड के महाराज! अब हम लोग एक दूसरे से बिदा हो रहे हैं और शायद फिर अब कभी न मिलें। मुझे अफ़सोस है कि मैं आपको यरोशलम नहीं सौंप सकता और न उसे आपके अधीन ही कर सकता हूँ। हमारी दृष्टि में भी वह नगर उतना ही, पवित्र है जितना कि आपकी दृष्टि में। परन्तु इसको छोड़कर और चाहे जो शर्त करें, और चाहे जो चीज़ मुझसे माँगें, मैं आपको भेंट करने को सहर्ष तैयार हूँ। यही बात मैं इस समय भी कहूँगा जब आपकी सेना आपके साथ है और यही बात मैं उस समय भी कहूँगा जब आप केवल दो सैनिकों के साथ खड़े मिलेंगे।

दूसरे दिन रिचर्ड अपने खेमे को लौट गये। कुछ समय के बाद एडिथ और कैनेथ का पाणिग्रहण हुआ। सलादीन ने इस शुभ अवसर की भेंट में अन्य वस्तुओं के साथ उक्त अमोघ तावीज़ भी दे दिया। इस अमोघ तावीज़ के प्रभाव से योरप में अनेक मरीज़ अच्छे किये गये; परन्तु इसकी सहायता से सलादीन ने जो-जो विलक्षण कार्य सम्पादित किये, वैसे योरप में एक भी न हो सके। आज भी वह तावीज़ मौजूद है। राजकुमार डेविड ने उसे अपने उत्तराधिकारी सर सिमनली को दिया, जिनके प्राचीन और आदरणीय वंश में वह इस समय भी सुरक्षित है, और उसका बड़ा आदर और सम्मान किया जाता है।

Transtalion
of
"Telesmen" Novel
by
Sir Walter Scott.